दादा भगवान कथित

पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार

निभा लेना भूलें एक दूजे की तो बनेगा विवाहित जीवन सुखमय।
'वन फैमिली' की तरह रहो प्रेम से तो न रहेगा जीवन दुःखमय।

दादा भगवान कथित

पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार

मूल गुजराती पुस्तक 'पति-पत्नीनो दिव्य व्यवहार' (संक्षिप्त) का हिन्दी अनुवाद

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरूबहन अमीन

अनुवाद : महात्मागण

प्रकाशक : **श्री अजीत सी. पटेल**
महाविदेह फाउन्डेशन
5, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद - ३८० ०१४, गुजरात.
फोन - (०७९) २७५४०४०८

©
All Rights reserved - Dr. Niruben Amin
Trimandir, Simandhar City,
Ahmedabad-Kalol Highway, Post - Adalaj,
Dist.-Gandhinagar-382421, Gujarat, India.

प्रथम संस्करण : प्रत ३०००, मार्च २००९

भाव मूल्य : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : २० रुपये

लेज़र कम्पोजिंग : दादा भगवान फाउन्डेशन, अहमदाबाद

मुद्रक : महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चैम्बर्स, नये रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटैक्स, अहमदाबाद-३८० ०१४.
फोन : (०७९) २७५४२९६४, २७५४०२१६

त्रिमंत्र

'दादा भगवान' कौन ?

जून १९५८ की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षु जनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं है, वे तो 'ए.एम.पटेल' है। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रत्यक्ष लिंक

'मैं तो कुछ लोगों को अपने हाथों सिद्धि प्रदान करनेवाला हूँ। बाद में अनुगामी चाहिए या नहीं चाहिए? बाद में लोगों को मार्ग तो चाहिए न?''

- दादाश्री

परम पूज्य दादाश्री गाँव-गाँव, देश-विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे। आपश्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ. नीरूबहन अमीन (नीरूमाँ) को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरूमाँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही थीं। पूज्य दीपकभाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी। नीरूमाँ की उपस्थिति में ही उनके आशीर्वाद से पूज्य दीपकभाई देश-विदेशो में कई जगहों पर जाकर मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान करवा रहे थे, जो नीरूमाँ के देहविलय पश्चात् आज भी जारी है। इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हज़ारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए, ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हैं।

ग्रंथ में मुद्रित वाणी मोक्षार्थी को मार्गदर्शन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, लेकिन मोक्षप्राप्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है। अक्रम मार्ग के द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग आज भी खुला है। जैसे प्रज्वलित दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्वलित कर सकता है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान प्राप्त कर के ही स्वयं का आत्मा जागृत हो सकता है।

निवेदन

आत्मविज्ञानी श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, जिन्हें लोग 'दादा भगवान' के नाम से भी जानते हैं, उनके श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहार ज्ञान संबंधी जो वाणी निकली, उसको रिकॉर्ड करके, संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता हैं।

ज्ञानीपुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान संबंधी विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्‌भुत संकलन इस आप्तवाणी में हुआ है, जो नये पाठकों के लिए वरदानरूप साबित होगी।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो, जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्यकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है, परन्तु यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा।

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

प्रस्तुत पुस्तक में कईं जगहों पर कोष्ठक में दर्शाये गये शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गये वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गये हैं। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गये हैं। दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों रखे गये हैं, क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके। हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिये गये हैं।

अनुवाद संबंधी कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं।

❖ ❖ ❖

प्रस्तावना

निगोद में से एकेन्द्रिय और एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के उत्क्रमण और उसमें से मनुष्य का परिणमन हुआ तब से युगलिक स्त्री और पुरुष साथ में जन्मे, ब्याहे और निवृत हुए... ऐसे उदय में आया मनुष्य का पति-पत्नी का व्यवहार! सत्युग, द्वापर और त्रेतायुग में प्राकृतिक सरलता के कारण पति-पत्नी के बीच जीवन में समस्या शायद ही आती थी। आज, इस कलिकाल में बहुधा हर जगह प्रतिदिन पति-पत्नी के बीच क्लेश, झगड़े, और मतभेद देखने में आते हैं। इसमें से बाहर निकल कर पति-पत्नी का आदर्श जीवन कैसे जी सकें, इसका मार्गदर्शन इस काल के अनुरूप किस शास्त्र में मिलेगा? अब क्या किया जाए? आज के लोगों की वर्तमान समस्याएँ और उनकी भाषा में ही उन समस्याओं के हल, इस काल के प्रकट ज्ञानीपुरुष ही दे सकते हैं। ऐसे प्रकट ज्ञानीपुरुष, परम पूज्य दादाश्री को उनकी ज्ञानावस्था के तीस वर्षों में पति-पत्नी के बीच हुए घर्षण के समाधान के लिए पूछे गए हज़ारों प्रश्नों में से संकलित कर यहाँ प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित किए जा रहे हैं।

पति-पत्नी के बीच की अनेकों जटिल समस्याओं के समाधान रूपी हृदयस्पर्शी और स्थायी समाधान करनेवाली वाणी यहाँ सुज्ञ पाठक को उनके वैवाहिक जीवन में एक दूसरे के प्रति देवी-देवता जैसी दृष्टि निशंक ही उत्पन्न कर देगी, मात्र हृदयपूर्वक पढ़कर समझने से ही।

शास्त्रों में गहन तत्वज्ञान मिलता है, पर वह शब्दों में ही मिलता है। शास्त्र उससे आगे नहीं ले जा सकते। जो शब्द हैं, वे भाषा की दृष्टि से सीधे-सादे है किन्तु 'ज्ञानीपुरुष' का दर्शन निरावरण है, इसलिए उनका प्रत्येक वचन आशयपूर्ण, मार्मिक, मौलिक और सामनेवाले के व्यू पोइन्ट को एक्ज़ेक्ट समझकर निकलने के कारण श्रोता के दर्शन को सुस्पष्ट खोल देता है एव अधिक ऊंचाई पर ले जाता है।

व्यवहारिक जीवन के पंक्चर को जोड़ना तो उसके एक्सपर्ट अनुभवी ही सिखा सकते हैं ! संपूर्ण आत्मज्ञानी दादाश्री, पत्नी के साथ

आदर्श व्यवहार को पूर्ण अनुभव कर अनुभववाणी से समाधान करते हैं, जो प्रभावपूर्ण रीति से काम करता है। इस काल के अक्रम ज्ञानी की विश्व के लिए यह बेजोड़ भेंट है, व्यवहार ज्ञान की बोधकला की!

संपूज्य दादाश्री के पास कईं पति, पत्नी और युगल ने अपने दु:खमय जीवन की समस्याएँ प्रस्तुत की थीं; कभी अकेले में, तो कभी सार्वजनिक सत्संग में। ज़्यादातर बातें अमरीका में हुई थीं, जहाँ फ्रीली, ओपनली (खुले आम, मुक्तता से) सभी निजी जीवन के बारे में बताते हैं। निमित्ताधीन परम पूज्य दादाश्री की अनुभव वाणी निकली, जिसका संकलन पढ़नेवाले प्रत्येक पति-पत्नी का मार्गदर्शन कर सकता है। कभी पति को उलाहना देते, तो कभी पत्नी को झकझोरते, जिस निमित्त को जो कहने की ज़रूरत हो, उसे आरपार देखकर दादाश्री सार निकाल कर वचन बल से रोग निर्मूल करते थे।

सुज्ञ पाठकों से निवेदन है कि वे गलत तरीके से अनर्थ न कर बैठें कि दादा ने तो स्त्रियों का ही दोष देखा है अथवा पतिपने को ही दोषित ठहराया है! पति को पतिपना का दोष दिखाती वाणी और पत्नी को उसके प्राकृतिक दोषों को प्रकट करती वाणी दादाश्री के मुख से प्रवाहित हुई है। उसे सही अर्थ में ग्रहण कर स्वयं के शुद्धिकरण हेतु मनन, चिंतन करने की पाठकों से नम्र विनती है।

- डॉ. नीरुबहन अमीन

संपादकीय

ब्याहते ही मिली, मिसरानी फ्री ऑफ कोस्ट में,
झाड़ूवाली, पोंछेवाली और धोबिन मुफ्त में !

चौबीस घंटे नर्सरी, और पति को सिन्सियर,
अपनाया ससुराल, छोड़ माँ-बाप, स्वजन पीहर!

माँगे कभी न तनखाह-बोनस-कमिशन या बख्शीश!
कभी माँगे अगर साड़ी, तब क्यों पति को आए रीस?

आधा हिस्सा बच्चों में, पर डिलीवरी कौन करे?
उस पर पीछे नाम पति का, फिर क्यों देते हो ताने?

देखो केवल दो भूलें स्त्री की, चरित्र या घर का नुक़सान,
कढ़ी खारी या फोड़े काँच, छोटी भूलों को दो क्षमादान!

पत्नी टेढ़ी चले तब, देखो गुण, गिनो बलिदान,
घर-बहू को संभाल, उसी में पुरुष तेरा बड़प्पन!

पति को समझेगी कब तक, भोला-कमअक़्ल?
देखभाल कर लाई है तू, अपना ही मनपसंद!

पसंद किया, माँगा पति, उम्र में खुद से बड़ा,
उठक-बैठक करता, लाती जो गोदी में छोटा!

रूप, पढ़ाई, ऊँचाई में, माँगा सुपीरियर,
नहीं चलेगा बौड़म, बावरची, चाहिए सुपर!

शादी के बाद, तू ऐसा तू वैसा क्यों करे?
समझ सुपीरियर अंत तक, तो संसार सोहे!

पति सूरमा घर में, खूँटी बँधी गाय को मारे,
अंत में बिफरे गाय तो बाघिन का वेश धरे !

पचास साल तक, बात-बात में टोका दिनरात!
वसूली में फिर बच्चें करें माँ का पक्षपात!

'अपक्ष' होकर रहा मुआ, घरवालों की खाए मार,
सीधा होजा, सीधा होजा, पा ले 'मुक्ति' का मार्ग!

खुद मोटा, पर माँगे सुंदर पत्नी, यह रोग
मोटा पति खोजे फिगर, सुंदरी का जो रखे रौब,
सराहेंगे जो पत्नी को, मन से लेंगे वे भोग!

प्रथम गुरु स्कूल में, फिर बनाया पत्नी को गुरु,
पहले पसंद नहीं थे चश्मे, फिर बनाई 'ऐनक बहू'!

मनपसंद की ढूँढने में, हो गई भारी भूल,
शादी करके पछताए, ठगे गए भरपूर!

क्लेश बहुत हो पत्नी संग, तो कर दो विषय बंद,
बरस बाद परिणाम देख, जीवन में सुखानंद!

ब्रह्मचर्य के नियम रख, शादी-शुदा ये तेरा लक्ष्य,
दवाई पी तभी जब चढ़े, बुखार दोनों पक्ष!

मीठी है इसलिए दवाई, बार-बार पीना नहीं,
पीयो नियम से जब, चढे बुखार दोनों को।

एक पत्नीव्रत जहाँ, दृष्टि बाहर न बिगड़े,
कलियुग में है यही ब्रह्मचर्य, ज्ञानीपुरुष दादा कहें!

टेढ़ी बीवी, मैं सीधा, दोनों में कौन पुण्यवान?
टेढ़ी तेरे पाप से, पुण्य से पाया सीधा कंथ!

किसका गुनाह? कौन है जज? भुगते उसी की भूल,
कुदरत का न्याय समझ लो, भूल होगी निर्मूल!

सँभाले मित्र और गाँव को, घर में लठ्ठबाज़ी,
सँभाला जिसने जीवन भर, वहीं चूक गया पाजी!

बाहर बचाए आबरू, बेआबरू घर में मगर!
देखो उल्टा न्याय, बासमती में डाले कंकड़!

'मेरी बीबी मेरी बीबी' कह, डाले ममता के पेच,
'नहीं मेरी, नहीं मेरी' कह, खोलो अंतर के पेच!

शादी करके कहे पति, तेरे बिन कैसे जीएँ?
मरने पर न हुआ 'सता', न ही कोई सती दिखे!

यह तो आसक्ति पुद्गल की, नहीं है सच्चा प्रेम!
न देखे दोष, न अपेक्षा, न रखे द्वेष वहीं शुद्ध प्रेम!

तू ऐसा, तू वैसी, अभेदता में आया भेद,
हुआ शांति का अंत जो, हुआ ज़रा-सा भेद!

एक आँख में प्रेम, और दूसरी में सख्ती जहाँ,
देखे इस प्रकार पत्नी को, जीते संसारी वहाँ!

वन फ़ैमिली होकर जीओ, करो नहीं मेरी-तेरी,
सुधारने पत्नी को चला, क्या अपनी जात सुधारी?

आर्य नारी के माथे पर बिंदी, एक पति का ध्यान,
रंगना पड़े पूरा मुँह और भाल, जो हो परदेशन!

एक दूजे की भूलें निभा लो, वही प्रेममय जीवन,
घटे-बढ़े नहीं कभी जो, वही सच्चा प्रेम दर्शन!

- डॉ. नीरुबहन अमीन

अनुक्रमणिका

	पेज नं.
१. वन फ़ैमिली (एक कुटुंब)	१
२. घर में क्लेश	२
३. पति-पत्नी में मतभेद	११
४. भोजन के समय किट-किट	२४
५. पति चाहिए, पतिपना नहीं	२६
६. दूसरों की भूल निकालने की आदत	३२
७. गाड़ी का गरम मूड	३५
८. सुधारना या सुधरना?	३६
९. कोमनसेन्स से 'एडजस्ट एवरीव्हेर'	३७
१०. दो डिपार्टमेन्ट अलग	३८
११. शंका जलाए सोने की लंका	४०
१२. पतिपने के गुनाह	४३
१३. दादाई दृष्टि से चलो, पतियों...	४४
१४. 'मेरी-मेरी' की लपेटें उकलेंगी ऐसे	४७
१५. परमात्म प्रेम की पहचान	५८
१६. शादी अर्थात् 'प्रोमिस टु पे'	५२
१७. पत्नी के साथ तक़रार	५४
१८. पत्नी लौटाए तौल के साथ	६२
१९. पत्नी की शिकायतें	६८
२०. परिणाम, तलाक़ के	७७
२१. सप्तपदी का सार	८४
२२. पति-पत्नी के प्राकृतिक पर्याय	८७
२३. विषय बंद वहाँ प्रेम संबंध	९२
२४. रहस्य, ऋणानुबंध के...	१९
२५. आदर्श व्यवहार, जीवन में...	१०३

पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार

वन फ़ैमि ली

जीवन जीने जैसा कब लगता है कि जब सारा दिन *उपाधि* (बाहर से आनेवाले दुःख) नहीं हो, जीवन शांति से व्यतीत हो, तब जीवन जीना अच्छा लगता है। यह तो घर में गड़बड़ होती रहती हो, तब जीवन जीना कैसे अच्छा लगे? यह तो पुसाएगा ही नहीं न! घर में गड़बड़ नहीं होनी चाहिए। शायद कभी पड़ोसी के साथ हो या बाहर के लोगों के साथ हो, मगर घर में भी? घर में फ़ैमिली की तरह लाइफ जीनी चाहिए। फ़ैमिली लाइफ कैसी होती है? घर में प्रेम और प्रेम ही छलकता रहे। अब तो फ़ैमिली लाइफ ही कहाँ है? दाल में नमक ज़्यादा हो तो सारा घर सिर पर उठा लेता है। 'दाल खारी है' कहता है! अंडरडिवेलप्ड लोग। डिवेलप्ड किसे कहते हैं कि जो दाल में नमक ज़्यादा हो, तो उसे एक ओर रखकर बाकी भोजन खा ले। क्या यह नहीं हो सकता ? दाल एक ओर रखकर दूसरा सब नहीं खा सकते? 'दिस इज़ फ़ैमिली लाइफ।' बाहर तकरार करो न! माई फ़ैमिली का अर्थ क्या? कि हमारे बीच तकरार नहीं है किसी भी तरह की। एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए। खुद की फ़ैमिली में एडजस्ट होना आना चाहिए। एडजस्ट एवरीव्हेर।

आपको 'फ़ैमिली ऑर्गनाइज़ेशन' का ज्ञान है? हमारे हिन्दुस्तान में 'हाउ टु ऑर्गनाइज़ फ़ैमिली', उस ज्ञान की कमी हैं। 'फ़ॉरिन'वाले तो 'फ़ैमिली' जैसा कुछ समझते ही नहीं। वे तो, जेम्स बीस साल का हो गया तो, उसके माता-पिता, विलियम और मेरी, जेम्स से कहेंगे कि, 'तू अलग

और हम तोता-मैना अलग!' उन्हें फ़ैमिली ऑर्गनाइज़ करने की आदत ही नहीं है न! और उनका फ़ैमिली तो स्पष्ट ही कहती है, मेरी के साथ विलियम को अच्छा न लगे तो 'डायवोर्स' की ही बात! और हमारे यहाँ 'डायवोर्स' की बात कहाँ? हमें तो साथ-साथ रहना है, तकरार करनी है और फिर साथ में वहीं एक ही कमरे में ही सोना भी है। यह जीने का तरीका नहीं है। इसे फ़ैमिली नहीं कहते!

और अपने देश में तो लोग फ़ैमिली डॉक्टर भी रखते हैं। अरे, अभी फ़ैमिली तो बनी नहीं, वहाँ फ़ैमिली डॉक्टर कहाँ रखता है!

ये लोग फ़ैमिली डॉक्टर रखते हैं, लेकिन यहाँ पत्नी ही फ़ैमिली नहीं! और कहते हैं, 'हमारे फ़ैमिली डॉक्टर आए हैं!' तो उनके साथ कोई किच-किच नहीं करते। डॉक्टर ने बिल ज़्यादा बनाया हो तब भी किच-किच नहीं करते। तब कहते है, 'हमारे फ़ैमिली डॉक्टर हैं न!' वे मन में ऐसा समझते हैं कि हमारा रौब जम गया, फ़ैमिली डॉक्टर रखे, इसलिए!

फ़ैमिली के सदस्य का ऐसे हाथ लग जाए तो हम उसके साथ झगड़ते हैं? नहीं! एक फ़ैमिली की तरह रहना, बनावट मत करना। लोग जो दिखावा करते हैं, ऐसा नहीं। एक फ़ैमिली... 'तुम्हारे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता', ऐसा कहना। वह हमें डाँटे न, उसके थोड़ी देर बाद कह देना, 'तू चाहे कितना भी डाँटे मगर मुझे तुम्हारे बगैर अच्छा नहीं लगता।' ऐसा कहना। इतना गुरु मंत्र बोलना। ऐसा कभी बोलते ही नहीं न! तुम्हें बोलने में कोई हर्ज है कि तुम्हारे बगैर अच्छा नहीं लगता? मन में प्रेम ज़रूर रखना, थोड़ा-बहुत दिखाना भी।

घर में क्लेश

कभी घर में क्लेश होता है? तुम्हें कैसा लगता है? घर में क्लेश होता है तो अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : क्लेश बिना तो नहीं चलती दुनिया।

दादाश्री : तब तो वहाँ पर भगवान रहेंगे ही नहीं। जहाँ क्लेश है वहाँ भगवान नहीं रहते।

प्रश्नकर्ता : वह तो है लेकिन कभी-कभी तो होना चाहिए न ऐसा क्लेश?

दादाश्री : नहीं, क्लेश होना ही नहीं चाहिए। क्लेश क्यों होना चाहिए इन्सान के घर? और क्लेश होने से अच्छा लगेगा? क्लेश हो तो तुम्हें कितने महिनों तक अच्छा लगेगा?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

दादाश्री : एक महीना भी अच्छा नहीं लगेगा, नहीं? मजेदार खाना, सोने के गहने पहनना और ऊपर से क्लेश करना। यह तो जीवन जीना ही नहीं आता। जीवन जीने की कला नहीं आती, उसका ही यह क्लेश है। हम तो कौन-सी कला के माहिर हैं कि डॉलर किस तरह कमाए! बस वही सोचते रहते हैं। लेकिन जीवन कैसे जीएँ, उस बारे में नहीं सोचा। नहीं सोचना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : सोचना चाहिए, लेकिन हर एक का तरीका अलग अलग होता है।

दादाश्री : नहीं, सबका तरीका अलग-अलग नहीं होता, एक ही तरह का। डॉलर, डॉलर, डॉलर। और फिर हाथ में आने पर हज़ार डॉलर वहाँ स्टोर में खर्च कर डालता है। चीज़ें घर में लाकर रखता है। फिर जब पुराना हो जाए तो दूसरा ले आता है। सारा दिन तोड़-जोड़, तोड़-जोड़, दु:ख, दु:ख और दु:ख, परेशानी-परेशानी और परेशानी। अरे, ऐसा जीवन कैसे जीया जाए? ऐसा मनुष्य को शोभा देता है? क्लेश-झगड़े नहीं होने चाहिए, कलह नहीं होना चाहिए। कुछ नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्लेश किसे कहते हैं?

दादाश्री : ओहो... ऐसे घरवालों के साथ, बाहरवालों के साथ, वाइफ के साथ टकराए, उसे क्लेश कहते हैं। मन टकराए और फिर थोड़ी देर अलग रहे, उसे क्लेश कहते हैं। दो-तीन घंटे लड़े और फिर तुरंत एक हो जाए तो हर्ज नहीं। लोकिन टकराकर दूर रहे, तो वह क्लेश कहलाता है। बारह घंटे दूर रहे तो सारी रात क्लेश में कटती है।

प्रश्नकर्ता : आपने जो कलह की बात कही वह पुरुष में ज़्यादा है या स्त्री में ज़्यादा है?

दादाश्री : वह तो स्त्री में ज़्यादा होता है, कलह।

प्रश्नकर्ता : उसका कारण क्या है?

दादाश्री : ऐसा है न, कभी जब झगड़ा हो जाता है, तब क्लेश हो जाता है। क्लेश होना अर्थात् झट से सुलग कर बुझ जाना। पुरुष और स्त्री में क्लेश हो जाए तब पुरुष उसे छोड़ देगा,लेकिन स्त्रियाँ उसे जल्दी नहीं छोड़तीं और क्लेश में से कलह खड़ी हो जाती है। फिर वह मुँह फुलाकर घूमती रहती है, मानो हमने उसे तीन दिन तक भूखा रखा हो!

प्रश्नकर्ता : यह कलह दूर करने के लिए क्या करें?

दादाश्री : आप क्लेश नहीं करोगे, तब कलह नहीं होगी। वास्तव में आप ही क्लेश करके सुलगाते हो। आज खाना अच्छा नहीं बनाया, आज तो मेरा मुँह बिगड़ गया, ऐसा करके क्लेश खड़ा करते हो और फिर वह तकरार करती है।

प्रश्नकर्ता : मुख्य वस्तु यह कि घर में शांति रहनी चाहिए।

दादाश्री : मगर शांति कैसे रहे? लड़की का नाम शांति रखें, फिर भी शांति नही रहती। उसके लिए तो धर्म समझना चाहिए। घर के सभी सदस्यों से कहना चाहिए कि, 'हम घर के सभी सदस्य आपस में किसी के बैरी नहीं हैं, किसी का किसी से झगड़ा नहीं है। हमें मतभेद करने की कोई ज़रूरत नहीं हैं। आपस में मिल-बाँटकर शांतिपूर्वक खाओ-पीओ। आनंद करो, मौज करो।' इस प्रकार हमें सोच-समझकर सब करना चाहिए। घरवालों के साथ क्लेश कभी भी नहीं करना चाहिए। उसी घर में पड़े रहना है फिर क्लेश किस काम का? किसीको परेशान करके खुद सुखी हो सके, ऐसा कभी नहीं होता। हमें तो सुख देकर सुख लेना है। हम घर में सुख देंगे, तभी सुख मिलेगा और वह चाय-पानी भी ठीक से बनाकर देगी, वर्ना चाय भी ठीक से नहीं बनाएगी।

यह तो कितनी चिंता-संताप! मतभेद ज़रा भी कम नहीं होता, फिर भी मन में मानते हैं कि मैंने कितना धर्म किया! अरे, घर में मतभेद टला? कम भी हुआ है? चिंता कम हुई? कुछ शांति आई? तब कहता है कि नहीं, लेकिन मैंने धर्म तो किया न? अरे, तू किसे धर्म कहता है? धर्म से तो भीतर शांति हो जाती है। जहाँ आधि-व्याधि-*उपाधि* नहीं हो, वह धर्म! स्वभाव (आत्मा) की ओर जाना धर्म कहलाता है। यह तो क्लेश परिणाम बढ़ते ही रहते हैं!

वाइफ के हाथ से अगर पंद्रह-बीस इतनी बड़ी काँच की डिशें और ग्लास-वेयर गिरकर फूट जाएँ तो? उस वक्त आप पर कोई असर होता है क्या?

दु:ख होता है, इसलिए कुछ बड़बड़ाये बगैर रहता नहीं न! यह रेडियो बजे बगैर रहता ही नहीं! दु:ख हुआ कि रेडियो शुरू, इसलिए उसे (वाइफ को) दु:ख होता है। तब फिर वह क्या कहेगी? हाँ, जैसे तुम्हारे हाथों तो कभी कुछ टूटता ही नहीं! यह समझने की बात है कि हमसे भी डिशें गिर जाती हैं न। उसे हम कहें कि तू फोड़ डाल तो नहीं फोड़ेगी। फोड़ेगी कभी? वह कौन फोड़ता होगा? इस वर्ल्ड में कोई मनुष्य एक डिश भी फोड़ने की शक्ति नहीं रखता। यह तो सब हिसाब बराबर हो रहा है। डिशें टूटने पर हमें पूछना चाहिए कि तुम्हें लगी तो नहीं है न?

अगर सोफे के लिए झगड़ा हो रहा हो तो सोफे को बाहर फेंक दो। वह सोफा तो दस-बीस हज़ार का होगा, उसके लिए झगड़ा कैसा? जिसने फाड़ा हो उसके प्रति द्वेष होता है। अरे भाई, फेंक आ। जो चीज़ घर में झगड़ा खड़ा करे, उस चीज़ को बाहर फेंक आ।

जितना समझ में आता है, उतनी श्रद्धा बैठती है। उतना ही वह फल देती है, मदद करती है। श्रद्धा नहीं बैठे तो वह मदद नहीं करती। इसलिए समझकर चलोगे तो अपना जीवन सुखी होगा और उनका भी सुखी होगा। अरे! आपकी पत्नी आपको पकौड़े और जलेबियाँ बनाकर नहीं देतीं?

प्रश्नकर्ता : बनाकर देती है न!

दादाश्री : हाँ तो फिर? उनका उपकार नहीं मानते, क्योंकि वह हमारी पार्टनर है, 'इसमें उनका क्या उपकार?' ऐसा कहते हैं। हम पैसे लाते हैं और वह यह सब कर देती है, उसमें दोनों की पार्टनरशिप है। बच्चे भी पार्टनरशिप में हैं, उस अकेली के थोड़े ही हैं? उसने जन्म दिया तो क्या उस अकेली के हैं? बच्चे दोनों के होते हैं। दोनों के हैं या उनके अकेली के?

प्रश्नकर्ता : दोनों के।

दादाश्री : हाँ। क्या पुरुष बच्चे को जन्म देनेवाले थे? अर्थात् यह जगत् समझने जैसा है! कुछ मामलों में बिल्कुल समझने जैसा है। और वह बात ज्ञानीपुरुष समझाते हैं। उन्हें कुछ लेना-देना नहीं होता। इसलिए वे समझाते हैं कि भाई, यह अपने हित में है। उसमें घर में क्लेश कम होता है, तोड़फोड़ भी कम होती है।

कृष्ण भगवान ने कहा है, बुद्धि दो प्रकार की है, अव्यभिचारिणी और व्यभिचारिणी। व्यभिचारिणी अर्थात् दुःख ही देती है और अव्यभिचारिणी बुद्धि, सुख ही देती है। दुःख में से सुख खोज निकालती है। और यह तो बासमती चावल में कंकड़ मिलाकर खाते हैं। यहाँ अमरीका में खाने का कितना अच्छा ! और शुद्ध घी मिलता है, दही मिलता है, कितना अच्छा भोजन! ज़िंदगी सरल है फिर भी जीवन जीना नहीं आता, इसलिए मार खाते हैं न लोग!

हमारे लिए हितकारी क्या है, इतना तो सोचना चाहिए न! शादी की, उस दिन का आनंद याद करें, वह हितकारी है या विधुर हुए, उस दिन का शोक याद करें, वह हितकारी है?

हमें तो ब्याह के समय ही विधुर होने का विचार आया था! तब विवाह के समय नया साफ़ा बाँधा था। बाद में साफा खिसका तो अंदर विचार आया कि यह विवाह तो कर रहे हैं, दोनों का मिलन हो रहा है लेकिन दोनों में से एक को वैधव्य आएगा ही!

प्रश्नकर्ता : उतनी उम्र में आपको ऐसे विचार आए थे?

दादाश्री : हाँ, नहीं आएगा भला? एक पहिया तो टूटेगा न? शादी हुई है तो वैधव्य आए बगैर रहेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन विवाह के समय तो सिर पर शादी का जोश सवार होता है, कितना मोह होता है! उसमें ऐसा वैराग्य का विचार कहाँ आता है?

दादाश्री : लेकिन उस समय विचार आया कि विवाह हुआ और बाद में वैधव्य तो आएगा ही। दो में से एक को तो वैधव्य आएगा, या तो उन्हें आएगा या तो मुझे आएगा।

सभी की मौजूदगी में, सूर्यनारायण की साक्षी में, पंडितजी की साक्षी में शादी की। उस समय पंडितजी ने कहा था कि 'समय वर्ते सावधान', तब तुझे सावधान होना भी नहीं आता? समय के अनुसार सावधान होना चाहिए। पंडितजी कहते हैं कि 'समय वर्ते सावधान', उसे पंडितजी समझते हैं, मगर शादी करनेवाला क्या समझेगा? सावधान का अर्थ क्या है? जब बीवी उग्र हो जाए तब तू ठंडा हो जाना, सावधान हो जाना। 'समय वर्ते सावधान' यानी जैसा समय आए, उस अनुसार सावधान रहने की ज़रूरत है। तभी संसार में शादी करनी चाहिए। वह उछले और हम भी उछलने लगें तो असावधानी कहलाएगी। वह उछले तब हमें शांत रहना है। सावधान रहने की ज़रूरत नहीं है? हम तो सावधान रहे थे। दरार पड़ने नहीं दी। दरार पड़ने लगे तो तुरंत वेल्डिंग कर देते थे।

प्रश्नकर्ता : क्लेश होने का मूल कारण क्या है?

दादाश्री : भयंकर अज्ञानता! उसे संसार में जीना नहीं आता, लड़के का बाप होना नहीं आता, पत्नी का पति होना नहीं आता। जीवन जीने की कला ही नहीं आती। ये तो सुख होने पर भी सुख नहीं भोग सकते।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्लेश पैदा होने का कारण यह है कि, स्वभाव मेल नहीं खाता?

दादाश्री : अज्ञानता है, इसलिए। संसार का अर्थ ही यह है कि

किसी का स्वभाव किसी से मिलता ही नहीं। जिसे यह ज्ञान प्राप्त हुआ हो उसके पास एक ही रास्ता है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'।

जहाँ क्लेश होता है, वहाँ भगवान का वास नहीं रहता। यानी कि हम लोग ही भगवान से कहते हैं, 'साहब, आप मंदिर में रहना, मेरे घर मत आना। हम मंदिर ज़्यादा बनवाएँगे, लेकिन हमारे घर मत आना।' जहाँ क्लेश नहीं होता, वहाँ भगवान का निवास निश्चित है, इसकी मैं तुम्हें 'गारन्टी' देता हूँ। क्लेश हुआ कि भगवान चले जाते हैं। और भगवान चले जाएँ तो लोग हमें क्या कहेंगे, धंधे में कुछ बरकत नहीं रही। अरे, भगवान गए इस कारण बरकत नहीं आती। भगवान अगर रहें न, तब तक धंधे में अच्छी बरकत आती है। आपको पसंद है क्लेश?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : फिर भी हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी।

दादाश्री : वह तो दिवाली भी कभी-कभी ही आती है न, हर रोज़ थोड़े ही आएगी?

प्रश्नकर्ता : बाद में पंद्रह मिनट में शांत हो जाता है, क्लेश बंद हो जाता है।

दादाश्री : अपने में से क्लेश निकाल दो। जिनके यहाँ घर में क्लेश है, वहाँ से मनुष्यता चली जाती है। बड़े पुण्य से मनुष्य जीवन प्राप्त होता है, वह भी हिन्दुस्तान का मनुष्य! और वह भी फिर यहाँ (अमेरिका में) आपको, वहाँ हिन्दुस्तान में तो असली घी खोजने पर भी नहीं मिलता और आपको यहाँ पर रोज़ शुद्ध ही मिलता है। अशुद्ध तो ढूँढने पर भी नहीं मिलें, कितने पुण्यवान हो! लेकिन इस पुण्य का भी फिर दुरुपयोग होता है।

अपने घर में क्लेश रहित जीवन जीना चाहिए, इतनी कुशलता तो आप में होनी चाहिए। दूसरा कुछ नहीं आए तो उन्हें समझाना चाहिए कि

'क्लेश होगा तो हमारे घर में से भगवान चले जाएँगे। इसलिए तू ठान ले कि हमें क्लेश नहीं करना है!' और आप भी तय करो कि क्लेश नहीं करना है। तय करने के बाद क्लेश हो जाए तो समझना कि यह आपकी सत्ता के बाहर हुआ है। इसलिए वह क्लेश कर रहा हो तो भी आप ओढ़कर सो जाना है। वह भी थोड़ी देर बाद सो जाएगा। लेकिन अगर आप भी उनसे बहस करोगे तो?

क्लेश नहीं हो ऐसा निश्चय करो न! तीन दिन के लिए तो निश्चय करके परिणाम देखो! प्रयोग करने में क्या हर्ज है? तीन दिन का उपवास करते हैं न स्वास्थ्य के लिए? उसी तरह यह भी तय करके देखो। घर में आप सब मिलकर तय करो कि 'दादा जो बात कर रहे थे, वह बात मुझे पसंद आई है, इसलिए हम आज से क्लेश छोड़ दें।' फिर देखो।

प्रश्नकर्ता : यहाँ अमरीका में औरतें भी नौकरी करती हैं न, इसलिए ज़रा ज़्यादा पावर आ जाता है, औरतों को इसलिए हज़बेन्ड-वाइफ में ज़्यादा किट-किट होती है।

दादाश्री : पावर आए तो अच्छा है न बल्कि, आपको तो यह समझना है कि 'अहोहो! बिना पावर के थे, अब पावर आया तो अच्छा हुआ हमारे लिए!' बैलगाड़ी ठीक से चलेगी न? बैलगाड़ी के बैल ढीले हों तो अच्छा या पावरवाले हों तो?

प्रश्नकर्ता : लेकिन गलत पावर करे, तब गलत चलेगा न? अच्छा पावर करती हो तो ठीक है।

दादाश्री : ऐसा है न, पावर को माननेवाला नहीं हो, तो उसका पावर दीवार से टकराएगा। वह ऐसे रौब मारेगी और वैसे रौब मारेगी परंतु यदि आप पर कुछ असर नहीं होगा तो उसका सारा पावर दीवार से टकराकर फिर उसीको वापस लगेगा।

प्रश्नकर्ता : आपके कहने का मतलब ऐसा है कि हमें औरतों की सुननी ही नहीं चाहिए, ऐसा।

दादाश्री : सुनो, सब ध्यान से सुनो, आपके हित की बात हो तो

सब सुनो और पावर जब टकराए, उस घड़ी मौन रहना। आप यह देख लेना कि कितना पीया। पीया होगा, उसी अनुसार पावर इस्तेमाल करेगी न?

प्रश्नकर्ता : ठीक है। उसी प्रकार जब पुरुष भी व्यर्थ पावर दिखाएँ तब?

दादाश्री : तब आप ज़रा ध्यान रखना। आज थोड़े उल्टे चल रहे हैं ऐसा मन में कहना, मुँह पर कुछ मत कहना।

प्रश्नकर्ता : हाँ... नहीं तो ज़्यादा उल्टा करेंगे।

दादाश्री : 'आज उल्टे चले है, ऐसा कहती हैं... ऐसा नहीं होना चाहिए। कितना सुंदर... दो मित्र आपस में ऐसा करते हैं क्या? ऐसा करें तब मैत्री टिकेगी क्या, ऐसा करोगे तो? उसी प्रकार ये स्त्री-पुरुष दोनों मित्र ही कहलाते हैं अर्थात् मैत्री भाव से घर चलाना है और यह दशा कर डाली! क्या इसलिए लोग ग्रीन कार्डवालों के साथ अपनी लड़कियों की शादी करवाते होंगे? क्या यह हमें शोभा देता है? आपको क्या लगता है? यह हमें शोभा नहीं देता। संस्कारी किसे कहते हैं? घर में क्लेश हो, वे संस्कारी कहलाते हैं या क्लेश नहीं हो, वे?

पहले तो घर में क्लेश नहीं होना चाहिए और अगर हो जाए तो उसे पलट लेना चाहिए। थोड़ा होने लगे, ऐसा हो, हमें लगे कि अभी विस्फोट होगा, उससे पहले ही पानी छिड़क कर ठंडा कर देना। पहले की तरह क्लेशयुक्त जीवन जीओ तो उसका क्या फायदा? उसका अर्थ ही क्या? क्लेशयुक्त जीवन नहीं होना चाहिए न? क्या ले जाना हैं? घर में साथ में खाना-पीना है, फिर कलह किस बात की? अगर कोई, आपके पति के लिए कुछ कहे तो बुरा लगता है कि मेरे पति के बारे में ऐसा कहते हैं और खुद पति से कहती हैं कि 'तुम ऐसे हो, वैसे हो', ऐसा नहीं होना चाहिए। पति को भी ऐसा नहीं करना चाहिए। आप में क्लेश होगा न, तो बच्चों के जीवन पर असर पड़ेगा। बच्चों पर असर होता है। इसलिए क्लेश जाना चाहिए। क्लेश मिटे तभी घर के बच्चे भी सुधरते हैं। ये तो बच्चे भी सब बिगड़ गए हैं।

हमें तो यह ज्ञान हुआ तब से, बीस सालों से तो क्लेश है ही नहीं, लेकिन उसके बीस साल पहले भी क्लेश नहीं था। पहले से ही, क्लेश को तो हमने निकाल दिया था। किसी भी हालत में क्लेश करने जैसा नहीं है यह जगत्।

अब आप सोच कर कार्य करना या फिर 'दादा भगवान' का नाम लेना। मैं भी 'दादा भगवान' का नाम लेकर सभी कार्य करता हूँ न! 'दादा भगवान' का नाम लोगे तो तुरंत ही आपकी धारणा अनुसार हो जाएगा।

पति-पत्नी में मतभेद

हमें तो मूलत: क्रोध-मान-माया-लोभ जाएँ, मतभेद कम हों, ऐसा चाहिए। आपको यहाँ पूर्णता प्राप्त करनी है, प्रकाश कराना है। यहाँ कब तक अंधेरे में रहोगे? आपने क्रोध-मान-माया-लोभ जैसी निर्बलताएँ, मतभेद देखे हैं?

प्रश्नकर्ता : बहुत।

दादाश्री : कहाँ, कोर्ट में?

प्रश्नकर्ता : घर पर, कोर्ट में, सब जगह...

दादाश्री : घर में तो क्या होगा? घर में तो आप तीन लोग, वहाँ मतभेद कैसा? दो-चार-पाँच बेटियाँ, ऐसा तो कुछ है नहीं। आप तीन हों, वहाँ मतभेद कैसा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन तीनों में ही अनेक मतभेद हैं।

दादाश्री : तीन में भी? ऐसा!

प्रश्नकर्ता : अगर ज़िंदगी में कॉन्फलिक्ट नहीं होंगे, तो ज़िंदगी का मज़ा ही नहीं आएगा!

दादाश्री : अहोहो .... मज़ा इससे आता है? तब तो फिर रोज़ ही करो ना! यह किसकी खोज है? यह किस दिमाग़ की खोज है? फिर तो रोज़ मतभेद करने चाहिए, कॉन्फलिक्ट का मज़ा लेना हो तो।

प्रश्नकर्ता : वह तो अच्छा नहीं लगेगा।

दादाश्री : यह खुद का बचाव किया है लोगों ने। मतभेद सस्ता होता है या महँगा? कम मात्रा में या अधिक मात्रा में?

प्रश्नकर्ता : कम भी होता हैं और अधिक भी होता है।

दादाश्री : कभी दिवाली और कभी होली! उसमें मज़ा आता है या मज़ा जाता है?

प्रश्नकर्ता : वह तो संसार चक्र ही ऐसा है।

दादाश्री : नहीं, लोगों को बहाने बनाने के लिए यह अच्छा हाथ लगा है। संसार चक्र ऐसा है, ऐसा बहाना बनाते हैं, लेकिन यों नहीं कहते कि मेरी कमज़ोरी है।

प्रश्नकर्ता : कमज़ोरी तो है ही। कमज़ोरी है, तभी तो तकलीफ होती है न!

दादाश्री : हाँ बस, संसार बाधक नहीं है। संसार निरपेक्ष है। सापेक्ष भी है और निरपेक्ष भी है। वह तो हम ऐसा करें तो ऐसा और ऐसा नहीं करें तो कुछ भी नहीं, कुछ भी लेना-देना नहीं। मतभेद तो कितनी बड़ी कमज़ोरी है। अत: लोग संसारचक्र कहकर उसे ढकने जाते हैं। इसलिए ढकने के कारण, वह वैसी ही रहती है। वह कमज़ोरी क्या कहती है? 'जब तक मुझे पहचानोगे नहीं, तब तक मैं नहीं जानेवाली।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन घर में मतभेद तो होते रहते हैं, यह तो संसार हैं न!

दादाश्री : लोग तो बस, रोज़ झगड़े होते हैं न, फिर भी कहते हैं कि 'ऐसा तो चलता रहता है।' अरे, मगर उससे डिवेलपमेन्ट नहीं होता। क्यों होता है? किसलिए होता है? ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या हो रहा है? उसका पता लगाना पड़ेगा।

घर में कभी मतभेद होता है, तब क्या दवाई लगाते हो? दवाई की बोतल रखते हो?

प्रश्नकर्ता : मतभेद की कोई दवाई नहीं है।

दादाश्री : हें! क्या कहते हो? तब फिर आप इस कमरे में चुप, पत्नी उस कमरे में चुप, ऐसे रूठ कर सोये रहना? दवाई लगाए बगैर? फिर वह किस तरह मिट जाता होगा? घाव भर जाता होगा न? मुझे यह बताओ कि दवाई लगाए बगैर घाव कैसे भर जाएगा? यह तो सुबह तक भी घाव नहीं भरता। सवेरे चाय का कप देते समय ऐसे पटकती है। आप भी समझ जाते हो कि अभी रात का घाव भरा नहीं है। ऐसा होता है या नहीं होता? यह बात कुछ अनुभव से बाहर की थोड़े ही है? हम सभी एक जैसे ही हैं। अर्थात् ऐसा क्यों हुआ कि अभी भी मतभेद का घाव पड़ा हुआ है?

लेकिन रोज़ रोज़ वह घाव वैसा ही रहता है, भरता ही नहीं, घाव तो रहता ही है न! खरोंच (डेन्ट) पड़े होते हैं, इसलिए घाव नहीं होने देने चाहिए। क्योंकि यदि अभी उसे दबाया, तो जब आपका बुढ़ापा आएगा तब पत्नी आपको दबाएगी। अभी तो मन में कहती है कि ज़ोरवाला है यह, इसलिए थोड़े समय चला लेगी। फिर उसकी बारी आएगी, तब आपको समझा देगी। इसके बजाय व्यापार ऐसा रखना कि वह आपको प्रेम करे, आप उसे प्रेम करें। भूलचूक तो सभी से होती ही है न। भूलचूक नहीं होती? भूलचूक होने पर मतभेद क्यों करें? मतभेद करना हो तो किसी बलवान से जाकर झगड़ना ताकि आपको तुरंत जवाब मिल जाए। यहाँ पर तुरंत जवाब मिलेगा ही नहीं कभी भी। इसलिए दोनों समझ लेना और ऐसे मतभेद मत डालना। यदि कोई मतभेद डाले तो कहना कि दादाजी क्या कहते थे? ऐसा क्यों बिगाड़ते हो?

मत ही नहीं रखना चाहिए। अरे! दोनों ने शादी की फिर मत अलग कैसा? दोनों ने शादी की, फिर भी मत अलग रखते होंगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं रखना चाहिए, मगर रहता है।

दादाश्री : वह आप छोड़ देना। अलग मत रखा जाता होगा? वर्ना शादी नहीं करनी थी। शादी की है तो एक हो जाओ।

यानी यह जीवन जीना भी नहीं आया! व्याकुलता में जीते हो! 'अकेले हो?' पूछे तो कहता है, 'नहीं, शादी-शुदा हूँ'। तो वाइफ है, फिर भी तेरी व्याकुलता नहीं मिटी! क्या व्याकुलता नहीं जानी चाहिए? इस सब पर मैंने विचार कर लिया था। यह सब लोगों को नहीं सोचना चाहिए? बहुत बड़ा विशाल जगत् है, लेकिन यह जगत् अपने रूम के अंदर है, ऐसा ही मान लिया है, और वहाँ पर भी अगर जगत् मानता हो तो अच्छा, लेकिन वहाँ भी वाइफ के साथ लट्ठेबाजी करता है!

प्रश्नकर्ता : दो पतीले हों तो आवाज़ होती है और फिर शांत हो जाती है।

दादाश्री : आवाज़ हो तो मज़ा आता है क्या? 'ज़रा भी अक़्ल नहीं' ऐसा भी कहती है।

प्रश्नकर्ता : वह तो फिर यह भी कहती है न कि मुझे आपके सिवा दूसरा कोई अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : हाँ, ऐसा भी बोलती है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन बर्तन घर में खड़केंगे ही न?

दादाश्री : रोज़-रोज़ बर्तन खड़केंगे तो कैसे अच्छा लगेगा? यह तो समझता नहीं है, इसलिए चलता है। जागृत हो उसे तो, एक ही मतभेद पड़े तो रातभर नींद नहीं आए! इन बर्तनों (मनुष्यों) के तो स्पंदन हैं, इसलिए रात को सोते-सोते भी स्पंदन होते रहते हैं कि 'ये तो ऐसे हैं, टेढ़े हैं, उलटे हैं, नालायक हैं, बाहर करने जैसे हैं।' और उन बर्तनों के कुछ स्पंदन हैं? हमारे लोग बिना समझे 'हाँ' में 'हाँ' मिलाते हैं कि दो बर्तन साथ में होंगे तो खड़केंगे! हम क्या बर्तन हैं कि हम खड़कें? इन 'दादा' को किसी ने कभी भी टकराव में नहीं देखा होगा! सपना भी नहीं आया होगा वैसा!! टकराना क्यों? टकराना तो अपनी ज़िम्मेदारी पर है। क्या यह किसी और की ज़िम्मेदारी है? चाय जल्दी नहीं आई हो और आप टेबल तीन बार ठोको, वह जोखिमदारी किसकी? इसके बजाय आप नासमझ बनकर बैठे रहो। चाय मिली तो ठीक वर्ना हम तो चले ऑफिस।

क्या गलत है? चाय का भी कोई काल होता होगा न? यह संसार नियम से बाहर तो नहीं होगा न? इसलिए हमने कहा है कि 'व्यवस्थित'! जब उसका समय होगा तो चाय मिलेगी। ठोकना नहीं पड़ेगा। आप स्पंदन खड़े नहीं करोगे तो भी चाय आएगी और स्पंदन खड़े करोगे तब भी आएगी। लेकिन स्पंदनों से वापस वाइफ के बहीखाते में हिसाब जमा होगा कि आप उस दिन टेबल ठोक रहे थे न!

घर में वाइफ के साथ मतभेद हो जाए, तब उसका समाधान करना नहीं आता, बच्चों के साथ मतभेद उत्पन्न हो जाए, उसका समाधान करना नहीं आता और उलझता रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहेगा न कि 'वाइफ समाधान करे, मैं नहीं करूँगा।'

दादाश्री : अर्थात् 'लिमिट' पूरी हो गई। 'वाइफ' समाधान करे और हम नहीं करें, तब हमारी लिमिट हो गई पूरी। पुरुष तो ऐसा बोलना चाहिए कि 'वाइफ' खुश हो जाए और ऐसा करके गाड़ी आगे बढ़ा दे। और आप तो पंद्रह-पंद्रह दिन, महीना-महीना भर गाड़ी वहीं की वहीं, आगे ही नहीं बढ़ती। जब तक सामनेवाले के मन का समाधान नहीं होगा, तब तक तुम्हें मुश्किल रहेगी। इसलिए समाधान कर लेना।

ऐसे घर में मतभेद पड़ेंगे तो कैसे चलेगा? स्त्री कहती है 'मैं तुम्हारी हूँ' और पति कहता है कि 'मैं तेरा हूँ', फिर मतभेद कैसा? आप दोनों के बीच 'प्रोब्लम' बढ़ेंगे तो अलगाव पैदा होगा। 'प्रोब्लम' 'सॉल्व' हो जाएँ, तो फिर अलगाव नहीं होगा। जुदाई के कारण दुःख हैं। और सभी को प्रोब्लम खड़े होते ही हैं, तुम्हें अकेले को ही होते हों ऐसा नहीं। जितनों ने शादी की उतनों को प्रोब्लम खड़े हुए बिना रहते नहीं।

पत्नी के साथ मतभेद पड़ता है उसे! जिसके साथ ... डबल बेड होता है या एक ही बिस्तर?

प्रश्नकर्ता : नहीं, माफ़ करना। एक ही होता है।

दादाश्री : तो फिर उसके साथ झगड़ा हो और रात को लात मारे तब क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : नीचे।

दादाश्री : तो उसके साथ एकता रखना। वाइफ के साथ भी मतभेद हो, वहाँ भी एकता नहीं रहेगी तब फिर और कहाँ रखोगे ? एकता यानी क्या कि कभी भी मतभेद नहीं पड़े। इस एक व्यक्ति के साथ तय करना कि 'तुम्हारे और मेरे बीच मतभेद नहीं पड़े, ऐसी एकता रहनी चाहिए।' वैसी एकता रखी है आपने?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कभी सोचा ही नहीं। आज पहली बार सोच रहा हूँ।

दादाश्री : हाँ, यह सोचना पड़ेगा न? भगवान कितने विचारकर-करके मोक्ष में गए!

बातचीत करो न! उसमें कुछ खुलासा होगा। यह तो जोग बैठा, इसलिए इकट्ठे हुए हैं, वर्ना इकट्ठे नहीं होते ! इसलिए कुछ बातचीत करो न! इसमें हर्ज क्या है? हम सब एक ही हैं, आपको जुदाई लगती है। क्योंकि भेदबुद्धि से मनुष्य को जुदा लगता है, बाकी सब एक ही हैं। मनुष्य में भेदबुद्धि होती है न! वाइफ के साथ भेदबुद्धि नहीं होती न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वैसा ही हो जाता है।

दादाश्री : यह वाइफ के साथ भेद कौन करवाता है? बुद्धि ही!

औरत और उसका पति दोनों पड़ोसी के साथ झगड़ा करते हैं, तब कैसे अभेद होकर झगड़ते हैं! दोनों ऐसे-ऐसे हाथ करके तुम ऐसे और तुम वैसे करते हो। दोनों यों हाथ हिलाते हैं तो हम समझते हैं कि अहोहो! इन दोनों में इतनी एकता! यह इनका 'कोर्पोरेशन' अभेद है, ऐसा हमें लगता है। और बाद में घर में जाकर दोनों झगड़ने लगें, तब क्या कहेंगे? घर में वे दोनों झगड़ते हैं या नहीं झगड़ते? कभी तो झगड़ते होंगे न? वह कॉर्पोरेशन अंदर-अंदर जब झगड़ता है न, 'तू ऐसी और तुम वैसे, तू ऐसी और तुम वैसे...' फिर जब घर में जमकर लड़ाई होती है न! तब तो कहता है, 'तू चली जा, यहाँ से। अपने घर चली जा। मुझे तेरी ज़रूरत ही नहीं है।' अब यह नासमझी नहीं है क्या? आपको क्या लगता है? अभेदता

टूट गई और भेद उत्पन्न हुआ। अर्थात् वाइफ के साथ भी 'तू तू, मैं मैं' होती है। 'तू ऐसी है और तू वैसी है!' तब वह कहेगी, 'तुम कहाँ सीधे हो?' अर्थात् घर में भी 'मैं और तू' हो जाता है।

'मैं और तू, मैं और तू, मैं और तू'। जो पहले एक थे, 'हम दोनों एक हैं, हम ऐसे हैं, हम वैसे हैं। हमारा ही है यह।' उसमें से 'मैं और तू' हुआ! अब, मैं और तू हुआ इसलिए खींचातानी होती है। वह खींचातानी फिर कहाँ तक पहुँचती है? ठेठ हल्दीघाटी की लड़ाई शुरू हो जाती है। सर्व विनाश को निमंत्रित करने का साधन, यह खींचातानी! इसलिए खींचातानी तो किसी के साथ मत होने देना।

रोज़ाना 'मेरी वाइफ, मेरी वाइफ' कहता है और एक दिन उसने अपने कपड़े पति के बैग में रख दिए, तब दूसरे दिन पति क्या कहेगा? 'मेरे बैग में तूने साड़ियाँ रखी ही क्यों?' यह आबरूदार की औलाद! उसकी साड़ियाँ इसे खा गई! लेकिन उसका खुद का अलग अस्तित्व है न! वाइफ और हज़बेन्ड, वे तो बिज़नेस के लिए एक हुए, कॉन्ट्रैक्ट है यह। वह अलग अस्तित्व क्या मिट जाता है? अस्तित्व अलग ही रहता है। 'मेरे सन्दूक में साड़ियाँ क्यों रखती हो' ऐसा कहते हैं या नहीं कहते?

प्रश्नकर्ता : कहते हैं, कहते हैं।

दादाश्री : यह तो कलह करता है कि मेरे बैग में तेरी साड़ियाँ रखीं ही क्यों? इस पर पत्नी कहती है, 'किसी दिन इनके बैग में कुछ रखा तो ऐसे ही चिल्लाते हैं। जाने दो, पति चुनने में मेरी भूल हो गई लगती है। ऐसा पति कहाँ से मिला?' लेकिन अब क्या करें? खूंटे से बँधे हैं! विदेश में 'मेरी' हो तो दूसरे ही दिन चली जाए, लेकिन इन्डियन किस तरह चली जाए? खूँटे से बँधे हुए। जहाँ झगड़ा करने का स्थान ही नहीं हो, ऐसी जगह झगड़ा करें तो फिर झगड़ा करने जैसी जगह पर तो मार ही डालेंगे न ये लोग!

अरे, नहीं तो अगर पास-पास में बैग रखे हों तब भी कहेगा, 'उठा ले तू अपना बैग यहाँ से।' अरे मुए, शादी-शुदा है, शादी की है, एक हो

या नहीं? और फिर लिखता क्या है? अर्धांगिनी लिखता है। अरे! किस जात के हो तुम? हाँ, फिर अर्धांगिनी क्यों लिखता हैं? उसमें, आधा अंग नहीं है बैग में! आप किसकी मज़ाक उड़ा रहे हो, पुरुषों का या स्त्रियों का? ऐसा कहते है न! अर्धांगिनी नहीं कहते?

प्रश्नकर्ता : कहते हैं न!

दादाश्री : और ऐसे मुकर जाते हैं फिर। स्त्रियाँ दख़ल नहीं करती। स्त्रियों के बैग में यदि आपके कपड़े रखे हों तो वह दख़ल नहीं करती। और यहाँ तो इसे भारी अहंकार! बिच्छू की तरह यों डंक मार देता है, एकदम से।

यह तो मेरी आपबीती बता रहा हूँ, ताकि आप सबकी समझ में आए कि इन पर ऐसी बीती होगी। आप ऐसे ही सीधी तरह से कबूल करोगे नहीं, वह तो मैं कबूल कर लेता हूँ।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं, तब सभी को वापस खुद का याद आ जाता है और कबूल कर लेते हैं।

दादाश्री : नहीं, तुम क़बूल नहीं करते, लेकिन मैं क़बूल कर लेता हूँ कि मुझ पर बीती है। आपबीती नहीं बीती? अरे! डंक मारे तब कैसा मारता है, कि 'तू अपने घर चली जा' कहता है। अरे! चली जाएगी तब तेरी क्या दशा होगी? वह तो कर्म से बंधी है। कहाँ जाए बेचारी? लेकिन यह जो तू बोलता है वह व्यर्थ नहीं जाएगा। यह उसके दिल पर दाग़ पड़ेगा, बाद में वही दाग़ तुझ पर लगेगा, मुए। ये कर्म भुगतने पड़ेंगे। वह तो मन में ऐसा समझता है कि अब कहाँ जानेवाली है?! ऐसा नहीं बोलना चाहिए। अगर ऐसा बोलते हो तो वह भूल ही कहलाएगी न! सभी ने थोड़े बहुत ताने तो दिए होंगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दिए थे। सभी ने दिए हैं। इसमें अपवाद नहीं है। कम-ज़्यादा होगा, लेकिन अपवाद नहीं होगा।

दादाश्री : ऐसा है सब। अब इन सबको सयाने बनाने हैं, बोलिए

अब, ये किस प्रकार सयाने बनेंगे? देखो फ़जीहत, फ़जीहत! जैसे एरंडी का तेल पिया हो, ऐसा मुँह हो गया हो! मजेदार दूधपाक और अच्छा-अच्छा भोजन खाते हैं, फिर भी मुँह एरंडी का तेल पिया हो, ऐसा लगता है। एरंडी का तेल तो महँगा हो गया है, कहाँ से लाकर पीयें? यह तो यों ही, एरंडी का तेल पीया हो ऐसा मुँह लिए फिरता है!

प्रश्नकर्ता : घर में मतभेद दूर करने के लिए क्या करें?

दादाश्री : मतभेद क्यों होते हैं, इसका पता लगाओ। कभी ऐसा मतभेद होता है कि, एक लड़का और एक लड़की है, दोनों लड़के क्यों नहीं, ऐसा मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वैसे तो छोटी-छोटी बातों में मतभेद होता है।

दादाश्री : अरे, वह तो इगोइज़म है। इसलिए, जब वह कहे कि 'ऐसा है', तब कहना, 'ठीक है।' फिर कुछ नहीं होगा। लेकिन हम फिर अपनी अक़्ल बीच में लाते हैं। अक़्ल से अक़्ल लड़ती है, इसलिए मतभेद होता है।

प्रश्नकर्ता : 'ठीक है' ऐसा मुँह से बोलने के लिए क्या करना चाहिए? ऐसा बोल नहीं पाते, वह अहम् कैसे दूर करें?

दादाश्री : ऐसा बोल नहीं पाते, सत्य कहते हो। इसके लिए थोड़े दिन प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। यह जो मैं कह रहा हूँ, वह उपाय करने के लिए थोड़े दिन प्रैक्टिस करो न! फिर वह फिट हो जाएगा, एकदम से नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : मतभेद क्यों होते हैं? इसकी वजह क्या?

दादाश्री : मतभेद होता है, तब वह समझती है कि मैं अक़्लमंद और यह समझता है मैं अक़्लमंद। अक़्ल के ठेकेदार आए! बेचने जाएँ तो चार आने भी नहीं आएँ! इसके बजाय हम सयाने हो जाएँ, उसकी अक़्ल को हम देखा करें कि अहोहो... कैसी अक़्लमंद है! तब वह भी ठंडी पड़ जाएगी। लेकिन हम भी अक़्लमंद और वह भी अक़्लवाली, अक़्ल ही जहाँ लड़ने लगे, वहाँ क्या होगा फिर?!

तुम्हें मतभेद ज़्यादा होते हैं कि उन्हें ज़्यादा होते हैं?

प्रश्नकर्ता : उन्हें ज़्यादा होते हैं।

दादाश्री : अहोहो! मतभेद यानी क्या? मतभेद का अर्थ तुम्हें समझाता हूँ। यह रस्सा-कशी का खेल होता है न, देखा है तुमने?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : दो-चार लोग इस ओर खींचते हैं और दो-चार आदमी उस ओर खींचते हैं। मतभेद अर्थात् रस्साकशी। अतः हमें देखना है कि घर में बीवी बहुत ज़ोर से खींच रही है और हम भी ज़ोर से खींचेंगे तब फिर क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : टूट जाएगा।

दादाश्री : और टूट जाने पर गाँठ लगानी पड़ती है। तब गाँठ लगाकर चलाना, इससे तो अगर साबुत रखें, उसमें क्या हर्ज है? इसलिए जब वह बहुत खींचे न, तब हमें छोड़ देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दो में से छोड़े कौन?

दादाश्री : समझदार, जिसमें अक़्ल ज़्यादा है वह छोड़ देगा और कमअक़्ल खींचे बगैर रहेगा ही नहीं! इसलिए हमें, अक़्लमंद को छोड़ देना है और वह भी एकदम नहीं छोड़ना। एकदम छोड़ दें न, तो सामनेवाला गिर पड़ेगा। इसलिए धीरे-धीरे, धीरे-धीरे छोड़ना। मेरे साथ कोई खींचने लगे तब मैं धीरे-धीरे छोड़ देता हूँ। वर्ना गिर पड़े बेचारा। अब तुम छोड़ दोगे ऐसे? अब छोड़ना आएगा? छोड़ दोगे न? वर्ना रस्सा गाँठ मारकर चलाना पड़ेगा। रोज़ रोज़ गाँठ लगाना, यह क्या अच्छा लगता है? और फिर रस्सा तो चलाना ही पड़ता है न! तुम्हें क्या लगता है?

घर में मतभेद होने चाहिए? ज़रा-सा भी नहीं होना चाहिए!! घर में अगर मतभेद होता है तो यू आर अनफिट। अगर हज़बेन्ड ऐसा करे तो वह अनफिट फॉर हज़बेन्ड और वाइफ ऐसा करे तो अनफिट फॉर वाइफ।

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नी के झगड़ों का बच्चों पर क्या असर होता है?

दादाश्री : अहोहो! बहुत बुरा असर होता है। इतना सा बालक हो वह भी ऐसे देखता रहता है। पापा मेरी मम्मी के साथ बहुत झगड़ा करते हैं। पापा ही खराब हैं। लेकिन वह बोलता नहीं। वह समझता है कि बोलूँगा तो मारेंगे मुझे। मन में यह सब 'नोट' करता है, लेकिन घर में ऐसा तूफान देखता है तो फिर मन में गाँठ बाँध लेता है कि 'बड़ा होने पर पापा को पीटूँगा।' हमारे लिए अभी से तय कर लेता है। फिर बड़ा होने पर पिटाई करता है! 'क्या ऐसे पीटने के लिए मैंने तुम्हें बड़ा किया?' 'तब आपको किसने बड़ा किया था?' कहेगा जवाब में! 'अरे, मेरे बाप तक पहुँचा?' तब कहेगा, 'आपके दादा तक पहुँचूँगा।' आपने ऐसा बोलने का अवसर दिया इसीलिए न? ऐसी गाँठ बाँधने दो तो आपकी ही भूल है न! घर में डाँटे किसलिए? यदि उसे डाँटो ही नहीं तो बच्चा भी देखता है कि पापा कितने अच्छे हैं!

लड़कों, शादी के लिए 'मना' क्यों कहते हो? मैंने उनसे पूछा कि 'क्या दिक्कत है तुम्हें? मुझे बताओ कि तुम्हें औरत पसंद ही नहीं है? वास्तविकता क्या है मुझे बताओ।' तब वे कहते हैं, 'नहीं, हमें शादी नहीं करनी।' मैंने पूछा, 'क्यों?' तब बोले, 'शादी में सुख नहीं है, यह हमने देख लिया है।' मैंने कहा, 'अभी तुम्हारी उम्र नहीं हुई है और शादी किए बगैर तुम्हें कैसे मालूम हुआ, कैसे अनुभव हुआ?' तब कहते हैं, 'हमारे माता-पिता का सुख(!) हम देखते आए हैं। हम इन लोगों का सुख जान गए! इन लोगों को ही सुख नहीं है, तो हम शादी करेंगे तो और ज़्यादा दु:खी होंगे।' यानी ऐसा भी होता है।

ऐसा है न, अभी मैं कहूँ कि भाई, इस समय बाहर अंधेरा हो गया है। इस पर ये भाई कहें, 'नहीं, उजाला है।' तब मैं कहूँ, 'भाई, मैं आपको विनती करता हूँ, आप फिर से देखिये न।' तब कहे, 'नहीं, उजाला है।' तब मैं समझ जाता हूँ कि इन्हें जैसा दिखता हैं वैसा कह रहे हैं। मनुष्य की दृष्टि खुद की से आगे दृष्टि नहीं जा सकती। इसलिए फिर मैं उसे कह

दूँ कि आपके व्यू पोईन्ट से आप ठीक कहते हैं। अब मेरे लिए कोई दूसरा काम हो तो बताओ। इतना ही कहूँ, 'यस, यू आर करेक्ट बाइ योर व्यू पोईन्ट!' (हाँ, आप अपने दृष्टिकोण से सही हो।) कहकर मैं आगे बढ़ जाऊँ। इनके साथ कहाँ सारी रात बैठा रहूँ? वे तो ऐसे के ऐसे ही रहनेवाले हैं। इस तरह मतभेद का हल निकाल लेना।

मानो कि यहाँ से पाँच सौ फुट दूर हमने एक सुंदर सफेद घोड़ा खड़ा किया है और यहाँ पर प्रत्येक को दिखाकर पूछें कि वहाँ क्या दिख रहा है? कोई गाय कहे, तब हमें उसका क्या करना चाहिए? हमारे घोड़े को कोई गाय कहे, उस घड़ी हम उसे मारना चाहिए या क्या करें?

प्रश्नकर्ता : मारना नहीं चाहिए।

दादाश्री : क्यों?

प्रश्नकर्ता : उसकी दृष्टि से गाय दिखाई दी।

दादाश्री : हाँ, उसका चश्मा ऐसा है। आपको समझ लेना है कि इस बेचारे को नंबर आए हैं। इसलिए उसका कसूर नहीं। इसलिए आप उसे डाँट नहीं सकते। उससे कहना कि 'भाई, सही है आपकी बात।' फिर दूसरे से पूछो कि क्या दिखाई देता है? तब कहे, घोड़ा दिखता है। तब आप समझ जाओगे कि इन्हें नंबर नहीं है। और तीसरे से पूछें कि क्या दिखता है? वह कहे, 'बड़ा बैल हो ऐसा लगता है।' तब हम उसके चश्मे का नंबर जान जाएँगे। नहीं दिखता अर्थात् नंबर हैं, ऐसा समझ लेना। तुम्हें क्या लगता है?

जो आंतरिक मतभेद होते हैं, वे बीहेवियर में परिणमित होते हैं, वह तो बहुत भयंकर कहलाएगा न?

दादाश्री : आंतरिक मतभेद न? वे तो बहुत भयंकर!

पर मैंने पता लगाया कि इस आंतरिक मतभेद का कोई उपाय हैं? लेकिन किसी शास्त्र में नहीं मिला। फिर मैंने खुद संशोधन किया कि इसका

उपाय इतना ही है कि मैं अपना मत छोड़ दूँ, तब कोई मतभेद नहीं रहेगा। मेरा अभिप्राय ही नहीं, आपका अभिप्राय ही मेरा अभिप्राय।

अब एक बार मेरा हीराबा से मतभेद हो गया। मैं भी फँस गया। मेरी वाइफ को मैं 'हीराबा' कहता हूँ। हम तो ज्ञानीपुरुष, हम तो सभी को 'बा' कहते हैं और बाकी की सब लड़कियाँ कहलाती हैं! अगर बात सुनना तो कहूँ। यह बहुत लंबी बात नहीं है, छोटी बात है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह बात बताइए न!

दादाश्री : एक दिन मतभेद हो गया था। मेरी ही भूल थी उसमें, उनकी भूल नहीं थी।

प्रश्नकर्ता : वह तो उनकी हुई होगी, लेकिन आप कहते हैं कि मेरी भूल हुई थी।

दादाश्री : हाँ, लेकिन उनकी भूल नहीं थी, मेरी भूल। मुझे ही मतभेद नहीं डालना है। उन्हें तो हो तो भी हर्ज नहीं और नहीं हो तो भी हर्ज नहीं। मुझे नहीं डालना था, इसलिए मेरी ही भूल कहलाएगी न! यह ऐसे किया तो कुर्सी को लगा या मुझे?

प्रश्नकर्ता : आपको।

दादाश्री : इसलिए मुझे समझना चाहिए था न!

तब फिर एक दिन मतभेद हुआ। मैं फँस गया। मुझसे वह कहती है, 'मेरे भैया की चार लड़कियों की शादी होनी है, उनमें यह पहली की शादी है। हम शादी में क्या देंगे?' वैसे ऐसा नहीं पूछतीं तो चलता। जो भी दे, उसके लिए मैं 'ना' नहीं करता। मुझे पूछा इसलिए मेरी अक़्ल के अनुसार चला। उन जैसी अक़्ल मुझ में कहाँ से होती? उन्होंने पूछा इसलिए मैंने कहा कि 'इस अलमारी में चाँदी के छोटे-छोटे बर्तन पड़े हैं, वे दे देना, नये बनवाने के बजाय! ये चांदी के बर्तन अलमारी में पड़े हैं, उनमें से एकाध-दो दे देना!' इस पर उन्होंने मुझे क्या कहा जानते हो? हमारे घर में 'तू-तू मैं-मैं' जैसा शब्द नहीं निकलता था। 'हम-हमारा' ऐसा ही

बोलते हैं। अब वे ऐसा बोलीं कि 'तुम्हारे मामा की लड़कियों की शादी में तो इतने बड़े-बड़े चाँदी के थाल देते हो न!' उस दिन 'मेरा-तुम्हारा' बोलीं। वैसे हमेशा 'हमारा' ही कहती थीं। मेरे-तुम्हारे के भेद से नहीं कहती थीं। मैंने सोचा, 'आज हम फँस गए।' मैं तुरंत समझ गया। इसलिए इसमें से निकलने का रास्ता ढूँढने लगा। अब किस प्रकार इसे सुधार लूँ। खून निकलने लगा, अब किस प्रकार पट्टी लगाएँ कि खून बन्द हो जाए, वह हमें आता था!

अर्थात् उस दिन तू-तू, मैं-मैं हुई! 'आपके मामा के लड़के' कहा! यहाँ तक दशा हुई, मेरी नासमझी इतनी उल्टी! मैंने सोचा, यह तो ठोकर लगने जैसा हुआ आज तो! इसलिए मैं तुरंत ही पलट गया! पलटने में हर्ज नहीं। मतभेद हो, इससे तो पलटना अच्छा। तुरंत ही पलट गया पूरा....। मैंने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कहना चाहता।' मैं झूठ बोला, मैंने कहा, 'मेरी बात अलग है, आपके समझने में ज़रा भूल हो गई। मैं ऐसा नहीं कह रहा था।' तब कहे, 'तो क्या कह रहे हैं?' तब मैंने कहा, 'यह चाँदी का छोटा बर्तन देना और दूसरे पाँच सौ रुपये नक़द देना। वे उन्हें काम में आएँगे।' 'आप तो भोले हैं। इतना सारा कोई देता है कहीं?' इस पर मैं समझ गया कि हम जीत गए! फिर मैंने कहा, 'तो फिर आपको जितने देने हों, उतने देना, चारों लड़कियाँ हमारी बेटियाँ हैं।' तब वे खुश हो गई। फिर 'देव जैसे हैं' ऐसा कहने लगीं!

देखो, पट्टी लगा दी न! मैं जानता था कि मैं पाँच सौ कहूँगा तो दे दें, ऐसी नहीं हैं ये! तो फिर हम उन्हें ही अधिकार सौंप दें न! मैं स्वभाव पहचानता था। मैं पाँच सौ दूँ तो वे तीन सौ दे आएँ। तो फिर बोलो, सत्ता सौंपने में मुझे हर्ज होगा क्या?

भोजन के समय किट-किट

घर में किसलिए यह दख़ल देते हो? इन्सान से भूल नहीं होती क्या? करनेवाले से भूल होती है या नहीं करनेवाले से?

प्रश्नकर्ता : करनेवाले से।

दादाश्री : तब 'कढ़ी खारी है' ऐसी भूल नहीं निकालनी चाहिए। उस कढ़ी को अलग रखकर, अन्य जो कुछ है वह खा लेना चाहिए। क्योंकि उनकी आदत है कि ऐसी कोई गलती निकाल कर पत्नी को धमकाना। यह उनकी आदत है। लेकिन यह बहन भी कुछ कच्ची माया नहीं। यह अमरीका ऐसा करता है, तब रशिया वैसा करता है। अर्थात् अमरीका और रशिया जैसा हो गया यह तो, कुटुंब में, फ़ैमिली में। इसलिए निरंतर अंदर कोल्डवॉर चलता रहता है। ऐसा नहीं, फ़ैमिली बना दो। मैं तुम्हें समझाऊँगा कि फ़ैमिली बनकर कैसे रहना! यहाँ तो घर-घर क्लेश है।

'कढ़ी खारी बनी', ऐसा आप न कहो तो नहीं चलेगा? ओपिनियन नहीं दोगे तो क्या उन लोगों को पता नहीं चलेगा या हमें कहना ही पड़ता है? आपके यहाँ मेहमान आए हों न, तो मेहमानों को भी खाने नहीं देते। हम ऐसे क्यों बनें? वह खाएगी तो क्या उसे पता नहीं चलेगा या आपको ही उसे कहना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : कढ़ी खारी हो तो खारी कहना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : फिर जीवन खारा हो जाएगा न! आप 'खारी' कहकर सामनेवाले का अपमान करते हो। उसे फ़ैमिली नहीं कहते!

प्रश्नकर्ता : अपनों को ही कहते हैं न, पराये को थोड़े ही कहते हैं?

दादाश्री : तो क्या अपनों को ठेस पहुँचाना?

प्रश्नकर्ता : कहेंगे तो दूसरी बार ठीक से करेगी न, इसलिए।

दादाश्री : वह ठीक बनाए या न भी बनाए, वे बातें सब गप हैं। किस आधार पर होता है, वह मैं जानता हूँ। बनानेवाले के हाथ में सत्ता नहीं है और तुम्हारे कहनेवाले के हाथों में भी सत्ता नहीं है। इन सभी सत्ता का आधार क्या है? इसलिए एक अक्षर भी बोलने जैसा नहीं है।

तू अब थोड़ा-बहुत समझदार हुआ या नहीं हुआ? समझदार हो

जाएगा न! पूर्णरूप से समझदार हो जाना है। घर पर वाइफ कहेगी, 'अरे! ऐसा पति बार-बार मिले।' मुझे आज तक केवल एक बहन ने कहा, 'दादाजी, पति मिले तो यही का यही मिले।' वर्ना ज़्यादातर तो मुँह पर अच्छा कहती हैं, लेकिन पीछे से इतनी गालियाँ देती हैं। 'मेरे दिल में आज भी वह घाव है', ऐसा कहनेवाली भी एक औरत मिली!

बाकी स्त्री को बार-बार टोकाटाकी, टोकाटाकी नहीं करनी चाहिए। 'सब्जी ठंडी क्यों हो गई? दाल में छौंक ठीक से क्यों नहीं किया?' ऐसी किट-किट क्यों करते हो? बारह महिनों में एकाध दिन एकाध शब्द कहा हो तो ठीक है, लेकिन यह तो रोज़? 'ससुर मर्यादा में तो बहू लाज में।' आपको मर्यादा में रहना चाहिए। दाल ठीक नहीं बनी हो, सब्जी ठण्डी हो गई हो तो वह सब तो नियम के अधीन होता है। अगर बहुत ज़्यादा हुआ तो किसी वक्त कहना पड़े तो धीरे से कहना कि 'यह सब्जी रोज़ गर्म होती है, तब बहुत अच्छी लगती है।' इस प्रकार कहोगे तो वह इशारा समझ जाएगी।

हमारे यहाँ तो घर में भी किसीको मालूम नहीं कि 'दादा' को यह पसंद नहीं है या पसंद है। यह रसोई बनानी क्या रसोई बनानेवाले के हाथ का खेल है? यह तो खानेवाले के 'व्यवस्थित' के हिसाब से थाली में आता है, उसमें दख़ल नहीं करनी चाहिए।

पति चाहिए, पतिपना नहीं

शादी करने से पहले लड़की देखते हैं, उसमें हर्ज नहीं, देखो लेकिन सारा जीवन वैसी की वैसी रहनेवाली हो, तो देखना। वैसी रहती है क्या? जैसी देखी थी वैसी? परिवर्तन हुए बिना रहेगा? फिर परिवर्तन होगा न, वह सहन नहीं होगा, व्याकुलता होने लगेगी। फिर जाएँ कहाँ? आ फँसे भाई, आ फँसे।

फिर शादी किसलिए? आप बाहर से कमा लाओ, वह घर का काम करे और आपका संसार चले, साथ ही धर्म कर सको, इसके लिए शादी करनी है। और बीवी कहती हो कि एक-दो बच्चे तो चाहिए, तो उतना

निबटारा ला दो, फिर राम तेरी माया! लेकिन यह तो फिर स्वामी बनने जाता है। अरे, स्वामी बनने क्यों चला है? तुझमें बरकत तो है नहीं और स्वामी बनने चला! 'मैं तो स्वामी हूँ' कहता है! बड़ा आया स्वामी! मुँह तो देखो इनके पतियों के! लेकिन लोग तो स्वामित्व रखते हैं न?

गाय का स्वामी बन बैठता है, भैंस का भी, लेकिन गायें भी तुम्हें स्वामी के रूप में स्वीकार नहीं करतीं। वह तो तुम मन में समझते हो कि यह गाय मेरी है। तुम तो कपास को भी मेरा कहते हो, 'यह मेरा कपास है।' कपास को तो मालूम भी नहीं बेचारे को। तुम्हारे होते तो तुम्हें देखते ही बढ़ते और तुम्हारे घर चले जाने पर नहीं बढ़ते। लेकिन यह कपास तो रात को भी बढ़ता हैं। कपास रात को बढ़ता है या नहीं बढ़ता?

प्रश्नकर्ता : बढ़ता है।

दादाश्री : उसे तुम्हारी ज़रूरत नहीं, उसे तो बरसात की ज़रूरत है। जब बरसात नहीं होती, तब सूख जाता है बेचारा!

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे क्या हमारा पूरा ध्यान नहीं रखना चाहिए?

दादाश्री : अहोहो! बीवी ध्यान रखने के लिये लाए होंगे?

प्रश्नकर्ता : इसीलिए तो बीवी को घर लाए हैं न!

दादाश्री : ऐसा है न, शास्त्रकारों ने कहा है कि स्वामित्व जताना नहीं। वास्तव में तुम स्वामी नहीं, तुम्हारी पार्टनरशिप है। यह तो यहाँ व्यवहार में बोला जाता है कि पत्नी और पति, धनी-धनियानी! मगर वास्तव में पार्टनरशिप है। स्वामी हो, इसलिए तुम्हारा हक़-दावा नहीं है। दावा नहीं कर सकते। समझा-समझाकर सब काम करो।

प्रश्नकर्ता : कन्यादान किया, दान में कन्या दी, इसलिए फिर हम उसके स्वामी ही हो गए न?

दादाश्री : यह सुसंस्कृत समाज का काम नहीं हैं, यह वाईल्ड समाज का काम है। हमें, सुसंस्कृत समाज को, यह देखना चाहिए कि पत्नी को

ज़रा भी तकलीफ़ न हो। वर्ना तुम सुखी नहीं रहोगे। पत्नी को दु:ख देकर कोई सुखी नहीं हुआ। और जिस स्त्री ने पति को कुछ दु:ख पहुँचाया होगा, वह स्त्री भी कभी सुखी नहीं हुई!

स्वामित्व भाव के कारण तो वह सिर पर चढ़ बैठता है। अब पतिपन को भोगना है, *भोगवटा* (सुख-दु:ख का असर)है वह। वाइफ के साथ उसकी पार्टनरशिप है, मालिकी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अगर वाइफ बॉस बन बैठे तो उसका क्या करें?

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं, वह तो जलेबी, पकौड़े बना कर देती है न। हम कहें कि अहोहो! तूने तो पकौड़े-जलेबी बनाकर खिलाए न! ऐसा करो तो खुश हो जाएगी, कल वापस ठंडी पड़ जाएगी, अपने आप। इसकी घबराहट मत रखना। वह हम पर सवार कब होगी? अगर उसकी मूँछे उग जाएँ, तब सवार होगी। लेकिन क्या मूँछे निकलेंगी? कितनी भी समझदार हो जाए, फिर भी मूँछे निकलेंगी?

बाक़ी एक जन्म तो जितना तुम्हारा हिसाब है उतना ही होगा। दूसरा कोई लंबा-चौड़ा हिसाब होगा ही नहीं। एक भव का हिसाब तो निश्चित ही है, तो फिर क्यों न आप शांत चित्त होकर रहो?

कुछ लोग तो मूल में ही क्लेशपूर्ण स्वभाव के होते हैं। पर कुछ लोग तो ऐसे पक्के होते हैं कि बाहर झगड़ा कर आएँ, पर घर में बीवी के साथ झगड़ा नहीं करते। कुछ तो अपनी बीवी को झुलाते भी हैं।

प्रश्नकर्ता : वे झुला रहे थे, मियाँभाई! वह बात बताइए न!

दादाश्री : एक दिन हम एक मियाँभाई के वहाँ गए थे। वे मियाँभाई बीवी को झूला झुला रहे थे! इस पर मैंने पूछा कि, 'आप ऐसा करते हो इससे वह आप पर सवार नहीं हो जाती?' तब उसने कहा कि 'वह क्या सवार होगी, उसके पास कुछ हथियार तो नहीं, कुछ भी नहीं।' मैंने कहा कि, 'हमें तो डर लगता है कि बीवी सवार हो जाएगी तो क्या होगा? इस लिए हम झूला नहीं झुलाते।' तब मियाँभाई ने कहा कि 'यह झूला झुलाने की वजह आप जानते हो?'

वह तो ऐसा हुआ कि १९४३-४४ में हमने गवर्मेन्ट काम का कॉन्ट्रेक्ट रखा था, उसमें चिनाई काम का लेबर कॉन्ट्रेक्ट था। उसने कॉन्ट्रेक्ट ले लिया था। उसका नाम अहमद मियाँ, वे अहमद मियाँ कितने ही दिनों से कह रहे थे कि, 'साहब मेरे घर आप आइए, मेरी झोंपड़ी में आइए।' झोंपड़ी कह रहा था बेचारा। बातचीत में बड़े समझदार होते हैं, व्यवहार में बात अलग होती है या नहीं भी होती, पर बातचीत में जहाँ स्वार्थ नहीं होता, वहाँ अच्छा लगता है।

वह अहमद मियाँ एक दिन कहने लगा, 'सेठजी, आज हमारे घर आप तशरीफ़ लाइए। मेरे यहाँ पधारिए ताकि मेरे बीवी-बच्चे सभी को आनंद हो।' तब ज्ञान-वान तो नहीं था पर विचार बहुत सुंदर, लागणी बहुत सुंदर। अपने यहाँ से कमा रहा हो तो उसके लिए, 'कैसे अच्छा कमाये', ऐसी भावना भी थी। और वह दु:ख मुक्त होकर सुखी हो जाए, ऐसी भावना!

मैंने कहा, 'क्यों नहीं आऊँगा? तेरे यहाँ पहले आऊँगा।' तब कहने लगा, 'मेरे यहाँ तो एक ही रूम है, आपको कहाँ बिठाऊँगा?' तब मैंने कहा, 'मैं कहीं बैठ जाऊँगा, मुझे तो एक कुर्सी ही चाहिए, नहीं तो कुर्सी नहीं होगी, तो भी मुझे चलेगा। तेरी इच्छा है, इसलिए मैं ज़रूर आऊँगा।'फिर मैं तो गया। हमारा कॉन्ट्रेक्ट का व्यवसाय, इसलिए हम उसके घर भी गए, वहाँ चाय भी पी। हमें किसी से जुदाई नहीं रहती थी।

मैंने कहा, 'अरे, यह एक ही रूम बड़ा है और दूसरा तो संडास जितना छोटा है।' तब बोला, 'साहब, क्या करें? हम गरीब के लिए इतना बहुत है।' मैंने कहा, 'तेरी वाइफ कहाँ सोती हैं?' तब कहा, 'इसी रूम में, इसे बेडरूम कहो, इसी को डाईनींग रूम कहो, सब कुछ यही।' मैंने कहा 'अहमद मियाँ, औरत के साथ कुछ झगड़ा-वगड़ा नहीं होता क्या? 'यह क्या बोले? क्या?' मैंने कहा। तब वह बोला कभी नहीं होता। मैं ऐसा मूर्ख आदमी नहीं हूँ।' 'लेकिन मतभेद?' तब बोला, 'क्या कहते हैं? नहीं, मतभेद औरत के साथ नहीं। बीवी के साथ मेरी तकरार नहीं होती।' मैंने कहा, 'कभी बीवी गुस्सा हो जाए तब?' तो कहने लगा, 'प्यारी, बाहर

वह साहब परेशान करता है और ऊपर से तू परेशान करेगी तो मेरा क्या होगा? तो चुप हो जाती है।'

मैंने कहा, 'मतभेद नहीं होता इसलिए झंझट नहीं न?' तो बोला, ''नहीं, मतभेद होगा तो वह कहाँ सोयेगी और मैं कहाँ सोऊँगा? यहाँ दो-तीन मंज़िलें हों तो मैं जानूँ कि तीसरी मंज़िल पर चला जाऊँ। पर यहाँ तो इसी रूम में सोना है। मैं इस करवट सो जाऊँ और वह उस करवट सो जाए, फिर क्या मज़ा आएगा? सारी रात नींद नहीं आएगी। लेकिन अब तो सेठजी मैं कहाँ जाऊँ? इसलिए इस बीवी को कभी दुःख नहीं देता। बीवी मुझे पीटे, फिर भी दुःख नहीं देता। मैं बाहर सब के साथ झगड़ा करके आऊँ, पर बीवी के साथ 'क्लियर' रखता हूँ। वाइफ को कुछ भी नहीं करना चाहिए। खुजली आए, तब बाहर झगड़ा कर आते हैं, पर घर में नहीं।''

बीवी ने सुलेमान से मिठाई लाने को कहा हो, अब सुलेमान को तनख्वाह कम मिलती हो, तो वह बेचारा मिठाई कहाँ से लाए? सुलेमान से बीवी महीने भर से कह रही हो कि 'इन सभी बच्चों को, बेचारों को बहुत इच्छा है। अब तो मिठाई ले आओ।' फिर एक दिन बीवी मन में बहुत अकुलाए तो वह कहता है, 'आज तो लेकर ही आऊँगा', उसके पास जवाब नक़द होता है, जानता है कि जवाब उधार रखूँगा तो गालियाँ देगी। तब फिर कहता है कि 'आज लाऊँगा।' ऐसा कहकर टाल देता है। अगर जवाब नहीं दे तो जाते समय बीवी किट-किट करेगी। इसलिए तुरंत पॉज़िटिव जवाब दे देता है कि 'आज ले आऊँगा, कहीं से भी ले आऊँगा।' तब बीवी समझती है कि आज लेकर आएँगे, लेकिन जब वह आता है तब खाली हाथ देखकर बीवी चिल्लाती है। सुलेमान यूँ तो समझ में बड़ा पक्का होता है, इसलिए बीवी को समझा देता है कि, 'मेरी हालत मैं ही जानता हूँ, तुम क्या समझो।' एक-दो वाक्य ऐसे कहता है कि बीवी कहेगी, 'अच्छा बाद में लाना।' पर दस-पंद्रह दिन बाद बीवी फिर से कहती है तो, 'मेरी हालत मैं जानता हूँ।' ऐसा कहता है और बीवी तो मान जाती है। वह कभी झगड़ा नहीं करता।

और कई लोग तो उसी समय कहते हैं कि 'तू मुझ पर रोब जमाती है?' अरे, स्त्री से ऐसा नहीं कहते। उसका मतलब ही इट सेल्फ कहता है, 'तू दबा हुआ है।' और माना कि आज रोब जमा रही है तो आपको शांत रहना चाहिए। जिसमें निर्बलता हो वह चिढ़ जाता है।

औरंगाबाद में एक हकीम का लड़का आया था। उसने सुना होगा कि दादा के पास कुछ अध्यात्म ज्ञान जानने योग्य है। इसलिए वह लड़का आया, पच्चीस साल का ही था। तब मैंने सत्संग की सारी बातें कीं, जगत् की। क्योंकि यह वैज्ञानिक पद्धति अच्छी है, आपके सुनने लायक है। आज तक चला, वह ज़माने के अनुसार लिखा गया है। जैसा ज़माना था, वैसा वर्णन किया हुआ है। अर्थात् ज़माना जैसे-जैसे बदलता जाता है, वैसे वर्णन बदलता जाता है। और पैग़ंबर साहब यानी क्या? खुदा का पैग़ाम यहाँ लाकर सभी को पहुँचाये उनका नाम पैग़ंबर साहब।

मैंने तो उसका मज़ाक किया उससे, मैंने पूछा कि 'अरे, शादी-वादी की है या ऐसे ही घूम रहा है?' 'शादी की है' कहता है। मैंने कहा, 'कब की? मुझे बुलाया नहीं तूने?' 'दादाजी मेरी आपसे पहचान नहीं थी वर्ना बुलाता उस दिन, शादी हुए छह महीने ही हुए हैं अभी।' मज़ाक किया थोड़ा, उसने बताया। 'नमाज़ कितनी बार पढ़ता है?' 'साहब, पाँचों बार' कहने लगा। अरे, रात को किस प्रकार नमाज़ पढ़ना अनुकूल होगा तीन बजे? 'पढ़नी ही पड़ती है, उसमें चलेगा ही नहीं, तीन बजे उठकर अदा करता हूँ। छोटी उम्र से ही करता आया हूँ। मेरे फादर हक़ीम साहब भी करते थे।' फिर मैंने पूछा, 'अब तो बीवी आई, अब कैसे करने देगी, तीन बजे?' 'बीवी ने भी मुझसे कहा है, तुम नमाज़ अदा कर लेना।' तब मैंने पूछा, 'बीवी के साथ झगड़ा नहीं होता?' 'यह क्या बोले? यह क्या बोले?' मैंने कहा, 'क्यों?' 'ओहोहो बीवी तो मुँह का पान! वह मुझे डाँटे तो चला लूँ, साहब। बीवी की वजह से तो जी रहा हूँ, बीवी मुझे बहुत सुख देती है। बहुत अच्छा-अच्छा भोजन पकाकर खिलाती है। उसे दुःख कैसे दिया जाए?' अब इतना समझे तो भी गनीमत। बीवी पर ज़ोर नहीं चलाते। हमें नहीं समझना चाहिए? बीवी का कुछ गुनाह है? 'मुँह का पान' गाली दे, फिर भी कुछ हर्ज नहीं। दूसरा कोई गाली दे तो देख लूँ।' देखो! अब इन लोगों को कितनी क़ीमत है!

दूसरों की भूल निकालने की आदत

प्रश्नकर्ता : भूल निकालें तब बुरा लगता है उसे और नहीं निकालें तब भी बुरा लगता है।

दादाश्री : नहीं, नहीं, बुरा नहीं लगता है। आप भूल नहीं निकालोगे तो वह कहेगी, 'कढ़ी खारी थी, फिर भी नहीं कहा!' तब आप कहना, 'तुम्हें पता चलेगा न, मैं क्यों कहूँ?' पर यह तो कढ़ी खारी बनी तो मुँह बिगाड़ता हैं, 'कढ़ी बहुत खारी है!' अरे! किस तरह के आदमी हो? इसे पति के रूप में कैसे रखा जाए? ऐसे पति को निकाल बाहर करना चाहिए। ऐसे कमज़ोर पति! क्या पत्नी यह नहीं समझती कि तू उसे समझाने निकला है! उसके साथ माथापच्ची करता है! फिर उसके हृदय पर चोट नहीं लगेगी क्या? मन में कहेगी, 'क्या मैं यह नहीं समझती? यह तो मुझे बाण लगा रहा है। यह कलमुँहा हर रोज़ मेरी गलतियाँ निकालता रहता है।' लोग जान-बूझकर ऐसी भूलें निकालते रहते हैं। इसीसे संसार ज़्यादा बिगड़ता जा रहा है। आपको क्या लगता है? यानी हम थोड़ा सोचें तो क्या हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : गलतियाँ निकालें तो फिर उनसे फिर से गलती नहीं होगी न?

दादाश्री : अहोहो, अर्थात् सीख देने के लिए! तब भूल निकालने में हर्ज नहीं, मैं आपसे क्या कहता हूँ कि भूलें निकालो, पर वह उसे उपकार समझे तब भूलें निकालो। वह कहे कि 'अच्छा हुआ आपने मेरी भूल बताई। मुझे तो मालूम ही नहीं।' आप उपकार मानती हो? बहन, आप इनका उपकार मानती हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब फिर उसका अर्थ ही क्या निकला? जो भूलें वह जानती हो, उन्हें बताने का अर्थ क्या है? उन्हें स्त्रियाँ कलमुँहा कहती हैं, कि 'कलमुँहा जब देखो तब बोलता रहता है।' जिस भूल को वह जानती हो, वह भूल हमें नहीं निकालनी चाहिए। अन्य कुछ भी हुआ हो, कढ़ी खारी बनी हो या फिर सब्ज़ी बिगड़ गई हो, जब वह खाएगी तब उसे

पता चलेगा या नहीं? इसलिए हमें कहने की ज़रूरत नहीं है! पर जो भूल उसे मालूम नहीं हो, वह हम बतायें तो वह उपकार मानेगी। बाक़ी, जो वह जानती हो, वह भूल दिखाना तो गुनाह है। अपने इन्डियन लोग ही निकालते हैं।

मैं तो सांताक्रुज में तीसरी मंज़िल पर घर में बैठा होऊँ तो चाय आती है। तब किसी दिन ज़रा शक्कर डालना भूल गए हों, तो पी जाता हूँ और वह भी दादा के नाम पर। भीतर दादा से कहता हूँ कि 'चाय में शक्कर डालो साहब!' तब दादा डाल देते हैं! अर्थात् बगैर शक्कर चाय आए तब पी जाते हैं बस। हमें तो कुछ परेशानी ही नहीं न! और फिर वे शक्कर लेकर आते हैं। मैंने पूछा, 'भाई, शक्कर क्यों लाया? ये चाय के कप-प्लेट ले जा!' तब बोला, 'चाय फीकी थी फिर भी आपने शक्कर नहीं माँगी!' मैंने कहा, 'मैं क्यों कहूँ? तुम्हारी समझ में आए ऐसी बात है।'

एक भाई से पूछा, 'घर में कभी पत्नी की भूल निकालते हो?' तब बोला, 'वह है ही भूलवाली, इसलिए भूल निकालनी ही पड़ती है न!' देखो, यह अक़्ल का बोरा! बेचने जाएँ तो चार आने भी नहीं आएँ और मान बैठा है कि मेरी पत्नी भूलवाली है, लो!

प्रश्नकर्ता : कई लोग अपनी भूल समझते हैं, फिर भी नहीं सुधरें, तो?

दादाश्री : वे कहने से नहीं सुधरेंगे। कहने से तो उल्टा चलते हैं बल्कि। वह तो किसी समय जब सोच रहा हो, तब आप कहना कि यह गलती कैसे सुधरेगी! आमने-सामने बातचीत करो, ऐसे फ्रेन्ड की तरह। वाइफ के साथ फ्रेन्डशिप रखनी चाहिए। नहीं रखनी चाहिए? औरों के साथ फ्रेन्डशिप रखते हो। फ्रेन्ड के साथ ऐसे क्लेश करते हो रोज़-रोज़? उसकी भूलें डायरेक्ट दिखाते होंगे? नहीं! क्योंकि फ्रेन्डशिप टिकानी है। और यह तो शादी की है, कहाँ जानेवाली है? ऐसा हमें शोभा नहीं देता। जीवन ऐसा बनाओ कि बगीचे जैसा। घर में मतभेद नहीं हों, कुछ नहीं हो, घर बगीचे जैसा लगे। घर में किसीको थोड़ी भी दख़ल नहीं होने देना। छोटे बच्चे की भी भूल, अगर वह जानता हो तो नहीं दिखा सकते। नहीं

जानता हो तभी भूल दिखा सकते हैं।

वह तो व्यर्थ पागलपन था, स्वामित्व सिद्ध करने का। अर्थात् स्वामित्व नहीं दिखाना चाहिए। स्वामित्व तो तब कहलाएगा कि जब सामनेवाला प्रतिकार नहीं करे, तब समझना कि स्वामित्व है। ये तो तुरंत प्रतिकार करते हैं।

घर में स्त्री के साथ तो हर कोई किट-किट करता है, यह वीर की निशानी नहीं। वीर तो कौन कहलाता है, जो स्त्री को अथवा संतानों को, किसीको भी तकलीफ नहीं देता। बच्चा ज़रा उल्टा बोले, पर माता-पिता बिगड़ें नहीं, तब सही कहलाएगा। बच्चा तो आखिर बच्चा है। तुम्हें क्या लगता है? न्याय क्या कहता है?

किस बात के लिए आपको टोकना पड़ेगा, जिसकी उसे समझ नहीं हो। उसे समझाना चाहिए। उसे अपनी समझ है। उसे हम कहें, तब उसका इगोइज़म घायल होता है। और फिर वह मौका ढूंढता है कि मेरी पकड़ में आने दो एक दिन। मौके की ताक में रहता है। तो फिर ऐसा करने की क्या ज़रूरत? अर्थात् वह जिन-जिन बातों में समझ सके ऐसा हो, उसके लिए टोकने की ज़रूरत नहीं होती।

ज़्यादा कड़वा हो तो आपको अकेले पी जाना है, पर स्त्रियों को कैसे पीने दें? क्योंकि आफ्टर ऑल आप महादेवजी हैं। आप महादेवजी नहीं हैं ? पुरुष महादेवजी समान होते हैं। अधिक कड़ुआ हो तो कहो, 'तू सो जा, मैं पी लूँगा!' स्त्रियाँ भी क्या संसार में सहयोग नहीं देती बेचारी? फिर उनके साथ अनबन कैसी? उसे कुछ दु:ख हो गया हो, तब आपको पश्चाताप करना चाहिए एकान्त में कि अब दु:ख नहीं दूँगा, मेरी भूल हो गई यह।

घर में किस प्रकार के दु:ख होते हैं, किस प्रकार के झगड़े होते हैं, किस प्रकार मतभेद होता है, यह सब दोनों लिखकर लाओ न, तो एक घंटे में सभी का निबटारा ला दूँ। मतभेद नासमझी की वजह से ही होते हैं, बाकी कोई कारण नहीं।

अपने घर की बात घर में रहे, ऐसे फ़ैमिली की तरह जीवन जीना चाहिए। इतना परिवर्तन लाओ तो अच्छा है। क्लेश तो होना ही नहीं चाहिए। आपको जितने डॉलर मिलें, उतने में गुज़ारा कर लेना। और बहन आपको यदि जब पैसों की सुविधा न हो, तब साड़ियों के लिए जल्दी नहीं करनी चाहिए। आपको भी सोचना चाहिए कि पति को मुश्किल में नहीं डालना चाहिए। ज़्यादा हो तो खर्च करना।

गाड़ी का गरम मूड

यह तो रात को कभी पति को घर लौटने में देरी हो जाए, किसी संयोगवश, 'हं... इतनी देर से आया जाता होगा?' तो क्या वे नहीं जानते कि देर हो गई है? उनके भीतर भी खटकता होगा कि बहुत देर हो गई, बहुत देर हो गई। उसमें फिर यह वाइफ ऐसा कहती है कि 'इतनी देर से कोई आता होगा?' बेचारा! ऐसी मीनिंगलेस बातें करनी चाहिए? तुझे समझ में आता है? अर्थात् जब वे घर देर से लौटें, उस दिन देख लेना कि मूड कैसा है? इसलिए फिर तुरंत कहना कि पहले चाय-वाय पीओ, फिर भोजन के लिए बैठो। ऐसा कहने से अच्छे मूड में आ जाता है। मूड उल्टा हो तो आप उन्हें चाय-पानी पिलाकर खुश करना। जैसे पुलिसवाला आया हो, हमारा मूड नहीं हो, फिर भी चाय-पानी नहीं कराते? यह तो अपना है, उसे खुश नहीं करना चाहिए? अपने हैं, तो खुश करना चाहिए। बहुतों को मालूम होगा कि कभी गाड़ी मूड में नहीं होती, ऐसा नहीं होता? गरम हो गई हो तब क्या उसे लाठी मारनी चाहिए? उसे मूड में लाने के लिए ठंडी करनी पड़ती है थोड़ी, रेडीयेटर फिराना, पंखा चलाना। नहीं करते?

प्रश्नकर्ता (स्त्री) : ब्रान्डी पीना कैसे बंद कराएँ?

दादाश्री : घर में तुम्हारा प्रेम देखेंगे तो सब छोड़ देंगे। प्रेम के खातिर सभी चीज़ें छोड़ने को तैयार हैं। प्रेम नज़र नहीं आता इसलिए शराब से प्रेम करता है, किसी और से प्रेम करता है। नहीं तो बीच पर घूमता रहता है। भैया, यहाँ तेरे बाप ने क्या गाड़ रखा हैं, घर पर जा न! तब कहेगा, 'घर पर तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता।'

सुधारना या सुधरना?

यह संबंध रिलेटिव है। कईं लोग क्या करते हैं कि पत्नी को सुधारने के लिए इतनी ज़िद पर आते हैं कि प्रेम की डोर टूट जाए वहाँ तक जिद पकड़ते हैं। वे समझते हैं कि इसे मुझे सुधारना ही होगा। अरे! तू सुधर न! तू सुधर एकबार। और यह तो रियल नहीं, रिलेटिव है! अलग हो जाएगी। इसलिए हमें झूठ-मूठ नाटक करके भी गाड़ी पटरी पर चढ़ा देनी है। यहाँ से पटरी पर चढ़ गई तो स्टेशन पहुँच जाएगी, सटासट। अर्थात् यह रिलेटिव है, समझा-बुझाकर निराकरण ले आना।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति नहीं सुधरती, पर व्यवहार तो सुधारना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो लोगों को आता ही नहीं। अगर कभी व्यवहार आता, अरे! आधा घंटा भी व्यवहार करना आता तो भी बहुत हो गया! व्यवहार तो समझे ही नहीं। व्यवहार यानी क्या? ऊपर-ऊपर से। व्यवहार मतलब सत्य नहीं। यह तो व्यवहार को ही सत्य मान लिया है। व्यवहार-सत्य यानी रिलेटिव सत्य। इसलिए यहाँ के नोट असली हों या जाली हों, दोनों 'वहाँ' मोक्ष के स्टेशन पर काम नहीं आएँगे। इसलिए इसे छोड़ो और अपना काम निकाल लो! व्यवहार यानी जो दिया था, उसे वापस लेना। अभी कोई कहे कि 'तुझ में अक़्ल नहीं।' तो समझना कि यह तो दिया था, वही वापस आया। यह अगर समझ लो तो वह व्यवहार कहलाएगा। आजकल व्यवहार किसी में है ही नहीं। जिसका व्यवहार व्यवहार है, उसका निश्चय निश्चय है।

कोई कहेगा कि, 'भाई, उसे सीधी करो।' अरे! उसे सीधी करने जाएगा तो तू टेढ़ा हो जाएगा। इसलिए वाइफ को सीधी करने मत जाना, जैसी है वैसी उसे 'करेक्ट' कहना। हमें उसके साथ हमेशा का लेन-देन हो तो अलग बात है, यह तो एक जन्म के बाद फिर कहाँ के कहाँ बिखर जाएँगे। दोनों का मरणकाल भिन्न, दोनों के कर्म भिन्न। कुछ लेना भी नहीं और देना भी नहीं! यहाँ से वह किसके वहाँ जाएगी किसे मालूम? हम सीधी करें और अगले जन्म में जाए दूसरे के हिस्से में!

जो खुद सीधा हो चुका हो, वही दूसरे को सुधार सकता है। प्रकृति डाँट-डपट से नहीं सुधरती, न ही वश में आती है। डाँट से तो संसार खड़ा हुआ है। डाँट-डपट से तो उसकी प्रकृति और बिगड़ेगी।

सामनेवाले को सुधारने के लिए यदि आप दयालु हो तो डाँटना मत। उसे सुधारने के लिए तो उसकी बराबरी का उसे मिल ही जाएगा।

जो हमारे रक्षण में हो, उसका भक्षण कैसे कर सकते हैं? जो खुद के आश्रय में आया उसका रक्षण करना, वही मुख्य ध्येय होना चाहिए। उसने गुनाह किया हो, फिर भी उसका रक्षण करना चाहिए। ये विदेशी सैनिक यहाँ अभी कैदी हैं, फिर भी अपने सैनिक उनकी कैसी रक्षा करते हैं! तब ये तो अपने घरवाले ही हैं न? बाहरवालों के पास म्याऊँ बन जाते हैं, वहाँ झगड़ा नहीं करते और घर पर ही सब-कुछ करते हैं।

कोमनसेन्स से 'एडजस्ट एवरीव्हेर'

किसी के साथ मतभेद होना और दीवार से टकराना दोनों समान हैं, उन दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं। दीवार से टकराता है, वह नहीं दिखने के कारण टकराता है। और जो मतभेद होता है, वह मतभेद भी नहीं दिखने के कारण होता है। आगे का उसे नज़र नहीं आता, आगे का उसे सोल्युशन नहीं मिलता, इसलिए मतभेद होता है। यह क्रोध होता है, वह भी नहीं दिखने से क्रोध होता है। ये क्रोध-मान-माया-लोभ वगैरह करते हैं, वे भी नहीं दिखने से करते हैं। तो बात को ऐसे समझनी चाहिए न! जिसे लगे उसका दोष है न, दीवार का कोई दोष है क्या? अब इस जगत् में सभी दीवारें ही हैं। दीवार से टकराने पर हम उसके साथ खरी- खोटी करने नहीं जाते कि यह मेरा सही है। ऐसे लड़ने के लिए झंझट नहीं करते न?

जो टकराते हैं न, समझो वे सब दीवारें ही हैं। फिर दरवाज़ा ढूंढना हो तो अंधेरे में भी दरवाज़ा मिलेगा। ऐसे हाथ से टटोलते-टटोलते जाएँ तो दरवाज़ा मिलता है या नहीं मिलता? और वहाँ से फिर निकल जाना। टकराना नहीं है, ऐसे नियम का पालन करना चाहिए कि 'किसी के साथ टकराना ही नहीं है।'

दो डिपार्टमेन्ट अलग

पुरुष को स्त्री के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और स्त्री को पुरुष के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्रत्येक को अपने-अपने 'डिपार्टमेन्ट' में ही रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : स्त्री का डिपार्टमेन्ट कौन-सा? किन-किन में पुरुषों को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए?

दादाश्री : ऐसा है, खाना क्या पकाना, घर कैसे चलाना, यह सब स्त्री के डिपार्टमेन्ट हैं। गेहूँ कहाँ से लाती है, कहाँ से नहीं यह जानने की हमें क्या ज़रूरत? वे यदि आपसे कहें कि गेहूँ लाने में तकलीफ़ होती है तो वह अलग बात है। लेकिन वह आपसे कहे नहीं, राशन नहीं दिखाती हों, तो हमें उसके 'डिपार्टमेन्ट' में हाथ डालने की ज़रूरत ही क्या है? 'आज खीर बनाना, आज जलेबी बनाना।' ऐसा भी कहने की क्या ज़रूरत? टाइम आएगा तब वह रखेगी। उनका 'डिपार्टमेन्ट', उनके लिए स्वतंत्र! कभी बहुत इच्छा हो जाए तो कहना, 'आज लड्डू बनाना।' कहने के लिए मना नहीं करता, पर बिना वजह दूसरी इधर-उधर का हो-हल्ला करो कि 'कढ़ी खारी हो गई, खारी हो गई', यह सब नासमझी की बातें हैं।

सच्चा पुरुष तो घर के मामले में हाथ ही नहीं डालता, उसे पुरुष कहते हैं! वर्ना स्त्री जैसा होता है। कुछ मर्द तो घर में जाकर मसाले के डिब्बे देखते हैं कि, 'ये दो महीने पहले लाए थे, इतनी देर में खत्म हो गए।' अरे, ऐसा सब देखता है? ऐसे कैसे निपटारा होगा ? वह तो जिसका 'डिपार्टमेन्ट' है, क्या उसे चिंता नहीं होगी? क्योंकि चीज़ें तो इस्तेमाल होती रहती हैं और नई ली भी जाती हैं। पर यह बिना बात ही ज़्यादा अक़्लमंद बनते जाता है। उसके रसोई डिपार्टमेन्ट में हाथ नहीं डालना चाहिए।

हमें भी शुरू में तीस साल तक थोड़ी परेशानी हुई थी। फिर चुन-चुनकर सब निकाल फेंका और डिवीज़न कर दिया कि रसोई-खाता आपका और कमाई-खाता हमारा, कमाना है हमें। आपके खाते में हमें हाथ नहीं डालना है। हमारे खाते में आपको हाथ नहीं डालना है। साग-सब्जी आपको लाने हैं।

पर हमारे घर का रिवाज आपने देखा हो तो बहुत सुंदर लगेगा। जब तक हीराबा का शरीर ठीक था, तब तक बाहर मोहल्ले के नुक्कड़ पर सब्जीमंडी थी, वहाँ खुद सब्जी लेने जातीं। तब हम बैठे हों, तो हीराबा मुझसे पूछतीं, 'क्या सब्जी लाऊँ?' तब मैं कहता, 'आपको जो ठीक लगे, वह लाना।' फिर वे ले आतीं। पर ऐसे ही रोज़ चलता रहे तो क्या हो? इसलिए पाँच-सात दिन पूछना बंद कर दिया। फिर एक दिन मैंने कहा कि 'करेले क्यों लाईं?' तब वे कहने लगीं, 'मैं जब पूछती हूँ तब कहते हो, आपको जो ठीक लगे वह ले आना और आज भूल निकाल रहे हो?' तब मैंने कहा, ''नहीं, हमें ऐसा रिवाज रखना है, आप मुझे पूछोगी, 'क्या सब्जी लाऊँ?' तब मैं कहूँगा, 'आपको जो ठीक लगे वह', यह अपना रिवाज मत छोड़ना।'' यह परंपरा उन्होंने अंत तक निभाई। इसमें देखनेवाले को भी शोभनीय लगे कि वाह! इस घर का रिवाज! अर्थात् हमारा व्यवहार बाहर अच्छा दिखना चाहिए। एक पक्षीय नहीं होना चाहिए। महावीर भगवान कैसे पक्के थे! व्यवहार और निश्चय दोनों अलग। एक पक्षीय नहीं। देखते नहीं हैं व्यवहार को? लोग देखते भी है न रोज़ ही? 'रोज़ाना आपसे पूछती हैं?' मैंने कहा, 'हाँ, रोज़ाना पूछती हैं।' 'तो थक नहीं जातीं?' कहते हैं। मैंने कहा, 'क्यों थकेंगी भला? क्या मंज़िलें चढ़नी हैं या पहाड़ चढ़ने हैं?' आप दोनों का व्यवहार ऐसा करो कि लोग देखें।

प्रश्नकर्ता : स्त्री को पुरुष की किन बातों में हाथ नहीं डालना चाहिए?

दादाश्री : पुरुष की किसी भी बात में दख़ल नहीं करनी चाहिए। 'दुकान में कितना माल आया? कितना गया? आज देर से क्यों आए?' फिर उनको कहना पड़े कि 'आज नौ बज़े की गाड़ी चूक गया।' तब पत्नी कहेगी कि, 'ऐसे कैसे घूमते हो कि गाड़ी छूट जाती है?' फिर मन में चिढ़ती है। उसे भी मन में होता है कि अगर भगवान भी ऐसा पूछता, तो उसे मारता। पर यहाँ क्या करें अब? बिना वजह दख़ल देते हैं। अच्छे बासमती चावल बनाते हैं और कंकड़ डालकर खाते हैं। उसमें क्या स्वाद आएगा? स्त्री-पुरुष को परस्पर हेल्प करनी चाहिए। पति को चिंता रहती हो तो पत्नी को ऐसे बोलना चाहिए कि उसे चिंता नहीं हो, और पति

को भी, पत्नी को परेशानी न हो, ऐसा ध्यान रखना चाहिए। पति को भी समझना चाहिए कि पत्नी को घर पर बच्चे कितने परेशान करते होंगे? घर में कुछ टूट-फूट जाए तो पुरुष को शोर नहीं मचाना चाहिए, पर ये तो शोर मचाते हैं कि 'पिछले साल अच्छे से अच्छे दर्जन कप-रकाबी लाया था, वे सारे के सारे क्यों फोड़ डाले? सब खत्म कर दिए।' इससे पत्नी को मन में होता है कि 'मैंने तोड़ डाले? मुझे क्या वे खाने थे? टूट गए सो टूट गए उसमें मैं क्या करूँ?' 'मी काय करूँ?' कहेगी। अब वहाँ लड़ाई, कुछ लेना भी नहीं, कुछ देना भी नहीं। जहाँ झगड़ने की कोई वजह नहीं वहाँ भी लड़ने लगे!

डिविज़न तो मैंने पहले से, छोटा था तभी से कर दिए थे कि, यह रसोई खाता उसका और धंधा खाता मेरा। बचपन से मुझसे घर की स्त्री धंधे का हिसाब माँगे, तो मेरा दिमाग़ हट जाता। क्योंकि मै कहता, तुम्हारी लाइन नहीं। तुम विदाउट एनी कनेक्शन पूछ रही हो, कनेक्शन समेत होना चाहिए। उन्होंने पूछा 'इस साल कितना कमाए?' मैंने कहा, 'ऐसा आपको नहीं पूछना चाहिए। यह हमारा पर्सनल मेटर हुआ। आप ऐसा पूछती हो तो कल सुबह अगर मैं किसीको पाँच सौ रुपये देकर आया होऊँ, तो आप मेरा तेल निकाल लोगी।' किसीको पैसे दे आया तब कहोगी, 'ऐसे लोगों को पैसे बाँटते फिरोगे तो पैसे खत्म हो जाएँगे।' ऐसे तुम मेरा तेल निकालोगी, इसलिए पर्सनल मेटर में तुम्हें हस्तक्षेप नहीं करना है।

शंका जलाए सोने की लंका

घर में ज़्यादातर तकरारें आजकल शंका की वजह से होती हैं। यह कैसा है कि शंका की वजह से स्पंदन उठते हैं और इन स्पंदनों से लपटें निकलती हैं और अगर नि:शंक हो जाएँ न तो लपटें अपने आप ही शांत हो जाएँगी। पति-पत्नी दोनों शंकाशील होंगे, तो लपटें कैसे शांत होंगी? एक नि:शंक हो, तभी छुटकारा हो सकता है। माँ-बापों की तकरार से बच्चों के संस्कार बिगड़ते हैं। बच्चों के संस्कार नहीं बिगड़ें, इसलिए दोनों को समझकर निबटारा लाना चाहिए। यह शंका निकाले कौन? अपना यह 'ज्ञान' तो संपूर्ण नि:शंक बनाए ऐसा है!

एक पति को अपनी वाइफ पर शंका हुई। वह बंद होगी? नहीं। वह लाइफ टाइम शंका कहलाती है। काम हो गया न, पुण्यशाली (!) पुण्यशाली मनुष्य को होती है न! इसी तरह वाइफ को भी पति पर शंका हो जाए, वह भी लाइफ टाइम नहीं जाती।

प्रश्नकर्ता : नहीं करनी हो फिर भी होती हैं, वह क्या है?

दादाश्री : अपनापन, स्वामित्व। मेरा पति है! पति भले ही हो, पति होने में हर्ज नहीं। 'मेरा' कहने में हर्ज नहीं है, ममता नहीं रखनी चाहिए। 'मेरा पति' ऐसा बोलना, लेकिन ममता मत रखना।

इस दुनिया में दो चीज़ें रखनी चाहिए। ऊपर-ऊपर से विश्वास खोजना और ऊपर-ऊपर से शंका करना। गहराई में मत उतरना। और अंत में तो, विश्वास खोजनेवाला मेड हो जाता है, मेन्टल हॉस्पिटल में लोग धकेल देंगे। इस पत्नी से एक दिन कहें, 'इसका क्या प्रमाण है कि तू शुद्ध है?' तब वाइफ क्या कहेगी, 'जंगली है मुआ।'

ये लड़कियाँ बाहर जाती हों, पढ़ने जाती हों तब भी ऐसी शंका! 'वाइफ' पर भी शंका! ऐसा सब दग़ा! घर में भी दग़ा ही है न, इस समय! इस कलियुग में खुद के घर में ही दग़ा होता है। कलियुग अर्थात् दग़े का काल। कपट और दग़ा, कपट और दग़ा, कपट और दग़ा! उसमें सुख के लिए क्या करते हैं? वह भी बिना समझे, मूर्छा में! निर्मल बुद्धिवाले के यहाँ कपट और दग़ा नहीं होते। यह तो अभी 'फूलिश'(मूर्ख) मनुष्य के यहाँ दग़ा और कपट होते हैं। कलियुग में 'फूलिश' ही जमा हुए हैं न!

लोगों ने कहा हो कि यह नालायक आदमी है, फिर भी आप उसे लायक कहना। क्योंकि नालायक नहीं भी हो और उसे नालायक कहोगे तो भारी गुनाह होगा। सती हो उसे यदि 'वैश्या' कह दिया तो भयंकर गुनाह है! उसके लिए कितने ही जन्मों तक भुगतते रहना पड़ेगा। इसलिए किसी के भी चारित्र के संबंध में बोलना मत। क्योंकि, यदि वह गलत निकला तो? लोगों के कहने पर आप भी कहने लगो, तो उसमें आपकी क्या क़ीमत रही? हम तो ऐसा कभी भी किसी के बारे में बोलते नहीं, और किसीको

कहा भी नहीं, मैं तो हाथ ही नहीं डालूँ न! वह ज़िम्मेदारी कौन ले? किसी के चरित्र के बारे शंका नहीं करनी चाहिए। उसमें भारी जोखिम है। शंका तो हम कभी भी करते नहीं। हम क्यों जोखिम उठाएँ?

एक आदमी को उसकी वाइफ पर शंका होती थी। उससे मैंने पूछा कि शंका किसलिए कारण होती है? तूने देखा, इसलिए शंका होती है? तूने नहीं देखा था, तब क्या ऐसा नहीं हो रहा था? लोग तो जो पकड़ा जाए उसे 'चोर' कहते हैं। अरे, उसे किसलिए चोर कहता है? जो पकड़े नहीं गए वे सब भीतर से चोर ही हैं। पर ये तो, जो पकड़ा गया उसे 'चोर' कहते हैं, अरे! उसे क्यों चोर कहता है? वह तो ढीला है, कम चोरी की है इसलिए पकड़ा गया। अधिक चोरी करनेवाले पकड़ में आते होंगे?

अत: जिसे पत्नी के चरित्र संबंधी शांति चाहिए, तो उसे बिल्कुल काली बदसूरत बीवी लानी चाहिए ताकि उसका कोई ग्राहक ही न बने, कोई उसे रखे ही नहीं। और वही ऐसा कहे कि, 'मुझे कोई सँभालनेवाला नहीं हैं, ये एक पति मिले हैं, वे ही सँभालते हैं।' अत: वह आपके प्रति सिन्सियर रहेगी, बहुत सिन्सियर रहेगी। बाकी, यदि सुंदर होगी तो लोग भोगेंगे ही। सुंदर हो, तो लोगों की दृष्टि बिगड़ेगी ही! कोई सुंदर पत्नी लाए तब हमें यही विचार आता है कि क्या दशा होगी! काली दागवाली होगी, तभी सेफसाइड रहेगी।

पत्नी बहुत सुंदर हो, तब वह भगवान को भूलेगा न! और पति रूपवान हो तो वह स्त्री भी भगवान भूल जाएगी! यानी कि हिसाबवाला सब अच्छा। हमारे बुज़ुर्ग तो ऐसा कहते थे कि 'खेत रखना समतल और पत्नी रखना कोबाड़?'

ये लोग तो कैसे हैं कि 'जहाँ होटल देखें आए वहाँ खा लेते हैं' अत: शंका करने जैसा जगत् नहीं है। शंका ही दु:खदायी है।

और ये लोग तो, वाइफ ज़रा देर से आए, तब भी शंका करते रहते हैं। शंका करने जैसा नहीं है। ऋणानुबंध से बाहर कुछ भी होनेवाला नहीं

है। वह घर आए तब उसे समझाना, लेकिन शंका मत करना। शंका तो बल्कि अधिक बढ़ावा देती है। हाँ सावधान ज़रूर करना, पर किसी प्रकार की शंका मत करना। शंका करनेवाला मोक्ष खो देता है। इसलिए आपको अगर छूटना हो, मोक्ष में जाना हो तो आपको शंका नहीं करनी चाहिए। कोई दूसरा आदमी आपकी 'वाइफ' के गले में हाथ डाल कर घूम रहा हो और वह आपके देखने में आया, तब क्या ज़हर खा लोगे?

किसी भी बात में शंका होने लगे तो वे शंकाएँ मत रखना, आप जागृत रहना मगर सामनेवाले पर शंका नहीं रखनी चाहिए। शंका हमें मार डालती है। उसका तो जो होना होगा वह होगा, पर हमें तो वह शंका ही मार डालेगी। क्योंकि शंका तो, यदि मनुष्य मर जाए, तब तक भी उसे छोड़ती नहीं। शंका करे तो मनुष्य का प्रभाव बढ़ता है क्या? मनुष्य मुर्दे की तरह जी रहे हों, उसके जैसा हो जाता है।

पतिपने के गुनाह

प्रश्नकर्ता : कुछ लोग स्त्री से ऊबकर घर से भाग जाते हैं, वह कैसा है?

दादाश्री : नहीं, भगोड़े क्यों बनें? आप परमात्मा है। आपको भागने की क्या आवश्यकता है? आपको उसका 'समभाव से *निकाल* (निपटारा)' कर देना है!

प्रश्नकर्ता : निकाल करना हो तो किस प्रकार करें? मन में भाव करें कि यह पूर्व जन्म का आया है?

दादाश्री : उतने से निकाल नहीं होगा। निकाल अर्थात् सामनेवाले के साथ फोन जोड़ना पड़ेगा, उसकी आत्मा को खबर देनी पड़ेगी। उस आत्मा के सामने ऐसा क़बूल (एक्सेप्ट) करना पड़ेगा कि हमारी भूल हुई है अर्थात् बड़ा प्रतिक्रमण करना होगा।

प्रश्नकर्ता : कोई हमारा अपमान करे, फिर भी हमें उसका प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : अपमान करे तभी प्रतिक्रमण करना है, हमें मान दे तब नहीं करना है। प्रतिक्रमण करने से उस पर द्वेषभाव तो होगा ही नहीं, ऊपर से उस पर अच्छा असर पड़ेगा। हमारे प्रति द्वेषभाव नहीं होगा, वह तो समझो पहला स्टेप, पर बाद में उसे खबर भी पहुँचती है।

प्रश्नकर्ता : उसके आत्मा को पहुँचती है क्या?

दादाश्री : हाँ, ज़रूर पहुँचती है। फिर वह आत्मा उसके पुद्गल को भी धकेलती है कि 'भाई फोन आया तेरा।' अपना यह प्रतिक्रमण है, वो अतिक्रमण के ऊपर है, क्रमण के ऊपर नहीं।

प्रश्नकर्ता : बहुत प्रतिक्रमण करने होंगे?

दादाश्री : जितनी स्पीड से हमें मकान बनाना है, उतने मज़दूर हमें बढ़ाने होंगे। ऐसा है न, कि बाहर के लोगों के प्रति प्रतिक्रमण नहीं होंगे तो चलेगा, पर अपने इर्द-गिर्द के और नज़दीकी घरवाले हैं, उनके प्रतिक्रमण अधिक करने होंगे। घरवालों के लिए मन में भाव रखना कि साथ में जन्मे हैं, साथ रहते हैं, वे कभी इस मोक्षमार्ग में आएँ।

एक भाई मेरे पास आए थे। वे मुझसे बोले, 'दादा, मैंने शादी तो की है, पर मुझे मेरी बीवी पसंद नहीं है।' मैंने कहा, 'क्यों, पसंद नहीं आने का क्या कारण है?' तब कहता है, 'वह थोड़ी लंगड़ी हैं, लंगड़ाती है।' 'तब तेरी बीवी को तू पसंद है या नहीं?' तो बोला, 'दादा, मैं तो पसंद आऊँ ऐसा ही हूँ न! खूबसूरत हूँ, पढ़ा लिखा हूँ, कमाता हूँ और अपाहिज नहीं हूँ।' तब उसमें भूल तेरी ही है। तेरी ऐसी कैसी भूल हुई कि तुझे लंगड़ी मिली और उसने कितने अच्छे पुण्य किये थे कि तू इतना अच्छा उसे मिला? अरे, यह तो अपना किया ही अपने सामने आता है, उसमें सामनेवाले का दोष देखता है? देख तेरी भूल भुगत ले और फिर से नयी भूल मत करना। वह भाई समझ गया और उसकी 'लाइफ' फ्रेक्चर होते-होते रह गई, सुधर गई।

दादाई दृष्टि से चलो, पतियों...

प्रश्नकर्ता : वाइफ ऐसा कहे कि आपके पेरेन्ट्स को अपने साथ

नहीं रखना है या नहीं बुलाना है, तो क्या करें?

दादाश्री : तब समझाकर काम लेना। डेमोक्रेटिक पद्धति से काम लेना। उसके माँ-बाप को बुलाकर उनकी बहुत सेवा करके दिखाना...

प्रश्नकर्ता : माता-पिता वृद्ध हों, बड़ी उम्र के बुजुर्ग हों, एक ओर माता-पिता हैं और दूसरी ओर वाइफ है, तब उन दोनों में से पहले किसकी बात सुनें?

दादाश्री : वाइफ के साथ ऐसा अच्छा संबंध कर देना कि वाइफ आपको ऐसा कहे कि 'आपने माता-पिता का ख्याल रखो न! ऐसा क्यों करते हो?' वाइफ के सम्मुख माता-पिता के बारे में थोड़ा उल्टा बोलना। लोग तो क्या कहते हैं? मेरी माँ जैसी कोई माँ नहीं है। तुम ऐसा मत करना। फिर जब वह उल्टी चले तब आप कहना कि माँ का स्वभाव आजकल ऐसा ही हो गया है। इन्डियन माइन्ड को उल्टा चलने की आदत होती है, इन्डियन माइन्ड है न!

तू जानता है कि लोग वाइफ को गुरु बनाएँ, ऐसे हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, जानता हूँ।

दादाश्री : उसे गुरु बनाने जैसा नहीं है, वर्ना माता-पिता और सारा कुटुंब परेशानी में पड़ जाएगा और गुरु बनाने पर खुद भी परेशानी में पड़ जाएगा। उसे भी खिलौने की तरह नाचना पड़ता है! पर मेरे पास आनेवाले के साथ ऐसा नहीं होता। मेरे पास सब-कुछ ऑलराइट! हिंसक भाव ही उड़ जाता है न! हिंसा करने का विचार ही नहीं आता। कैसे सुख पहुँचाऊँ यही विचार आता है। नई पत्नी के साथ भी ठीक रखना पड़ता है। सभीकुछ नया-नया हो तो ठीक करना पड़ता है। पहले दिन ही पत्नी रूठे और आप भी रूठ जाओ तो कब ठीक होगा? यदि रूठ गई हो तो आप धीरे से कहना, 'घबराना मत, हम दोनों एक ही हैं।' जैसे-तैसे पटा-पटाकर काम लेना। वह भी रूठे और आप भी रूठो तो बचा क्या फिर? काम लेना आना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : ये लेडीज़ काम करके थक बहुत जाती हैं। काम बतायें

तो बहाने बहुत बनाती हैं कि मैं थक गई हूँ, सिर दुःख रहा है, कमर दुःख रही है।

दादाश्री : ऐसा है न, तो उसे सुबह से कह देना चाहिए कि 'देख तुझ से काम नहीं होगा, तू थक गई है।' तब उसे जोश आ जाएगा कि 'नहीं तुम बैठे रहो चुपचाप, मैं कर लूँगी।' अर्थात् आपको कला से काम लेना आना चाहिए। अरे! सब्जी काटने में भी कला नहीं हो तो यहाँ खून निकल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम जब गाड़ी में जाते हैं तब वह मुझे कहती रहती है, गाड़ी कहाँ मोड़नी है, कब ब्रेक लगाना, ऐसा गाड़ी में मुझे कहती रहती है, यानी टोकती है गाड़ी में, 'ऐसे चलाओ, ऐसे चलाओ!'

दादाश्री : तो उसके हाथ में दे देना, उसे सौंप देना गाड़ी, गाड़ी उसे सौंप देना। झंझट ही नहीं। समझदार आदमी! किट-किट करे, तब उसे कहना, 'ले, तू चला!'

प्रश्नकर्ता : तब वह कहेगी, 'मेरी हिम्मत नहीं है।'

दादाश्री : क्यों? तब कहना, 'उसमें तुम्हें क्या हर्ज है? तब क्या तुम्हें ऊपर लटका रखा है कि टोकती रहती हो?' गाड़ी उसे सौंप देना। ड्राईवर हो तो पता चले टोकने पर, यह तो घर का आदमी है इसलिए टोकती रहती है।

प्रश्नकर्ता : पत्नी का पक्ष न लें, तो घर में झगड़े होंगे न।

दादाश्री : पत्नी का ही पक्ष लेना। पत्नी का पक्ष लेना, कुछ हर्ज नहीं। क्योंकि पत्नी का पक्ष लोगे तो ही रात को सो सकोगे चैन से वर्ना सोओगे कैसे? वहाँ काज़ी मत बनना।

प्रश्नकर्ता : पड़ोसी का पक्ष तो लेना ही नहीं चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, आपको हमेशा वादी का ही वकील बनना है, प्रतिवादी का नहीं बनना है। हम जिस घर का खाते हो उसीका.... वकालत सामनेवाले के घर की करें और खाएँ इस घर का! इसलिए सामनेवाले

का न्याय मत तोलना उस घड़ी। वाइफ अन्याय में हो तो भी आपको उसके अनुसार ही चलना है। वहाँ न्याय करने जैसा नहीं है कि 'तुझमें अक़्ल नहीं है इसलिए यह...' क्योंकि कल भोजन वहीं करना है, तू अपनी ही कंपनी में वकालत करता है! तो प्रतिवादी का वकील बन गया।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान हुआ कैसे कहलाएगा? सामनेवाला का समाधान हो, लेकिन उसमें उसका अहित हो तो?

दादाश्री : वह आपको नहीं देखना है। सामनेवाले का अहित हो वह तो उसे ही देखना है। आपको सामनेवाले का हिताहित देखना है पर आपमें, हित हित देखनेवाले में शक्ति क्या है? आप अपना ही हित नहीं देख सकते, तो दूसरों का क्या हित देख सकोगे? सब अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार हित देखते हैं, उतना हित देखना चाहिए। पर उसके हित के लिए टकराव खड़ा हो, ऐसा नहीं करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान करने का हम प्रयत्न करें पर परिणाम विपरीत आनेवाला है, ऐसा हमें पता हो, तब क्या करें?

दादाश्री : परिणाम कुछ भी हो मगर हमें तो, 'सामनेवाले का समाधान करना है', इतना तय रखना है। फिर *निकाल* हो या न हो, वह पहले से नहीं देखना है और *निकाल* होगा! आज नहीं तो कल होगा, परसों होगा। गाढ़ ऋणानुबंध हो तो दो साल, तीन साल या पाँच साल में भी होगा। वाइफ के साथ ऋणानुबंध बहुत *चीकणे* (गाढ़) होते हैं, संतानों के *चीकणे* होते हैं, माता-पिता के *चीकणे* होते हैं। वहाँ पर थोड़ा ज़्यादा समय लगेगा। ये आपके साथ के साथ ही होते हैं, वहाँ निकाल धीरे-धीरे होता है। लेकिन यदि आपने निश्चित किया है कि 'हमें समभाव से निकाल करना है', इसलिए एक न एक दिन उसका निकाल होकर रहेगा, उसका अंत आएगा।

'मेरी' की लपेटें खुलेंगीं ऐसे

विवाह के समय मंडप में बैठते हैं न! मंडप में बैठते हैं, तब ऐसे देखते हैं। हाँ, यह मेरी वाइफ, यानी पहली लपेट लगाई। 'मेरी वाइफ, मेरी वाइफ, मेरी वाइफ, मेरी वाइफ...' शादी करने बैठा तभी से लपेट लगाता

रहता है, वह। अभी तक लपेट लगा ही रहा है, तो न जाने कितनी ही लपेटें लग गई होंगी अब तक? अब किस प्रकार वे लपेटें खुलेंगी? ममता की लपेटें लगी हैं!

अब 'नहीं है मेरी,' 'नहीं है मेरी' ऐसे अजपा जाप करो। 'यह स्त्री मेरी नहीं हैं, नहीं हैं मेरी', इससे लपेटें खुल जाएँगी। पचास हज़ार बार 'मेरी-मेरी' कहकर लपेटें लगाई हों, वे 'नहीं है मेरी' की पचास हज़ार लपेटें लगाने पर छूटेंगी! यह क्या भूत है बगैर काम का! एक आदमी की पत्नी के मृत्यु को दस साल हो गए थे, फिर भी वह उसे भूल नहीं पाया था और रोता रहता था। यह क्या भूत लिपटा है? मैंने उसे 'नहीं है मेरी,' 'नहीं है मेरी' बोलने को कहा। तो उसने क्या किया? तीन दिन तक 'नहीं है मेरी, नहीं है मेरी' बोलता ही रहा और रटता रहा। बाद में उसका रोना बंद हो गया! ये सभी लपेटें ही हैं और उसीसे यह फज़ीहत हुई है। यानी यह सब कल्पित है। आपको समझ में आई मेरी बात? अब ऐसा सरल रास्ता कौन दिखाएगा?

सारा दिन काम करते-करते पति का प्रतिक्रमण करती रहना। एक दिन में छः महीनों का बैर कट जाएगा। और आधा दिन होवे तो समझो न, तीन महीने का खत्म हो जाता है। शादी से पहले पति के प्रति ममता थी? नहीं। तब ममता कब से बंधी? शादी के समय मंडप में आमने सामने बैठे, इसलिए तूने तय किया कि 'ये मेरे पति आए। थोड़े मोटे हैं और साँवले हैं।' फिर उसने भी तय किया कि 'यह मेरी पत्नी आई।' तब से 'मेरी-मेरा' की जो लपेटें लगीं, वे लपेटें लगती ही रही हैं। वह पंद्रह साल की फिल्म है, उसे तुम 'नहीं है मेरा, नहीं हैं मेरा' करेगी, तब वे लपेटें खुलेंगी और ममता छूटेगी। यह तो, शादी हुई तबसे अभिप्राय उत्पन्न हुए, प्रिज्युडिस (पूर्वाग्रह) उत्पन्न हुआ कि 'ये ऐसे हैं, वैसे हैं।' उससे पहले कुछ था? अब तो हमें मन में निश्चय करना है कि 'जो है, सो ये ही हैं' और हम खुद पसंद करके लाए हैं। अब क्या पति बदल सकते हैं?

परमात्म प्रेम की पहचान

इस संसार में अगर कोई पूछे कि, 'इस स्त्री का प्रेम क्या प्रेम नहीं

है?' तब मैं समझाऊँ कि जो प्रेम बढ़े, वह सच्चा है ही नहीं। आप हीरे के टॉप्स लाकर दो, उस दिन प्रेम बहुत बढ़ जाता है और यदि नहीं लाए तो प्रेम घट जाता है, यह प्रेम नहीं है।

प्रश्नकर्ता : सच्चा प्रेम बढ़ता-घटता नहीं, तो उसका स्वरूप कैसा होता है?

दादाश्री : वह बढ़ता-घटता नहीं। जब देखो तब प्रेम वैसे का वैसा ही दिखता है। यह तो आप काम कर दो, तब तक उसका आपके प्रति प्रेम रहता है और काम नहीं करे तो प्रेम टूट जाता है, उसे प्रेम कहेंगे ही कैसे? अर्थात् जहाँ स्वार्थ नहीं होता वहाँ पर शुद्ध प्रेम होता है। स्वार्थ कब नहीं होता? मेरा-तेरा नहीं होता, तब स्वार्थ नहीं होता। जब 'ज्ञान' होता है, तब मेरा-तेरा नहीं होता। 'ज्ञान' के बगैर तो मेरा-तेरा होता ही है न?

ये तो सभी 'रोंग बिलीफ' हैं। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह रोंग बिलीफ है। फिर घर जाने पर हम पूछें कि 'यह कौन है?' तब वह कहता है 'नहीं पहचाने? इस औरत का मैं स्वामी हूँ।' ओहोहो! बड़े स्वामी आए! मानो स्वामी का स्वामी ही न हो, ऐसी बातें करता है! स्वामी का स्वामी नहीं होता? तब फिर ऊपरवाले स्वामी की स्वामिनी आप हुए और आपकी स्वामीनी यह हुई। इस धाँधल में क्यो पड़ें? स्वामी ही क्यों बनें? हमारे 'कम्पेनियन' हैं, कहो तो क्या हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : दादा ने बहुत 'मॉडर्न' भाषा का प्रयोग किया।

दादाश्री : तब क्या? टसल कम हो जाए न! हाँ, एक रूम में दो 'कम्पेनियन' रहते हों, तब एक व्यक्ति चाय बनाए और दूसरा व्यक्ति पीए और दूसरा उसके लिए काम कर दे। ऐसा करके 'कम्पेनियनशिप' चलती रहें।

प्रश्नकर्ता : 'कम्पेनियन' में आसक्ति होती है या नहीं?

दादाश्री : उनमें आसक्ति होती है, पर वह आसक्ति अग्नि जैसी नहीं होती। ये तो शब्द ही ऐसी गाढ़ आसक्तिवाले हैं। 'स्वामित्व और स्वामिनी' इन शब्दों में ही इतनी गाढ़ आसक्ति भरी है न, और यदि 'कम्पेनियन' कहें। तो आसक्ति कम हो जाती है।

एक आदमी की वाइफ २० साल पहले मर गई थीं। तो एक भाई ने मुझसे कहा कि, 'इस चाचा को रुलाऊँ?' मैंने पूछा, 'कैसे रुलाओगे?' इस उम्र में तो नहीं राएँगे। तब वह कहता है, 'देखो, वे कितने सेन्सिटिव हैं!' फिर वे बोले, 'क्यों चाचा, चाची की तो बात ही मत पूछो, क्या उनका स्वभाव था!' वह ऐसे कह रहा था कि चाचा सचमुच रो पड़े! कैसे हैं ये घनचक्कर, साठ साल में भी अभी तक पत्नी के लिए रोना आता है! ये तो किस तरह के घनचक्कर हैं? ये लोग तो वहाँ सिनेमा में भी रोते हैं न? उसमें कोई मर जाए, तब देखनेवाले भी रोने लगते हैं!

प्रश्नकर्ता : तो वह आसक्ति छूटती क्यों नहीं?

दादाश्री : वह तो नहीं छूटती, क्योंकि 'मेरी-मेरी' कहते रहे, वह अब 'नहीं हैं मेरी, नहीं हैं मेरी' के जाप करेंगे, तो बंद हो जाएगा। वह तो जो-जो लपेटें लगी होंगी, उन्हें छुड़वाना ही पड़ेगा न! अर्थात् यह तो केवल आसक्ति है। चेतन जैसी चीज़ ही नहीं है। ये तो सभी चाबी भरे हुए पुतले हैं।

और जहाँ आसक्ति होती है, वहाँ पर आक्षेप आए बिना रहते ही नहीं। वह आसक्ति का स्वभाव है। आसक्ति हो तो आक्षेप लगते ही रहते हैं कि 'तुम ऐसे हो और तुम वैसे हो! तू ऐसी और तू वैसी!' ऐसा नहीं बोलते, क्यों? तुम्हारे गाँव में नहीं बोलते? या बोलते हैं? ऐसा जो बोलते हैं, वह आसक्ति के कारण है।

ये लड़कियाँ पति पसंद करती हैं, ऐसे देख-दाख कर पसंद करती हैं, बाद में क्या झगड़ती नहीं होंगी? झगड़ती हैं क्या? तो उसे प्रेम कह ही नहीं सकते न! प्रेम तो हमेशा के लिए होता है। जब देखो, तब वही प्रेम। वैसा ही दिखे, वह प्रेम कहलाता है और वहाँ आश्वासन ले सकते हैं। यह तो आपको प्रेम रहता हो और एक दिन वह रूठकर बैठी हो, तब 'भाड़ में जाए', यह कैसा तुम्हारा प्रेम! डाल गटर में! मुँह फुलाकर घूमे, ऐसे प्रेम का क्या करना है? आपको कैसा लगता है?

जहाँ बहुत प्रेम होता है, वहीं पर अरूचि होती है, यह मनुष्य स्वभाव है।

ये लोग तो, सिनेमा जाते समय आसक्ति की ही धुन में और लौटते समय 'बेअक़्ल है' कहता है। तब वह कहती है कि 'तुम्हारे में कहाँ ढंग है?!' ऐसे बातें करते करते घर आते हैं। यह अक़्ल ढूँढे, तब वह ढंग देखती है!

और प्रेम से सुधरता है। यह सब सुधारना हो, तो प्रेम से सुधरता है। इन सभी को मैं सुधारता हूँ न, वह प्रेम से सुधारता हूँ। हम प्रेम से ही कहते हैं, इसलिए बात बिगड़ती नहीं। और ज़रा भी द्वेष से कहें तो वह बात बिगड़ जाएगी। दूध में दही नहीं डाला हो और यों ही ज़रा हवा लग गई, तो फिर उस दूध का दही बन जाता है।

प्रश्नकर्ता : इसमें प्रेम और आसक्ति का भेद ज़रा समझाइये।

दादाश्री : जो विकृत प्रेम है, उसीका नाम आसक्ति। इस संसार में हम जिसे प्रेम कहते हैं, वह विकृत प्रेम कहलाता है और उसे आसक्ति ही कहा जाएगा।

यह तो सूई और चुंबक में जैसी आसक्ति है, वैसी यह आसक्ति है। उसमें प्रेम जैसी वस्तु ही नहीं है। प्रेम होता ही नहीं न किसी जगह। यह तो सूई और चुंबक के आकर्षण को लेकर आपको ऐसा लगता है कि मुझे प्रेम है, इसलिए मैं खिंच रहा हूँ। लेकिन वह प्रेम जैसी वस्तु ही नहीं है। प्रेम तो, ज्ञानी का 'प्रेम', वह प्रेम कहलाता है।

इस दुनिया में शुद्ध प्रेम, वही परमात्मा है। उसके सिवा अन्य कोई परमात्मा दुनिया में कोई हुआ नहीं है और होगा भी नहीं। और वहाँ दिल को ठंडक होती है और तब दिलावरी काम होते हैं। वर्ना दिलावरी काम नहीं हो सकते। दो प्रकार से दिल को ठंडक होती है। अधोगति में जाना हो, तब किसी स्त्री में दिल लगाना और उर्ध्वगति में जाना हो, तब ज्ञानीपुरुष में दिल लगाना। और वह तो तुम्हें मोक्ष में ले जाएगा। दोनों जगह दिल की ज़रूरत पड़ेगी, तब दिलावरी प्राप्त होती है।

अर्थात् जिस प्रेम में क्रोध-मान-माया-लोभ कुछ भी नहीं, स्त्री नहीं, पुरुष नहीं जो प्रेम समान, एक जैसा रहता है, ऐसा शुद्ध प्रेम देखे, तब मनुष्य के दिल में ठंडक होती है।

मैं प्रेम स्वरूप हो चुका हूँ। उस प्रेम में ही आप मस्त हो जाओगे तो जगत् भूल ही जाओगे, जगत् पूरा विस्मृत होता जाएगा। प्रेम में मस्त हुए तो फिर तुम्हारा संसार अच्छा चलेगा, आदर्शरूप से चलेगा।

शादी की अर्थात् 'प्रोमिस टु पे'

१९४३ में हीराबा की एक आँख चली गई। डॉक्टर कुछ करने गए, उन्हें झामर का रोग था, वे झामर का इलाज करने गए, तब आँख पर असर हुआ और उसे नुक़सान हो गया।

इसलिए लोगों के मन में हुआ कि यह 'नया दूल्हा' तैयार हुआ। फिर से शादी करवाओ। कन्याएँ बहुत थीं न और कन्या के माता-पिता की इच्छा ऐसी कि कैसे भी करके, उसे कुएँ में डालकर भी ठिकाने लगा दें। तब भादरण के एक पाटीदार आए। उनके साले की लड़की होगी, इसलिए आए थे। मैंने कहा, 'क्या है आपको?' तब वे कहने लगे, 'आपके साथ ऐसा हुआ?' अब उन दिनों १९४४ में मेरी उम्र ३६ साल की। तब मैंने कहा, 'क्यों आप ऐसा पूछने आए हो?' तब उसने कहा, 'एक तो हीराबा की आँख गई, दूसरा यह कि बच्चे भी नहीं हैं।' मैंने कहा, 'प्रजा नहीं है, लेकिन मेरे पास कोई स्टेट नहीं है, बरोडा 'स्टेट' नहीं है कि मुझे उन्हें देना हो। स्टेट होती तो लड़के को देते। यह कोई एकाध झोंपड़ा है और थोड़ी ज़मीन है, और वह भी फिर हमें किसान ही बनाएगी न! अगर स्टेट (राज्य) होती तो समझो कि ठीक था।' फिर मैंने उनसे कहा कि 'अब आप किसलिए यह कह रहे हो? और हीराबा को तो हमने प्रोमिस किया है, शादी की थी तब। तो फिर एक आँख चली गई तो क्या, दूसरी चली जाए तब भी हाथ पकड़कर चलाऊँगा।'

प्रश्नकर्ता : मेरी शादी होने के बाद हम दोनों एक-दूसरे को पहचान गए हैं और लगता है कि पसंद में भूल हो गई। किसीका स्वभाव किसी से मेल नहीं खाता। अब दोनों में मेल कैसे और किस प्रकार से किया जाए ताकि सुखी हो सकें?

दादाश्री : यह तो आप जो कहते हो न, उसमें से एक भी वाक्य

सत्य नहीं है। पहला वाक्य, शादी होने के बाद दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को पहचानने लगते हैं, लेकिन नाम मात्र को भी नहीं पहचानते। अगर पहचान जाएँ तो यह झंझट ही नहीं हो। ज़रा भी नहीं पहचानते।

मैंने तो केवल बुद्धि के डिवीज़न (विभाजन) से सारा मतभेद समाप्त कर दिया था। पर हीराबा की पहचान मुझे कब हुई? साठ साल की उम्र में हीराबा को पहचान पाया! १५ साल का था तब शादी की, ४५ साल तक उसका निरीक्षण करता रहा, तब जाकर मैंने उन्हें पहचाना कि 'ऐसी हैं'!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ज्ञान होने के बाद पहचान पाए?

दादाश्री : हाँ, ज्ञान होने के बाद पहचाना। वर्ना पहचान ही नहीं सकते। मनुष्य पहचान ही नहीं सकता। मनुष्य खुद अपने आप को नहीं पहचान सकता कि मैं कैसा हूँ! अर्थात् यह वाक्य कि 'एक दूसरों को पहचानते हैं' इन सब बातों में कुछ रखा नहीं और पसंद करने में भूल नहीं हुई है।

प्रश्नकर्ता : यह समझाइये कि किस प्रकार पहचानें? धीरे-धीरे सूक्ष्म रूप से प्रेम द्वारा किस तरह पहचाने, पति अपनी पत्नी को, वह समझाइए।

दादाश्री : पहचानोगे कब? पहले तो समानता का दांव दोगे तब। उन्हें स्पेस देनी चाहिए। जैसे बाज़ी खेलने बैठते हैं आमने-सामने, उस वक्त यदि समानता का दाँव हो, तब खेलने में मज़ा आता है। पर ये तो समानता का दाँव क्या देंगे? हम समानता का दाँव देते हैं।

प्रश्नकर्ता : किस प्रकार देते हैं, प्रैक्टिकली किस प्रकार से देते हैं?

दादाश्री : मन से उन्हें अलग नहीं समझने देते। वे उल्टा-सीधा बोलें, फिर भी, समान हों उस प्रकार से, अर्थात् प्रेशर नहीं लाते।

सामनेवाले की प्रकृति को पहचान लेना कि यह प्रकृति ऐसी है और ऐसी है। फिर और तरह से ढूँढ निकालना। मैं अलग तरह से काम नहीं

लेता, लोगों के साथ? मेरा कहा मानते हैं या नहीं मानते सभी? मानते हैं। वह इसलिए नहीं क्योंकि कुशलता थी, लेकिन मैं अलग तरह से काम लेता हूँ।

घर में बैठना पसंद नहीं हो, फिर भी कहना कि तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता। तब वह भी कहेगी कि तुम्हारे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता। तब मोक्ष में जाया जा सकेगा। दादा मिले हैं न, इसलिए मोक्ष में जाया जा सकेगा।

प्रश्नकर्ता : आप हीराबा से कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, हीराबा से मैं अभी भी कहता हूँ न!

मैं भी, इस उम्र में भी हीराबा से कहता हूँ, कि 'आपके बगैर मैं बाहर जाता हूँ, पर मुझे अच्छा नहीं लगता।' अब वे मन में क्या समझती हैं, 'मुझे अच्छा लगता है और उन्हें क्यों अच्छा नहीं लगता होगा?' ऐसा कहें तो संसार बिगड़ नहीं जाएगा। अब तू घी डाल न यहाँ से, नहीं डालेगा तो रूखापन आ जाएगा! डालो सुंदर भाव! हीराबा मुझे कहती हैं, 'मैं भी आपको याद आती हूँ?' मैंने कहा, 'अच्छी तरह, लोग याद आते हैं तब क्या आप नहीं याद आओगी?!' और वास्तव में याद आती भी हैं, याद नहीं आतीं ऐसा नहीं!

आदर्श है हमारी लाइफ (जीवन)! हीराबा भी कहती हैं, 'आप जल्दी आना।'

स्त्री का पति होना आया, ऐसा कब कहलाएगा? कि स्त्री निरंतर पूज्यता अनुभव करे! स्वामी तो कैसा होना चाहिए? कभी भी स्त्री और संतानों को परेशानी नहीं होने दे, ऐसा हो। और स्त्री कैसी हो? कभी भी पति को परेशानी नहीं होने दे, उसीके विचारों में जीए।

पत्नी के साथ तक़रार

दोनों जने भले ही मस्ती-ऊधम मचाएँ, लड़ें-झगड़ें पर एक-दूसरे पर मुक़दमा दायर नहीं करते। और हम अगर बीच में पड़ेंगे तो वे अपना

काम करवा लेंगे और वे लोग तो फिर से एक। दूसरे के घर रहने नहीं चले जाते, इसे 'तोता मस्ती' कहते हैं। हम तुरंत समझ जाते हैं कि इन दोनों ने तोता मस्ती शुरू की है।

एक घंटे तक नौकर को, बच्चों को या पत्नी को बार-बार धमकाया हो तो फिर वह (अगले जनम में) पति बनकर अथवा सास बनकर तुम्हें सारा जीवन परेशान करेगा! न्याय तो होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? इसी को भुगतना है। तुम किसीको दु:ख दोगे तो तुम्हें सारे जीवन दु:ख पड़ेगा। केवल एक ही घंटा दु:ख दोगे तो उसका फल सारी ज़िंदगी मिलेगा। फिर चिल्लाओगे कि 'पत्नी मुझे ऐसा क्यों करती है?' पत्नी को ऐसा होता है कि, 'इस पति के साथ मुझसे ऐसा क्यों हो रहा है?' उसे भी दु:ख होता है, पर क्या हो? फिर मैंने उनसे पूछा कि, 'पत्नी तुम्हें खोज लाई थी कि तुम पत्नी को खोज लाए थे?' तब वे बोले, 'मैं ढूंढ लाया था।' तब उस बेचारी का क्या दोष? आपके ले आने के बाद टेढ़ी निकले, उसमें वह क्या करे, कहाँ जाए फिर?

प्रश्नकर्ता : अबोला (मतभेद के कारण आपसी बातचीत बंद कर देना) रखकर बात टालने से उसका निपटारा हो सकता है?

दादाश्री : नहीं हो सकता। आपको तो सामने मिले तो 'कैसे हो? कैसे नहीं?' ऐसा कहना चाहिए। सामनेवाला ज़रा चीखे-चिल्लाए तब आपको धीरे से 'समभाव से निकाल (निपटारा)' करना है। उसका निकाल तो करना पड़ेगा न कभी न कभी? अबोला रखोगे... तो उससे क्या निकाल हो गया? निकाल नहीं हो पाता, इसीलिए तो अबोला खड़ा होता है। अबोला होने से जिस बात का निकाल नहीं हुआ उसका बोझ लगता है। हमें तो तुरंत उसे रोककर कहना है, 'रुकिए, हमारी कुछ भूल हो तो बताइए। मुझसे बहुत भूलें होती हैं आप तो बहुत होशियार, पढ़े-लिखे हो, इसलिए आपसे नहीं होती, पर मैं कम पढ़ा-लिखा हूँ, इसलिए मुझ से बहुत भूलें होती हैं।' ऐसा कहोगे तो वह खुश हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहने से भी वह नरम नहीं पड़े तो क्या करें?

दादाश्री : नरम नहीं पड़े तो आपको क्या करना है? आप तो कहकर छूट जाना, फिर क्या उपाय? कभी न कभी किसी दिन नरम पड़ेगी। यदि धमकाकर नरम करोगे तो उससे तो बिल्कुल नरम नहीं पड़ेगी। आज नरम दिखेगी पर वह मन में *नोंध* (अत्यंत राग अथवा द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना) रखेगी और जब आप नरम होंगे, उस दिन वापस सब निकालेगी। अर्थात् जगत् बैरवाला है। कुदरत का कानून ऐसा है कि प्रत्येक जीव भीतर बैर रखता ही है। भीतर परमाणुओं का संग्रह करता है, इसलिए हमें पूर्ण रूप से केस हल कर देना है।

प्रश्नकर्ता : तब फिर उसे कुछ कहें ही नहीं?

दादाश्री : कहना ज़रूर, लेकिन सम्यक् कहना, अगर कहना आए तो। वर्ना कुत्ते की तरह भौं-भौं करने का क्या अर्थ? यानी सम्यक् कहना।

प्रश्नकर्ता : सम्यक यानी किस तरह से?

दादाश्री : ओहोहो! तुमने इस बच्चे को क्यों गिराया? क्या कारण है इसका? तब वह कहेगी कि, 'जान-बूझकर मैं थोड़े ही गिराऊँगी? वह तो मेरे हाथ से सरक गया और गिर पड़ा'

प्रश्नकर्ता : वह तो वो झूठ बोलती है न?

दादाश्री : वह झूठ बोले, यह हमें नहीं देखना है, झूठ बोले या सच बोले वह उसके अधीन है, वह आपके अधीन नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कहना नहीं आए तो फिर क्या करें? चुप बैठें?

दादाश्री : मौन रहो और देखते रहो कि 'क्या होता है?' सिनेमा में बच्चे को गिराते हैं, तब क्या करते हो आप? कहने का अधिकार है सभी को, पर क्लेश बढ़े नहीं, उस प्रकार से कहने का अधिकार है। बाकी जो कहने से क्लेश बढ़े, वह तो मूर्खों का काम है।

बाकी मीठी वाणी होने के बाद, मधुरवाणी होने के बाद, आप अगर डाँटोगे, फिर भी वह हँसेगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह महत्वपूर्ण है।

दादाश्री : कषाय न हों तो डाँटने में कोई हर्ज नहीं, कषायों में आपत्ति है।

प्रश्नकर्ता : हमें झगड़ा नहीं करना हो, हम कभी झगड़ा करते ही नहीं हों, फिर भी घर में सभी सामने से रोज़ झगड़े करते हों, तब क्या करें?

दादाश्री : हमें 'झगड़ाप्रूफ' हो जाना चाहिए। 'झगड़ाप्रूफ' हो जाएँगे, तभी इस संसार में रह पाएँगे। हम आपको 'झगड़ाप्रूफ' बना देंगे। झगड़ा करनेवाला भी ऊब जाए, ऐसा हमारा स्वरूप होना चाहिए। पूरे 'वर्ल्ड' में कोई हमें 'डिप्रेस' नहीं कर सके, ऐसा बन जाना चाहिए। हम 'झगड़ाप्रूफ' हो गए, फिर झंझट ही नहीं न! लोगों को झगड़े करने हों, गालियाँ देनी हों, तो भी हर्ज नहीं इसके बावजूद भी बेशर्म नहीं कहलाओगे, बल्कि जागृति बहुत बढ़ेगी।

पूर्व में जो झगड़े किये थे उनके बैर बँधे होते हैं और वे आज झगड़े के रूप में चुकते हैं। झगड़ा होता है, उसी क्षण बैर का बीज पड़ जाता है, वह अगले जन्म में उगेगा।

प्रश्नकर्ता : तो वह बीज किस तरह दूर हो?

दादाश्री : धीरे-धीरे 'समभाव से निकाल' करते रहो, तो दूर हो जाएगा। बहुत भारी बीज पड़ा हो तो देर लगेगी, शान्ति रखनी पड़ेगी। प्रतिक्रमण बहुत करने होंगे। अपना कोई कुछ नहीं लेता। दो वक्त का खाना मिले, कपड़े मिले फिर क्या चाहिए? कमरे को ताला लगाकर जाते हैं, मगर हमें दो वक्त खाना मिलता है या नहीं, इतना ही देखना है। हमें घर में बंद करके जाएँ, तो भी हर्ज नहीं। हम सो जाएँ। पूर्व जन्म के बैर ऐसे बंधे हैं कि हमें ताला लगाकर बंद करके जाएँ! बैर और वह भी नामसझी में बंधा हुआ! समझपूर्वक हो तो हम समझ जाएँ कि यह समझपूर्वक है, तब भी हल आ जाए। अब नासमझीवाला हो, वहाँ कैसे हल आए? इसलिए वहाँ बात को छोड़ देना।

अब सभी बैर छोड़ देने हैं। इसलिए कभी हमारे पास से 'स्वरूप ज्ञान' प्राप्त कर लेना ताकि सभी बैर छूट जाएँ। इस जन्म में ही सभी बैर छोड़ देना। हम तुम्हें रास्ता दिखाएँगे।

खटमल काटते हैं, वे तो बेचारे बहुत अच्छे हैं पर यह पति बीवी को काटता है और बीवी पति को काटती है, वह बहुत भारी होता है। क्यों? काटते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : काटते हैं।

दादाश्री : वह काटना बंद करना है। खटमल काटते हैं, वे तो काटकर चले जाएँगे। वे बेचारे तो भीतर तृप्त हो जाए तब चले जाते हैं, लेकिन बीवी तो हमेशा काटती ही रहती है। एक आदमी तो मुझसे कहने लगा, 'मेरी वाइफ मुझे साँपिन की तरह काटती है!' तो मुए शादी क्यों की थी उस साँपिन के साथ? तो क्या वह साँप नहीं होगा मुआ? ऐसे ही साँपिन मिलती होगी? साँप हो, तभी साँपिन आती है।

हम तो इतना समझते हैं कि झगड़ने के बाद 'वाइफ' के साथ व्यवहार ही नहीं रखना हो तो अलग बात है, पर फिर से बोलना है तो फिर बीच की सारी भाषा गलत है। हमें यह लक्ष्य में ही होता है कि दो घंटे बाद फिर से बोलना है, इसलिए उसकी किच-किच नहीं करते। यह तो अगर आपको अभिप्राय फिर से नहीं बदलना हो तो अलग बात है। आपका अभिप्राय बदले नहीं, तो आपका किया हुआ सही है। फिर से यदि 'वाइफ' के साथ बैठनेवाले ही नहीं हो, तो फिर जो झगड़ा किया वह सही है! पर यह तो कल फिर से साथ में बैठकर भोजन करनेवाले हो। तो फिर कल नाटक किया था, उसका क्या? यह सोचना चाहिए न?

सबसे पहले पति को पत्नी से माफ़ी माँगनी चाहिए। पति बड़े मनवाले होते हैं। बीवी पहले माफ़ी नहीं माँगती। पति बड़े मन के होते हैं समझ में आया न, क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : पति को उदार मन का कहा, इसलिए वे खुश हो गए।

दादाश्री : नहीं, वह उदार मनवाला ही होता है। उसका विशाल मन होता है और स्त्रियाँ साहजिक होती हैं। साहजिक होती हैं, इसीलिए भीतर से उदय आए, तो माफ़ी माँगे या न भी माँगें। पर यदि आप माँगो, तो वह तुरंत माँग लेगी और आप उदय कर्म के अधीन नहीं रहोगे, आप जागृति के अधीन रहोगे। और वह उदय कर्म के अधीन रहती हैं, वह सहज कहलाती हैं न! स्त्री सहज कहलाती है। आप में सहजता नहीं आ पाती। सहज हो जाए तो बहुत सुखी रहेगा।

प्रश्नकर्ता : यह अहम् गलत है, ऐसा हमें कहा जाता है और ये सब सुनते हैं, संत पुरुष भी ऐसा कहते हैं, फिर भी वह अहम् जाता क्यों नहीं?

दादाश्री : अहम् कब जाएगा? वह झूठा है, ऐसा हम एक्सेप्ट करें, तब जाएगा। वाइफ के साथ तकरार होती हो, तब हमें समझ लेना चाहिए कि यह मेरा अहम् गलत है। इसलिए आप रोज़ उस अहम् से ही फिर भीतर उससे माफ़ी माँगते रहो, तो वह अहम् चला जाएगा। कुछ उपाय तो करना चाहिए न?

हम यह सरल और सीधा रास्ता बता देते हैं और यह टकराव क्या रोज़-रोज़ होता है? वह तो जब अपने कर्म का उदय होता है, तब होता है। उतने समय तक आपको एडजस्ट होना है। घर में वाइफ के साथ झगड़ा हुआ हो, तो झगड़ा होने के बाद वाइफ को होटल में ले जाकर भोजन करवाकर खुश कर देना। अब पकड़ नहीं रहनी चाहिए।

इसलिए 'यह' ज्ञान हो तो फिर वह झंझट नहीं रहता। ज्ञान हो तब तो हम सुबह-सुबह दर्शन ही करते हैं न? वाइफ के भीतर भी भगवान के दर्शन करने ही पड़ते हैं न! वाइफ में भी दादा दिखाई दें तो कल्याण हो गया! वाइफ को देखें तो ये 'दादा' दिखते हैं न! उसके भीतर भी शुद्धात्मा दिखते हैं न! तो कल्याण हो गया!

इसलिए कुछ भी करके 'एडजस्ट' होकर वक्त गुज़ार दो ताकि कर्ज़ चुक जाए। किसी का पच्चीस साल का, किसी का पंद्रह साल का, किसी का तीस साल का, चाहो या न चाहो कर्ज तो चुकाना पड़ता है। पसंद

नहीं हो फिर भी उसी कमरे में साथ में रहना पड़ता है। यहाँ बिछौना बाई साहब का और यहाँ बिछौना भाई साहब का! मुँह मोड़ कर सो जाएँ तो भी बाई साहब को विचार तो भाई साहब के ही आते हैं न! छुटकारा नहीं। यह संसार ही ऐसा है। उसमें भी सिर्फ आपको ही वे पसंद नहीं हैं, ऐसा नहीं है, उसे भी आप पसंद नहीं होते। अर्थात् इसमें मज़ा लेने जैसा नहीं है।

'डोन्ट सी लॉ, प्लीज सेटल' (कानून मत देखो, समाधान करो) सामनेवाले को 'सेटलमेन्ट' करने को कहना। 'तुम ऐसा करो, वैसा करो' ऐसा कहने के लिए वक्त ही कहाँ होता है? सामनेवाले की सौ भूलें हों, तो भी आपको तो अपनी ही गलती कहकर आगे निकल जाना है। इस काल में 'लॉ (कानून)' कहीं देखे जाते होंगे? यह तो अंतिम चरण तक पहुँच गया है!

प्रश्नकर्ता : कई बार घर में भारी तकरार हो जाती है, तब क्या करें?

दादाश्री : समझदार आदमी हो न, तो लाख रुपये दे, फिर भी तकरार नहीं करे। और यह तो बिना पैसे तकरार करता है, फिर वह अनाड़ी नहीं तो क्या? भगवान महावीर को कर्म खपाने के लिए साठ मील चलकर अनाड़ी क्षेत्र में जाना पड़ा था, और आज के लोग पुण्यवान हैं, कि घर बैठे अनाड़ी क्षेत्र है! कैसे अहो भाग्य! यह तो अत्यंत लाभ दायक है कर्म खपाने के लिए, यदि सीधा रहे तो।

घर में कोई पूछे, सलाह माँगे तभी जवाब देना। बिना पूछे सलाह देने बैठ जाए, उसे भगवान ने 'अहंकार' कहा है। पति पूछे कि ये प्याले कहाँ रखने हैं? तब पत्नी जवाब देती है कि 'फलाँ जगह पर रखो।' तब आप वहाँ रख देना। इसके बजाय वह कहे कि 'तुझे अक़्ल नहीं, और फिर तू यहाँ कहाँ रखने को कह रही है?' इस पर पत्नी कहेगी कि 'अक़्ल नहीं है इसीलिए तो मैंने तुम्हें ऐसा कहा, अब तुम्हारी अक़्ल से रखो।' अब इसका निबेड़ा कैसे आए? यह तो संयोगों के टकराव हैं केवल! ये लट्टू खाते समय, उठते समय टकराते ही रहते हैं। लट्टू फिर टकराते हैं, छिलते हैं और खून निकलता है!! यह तो मानसिक खून निकलता है न!

वह रक्त निकला हो तो अच्छा, पट्टी बांधने पर ठीक हो जाता है। इस मानसिक घाव पर तो पट्टी भी नहीं लगती न कोई!

घर में किसीको भी, पत्नी को, छोटी बच्ची को, किसी भी प्राणी को आहत करके मोक्ष नहीं पा सकते। ज़रा-सी भी तरछोड़ लगे, वह मोक्ष का मार्ग नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तिरस्कार और तरछोड़, इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : तरछोड़ और तिरस्कार में तिरस्कार तो शायद कभी मालूम नहीं भी पड़े। तरछोड़ के आगे तिरस्कार बिल्कुल माइल्ड वस्तु है, जब कि तरछोड़ तो बड़ा ही उग्र स्वरूप है। तरछोड़ से तो तुरंत ही रक्त निकले ऐसा है। उससे इस शरीर से रक्त नहीं निकलता, पर मन का रक्त निकलता है। तरछोड़ ऐसी भारी वस्तु है।

एक बहन हैं, वे मुझसे कहती हैं, 'आप मेरे फादर हों, ऐसा लगता है, पिछले जन्म के।' बहन बहुत अच्छी, बहुत संस्कारी थीं। फिर बहन से पूछा कि, 'इस पति के साथ कैसे मेल बैठता है?' तब कहा, 'वे कभी कुछ नहीं बोलते, कुछ भी नहीं कहते।' तब मैंने कहा, 'किसी दिन कुछ तो होता होगा न?' तब कहे, 'नहीं, कभी-कभार ताना देते हैं।' 'हाँ', इस बात पर से मैं समझ गया। तब मैंने पूछा कि, 'वह ताना दें तब आप क्या करती हो? आप उस वक्त डंडा लाती हो या नहीं?' तब वह कहती है, 'नहीं, मैं उन्हें ऐसा कहती हूँ कि कर्म के उदय से मैं और आप इकट्ठा हुए हैं। मैं अलग, आप अलग। अब ऐसा क्यों करते हो? किसलिए ताने देते हो और यह सब क्या है? इसमें किसी का भी दोष नहीं है। यह सब कर्म के उदय का दोष हैं। इसलिए ताने देने के बजाय कर्म का चुकादा कर डालो न!' वह तकरार अच्छी कहलाएगी न! आज तक तो बहुत सारी स्त्रियाँ देखीं, पर ऐसी ऊँची समझवाली तो यही एक स्त्री देखी।

मेरा स्वभाव मूलत: क्षत्रिय स्वभाव। हमारा क्षत्रिय ब्लड, इसलिए *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) को धमकाने की आदत और अन्डरहेन्ड की रक्षण करने की आदत। यह क्षत्रियधर्म का मूल गुण, अत: अन्डरहेन्ड का रक्षण करने की आदत इसलिए वाइफ, बच्चे, अपने अन्डरहेन्डवालों का

रक्षण करने की आदत। वे उल्टा-सुल्टा करें फिर भी रक्षण करने की आदत। नौकर हो उन सबका रक्षण करना, उनकी भूल हो गई हो फिर भी उन बेचारों से कुछ नहीं कहता था और ऊपरी हो तो उसकी खबर ले लूँ। और सारा जगत् अन्डरहेन्ड के साथ किच-किच करता है।

आप शादी करके घर में लाए और बीवी को डाँटते रहो, यह कैसा है कि गाय को खूँटे से बाँधकर, उसे मारते रहें। खूँटे से बाँधकर उसे मारते रहें तब? यहाँ से मारो तो उस ओर जाएगी बेचारी! यह एक खूँटी से बंधी कहाँ जानेवाली है? यह समाज का खूँटा ऐसा है कि भाग भी नहीं सकती। खूँटे से बंधी हुई को मारें तो बहुत पाप लगता है। खूँटे से न बाँधा हो और मारें तो? वह अलग है, वहाँ शायद चल भी जाए। खूँटी से न बंधी हो तो हाथ ही न आए न! यह तो समाज की वजह से दबी रहती है वर्ना कब की भाग जाती। डायवोर्स लेने के बाद मारकर देखो! तब क्या होगा?

'मिनट' के लिए भी झंझट नहीं हो, उसका नाम पति। मित्र के साथ जैसे बिगड़ने नहीं देते, उस प्रकार सम्हालना। मित्र के साथ यदि नहीं सम्हालते तो मित्रता टूट जाती है। मित्राचार यानी मित्राचार। उन्हें शर्त बता देना कि तू मित्राचारी में, यदि आउट ऑफ मित्राचारी हो गई तो गुनाह लगेगा। एक होकर मित्राचारी रख।'

फ्रेन्ड के प्रति सिन्सियर रहता है, इतना कि फ्रेन्ड दूर रहकर भी कहता है कि 'मेरा फ्रेन्ड ऐसा है। मेरे बारे में कभी बुरा सोचता ही नहीं।' उसी प्रकार पत्नी के लिए भी बुरा नहीं सोचना चाहिए। वह क्या फ्रेन्ड से बढ़कर नहीं है?

पत्नी लौटाये तौल के साथ

अब रात को पत्नी के साथ आपकी झंझट हुई हो, तो उसका तंत सुबह तक रहता है, इसलिए सवेरे चाय देती है तो पटकती है,ऐसे। आप समझ जाते हो कि तंत है अभी भी, ठंडक नहीं हुई है। ऐसे पटके, उसका नाम तंत।

'ये वह क्या करती है? वह किसलिए ऐसा करती है? वह आपको दबाना चाहती है। और तू क्रोधित हो गया, तब वह समझेगी कि हाँ, चलो, नरम पड़ गया। पर अगर गुस्सा नहीं होते तो फिर वह ज़्यादा करेगी।' ऐसी कलह के बावजूद भी अगर पति गुस्सा नहीं करे, तो फिर अंदर जाकर दो-चार बर्तनों को ऐसे गिराती है। वह खननन.... आवाज हो तो पति चिढ़ता है। फिर भी अगर नहीं चिढ़े तो बेटे को चिमटी काटकर रुलाती है, तब फिर वह चिढ़ जाता है, पापा। 'तू बेटे के पीछे क्यों पड़ी है, बच्चे को क्यों बीच में क्यों लाती है? ऐसा वैसा...' इससे वह समझ जाती है कि यह ठंडा पड़ गया।

पुरुष घटनाएँ भूल जाते हैं और स्त्रियों की *नोंध* सारी ज़िंदगी रहती हैं। पुरुष भोले होते हैं, बड़े दिलवाले होते हैं, भद्रिक होते हैं, इसलिए वे भूल जाते हैं बेचारे। स्त्रियाँ तो कह भी देती हैं कि उस दिन तुम ऐसा बोले थे, वह मेरे कलेजे में लगा है। अरे! बीस साल हुए तो भी *नोंध* ताज़ी! बेटा बीस साल का हो गया, विवाह योग्य हो गया तो भी वह बात याद रखती है! सभी चीज़ें सड़ जाएँ, पर इनकी चीज़ें नहीं सड़ती! स्त्री को यदि आपने दिया हो तो वह उसे असल जगह पर रखती है, कलेजे में। इसलिए देना-वेना मत। नहीं है देने जैसी चीज़ यह। सावधान रहने जैसा है।

हमेशा ही, स्त्री को जितना भी आप कहोगे, उसकी ज़िम्मेदारी आएगी, क्योंकि जब तक आपका शरीर तंदुरुस्त रहता है न, तभी तक वह सहन करती है और मन में क्या कहती है? जोड़ ढीले पड़ेंगे, तब ठिकाने ला दूँगी। इन सभी को जिनके जोड़ ढीले पड़ गए, उन सभी को ठिकाने ला दिया। मैंने देखे भी हैं। इसलिए मैं लोगों को सलाह देता हूँ, 'मत करना भाई, बीवी के साथ तो तकरार मत करना। बीवी के साथ बैर मत बाँधना, नहीं तो परेशान हो जाएगा।

भारतीय स्त्री जाति मूल संस्कार में आए न, तो वह तो देवी है। पर यह तो बाहरी संस्कार छू गए हैं न, इसलिए बिफर गई है अब। बिफरती है!! इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है, '*रमा रमाड़वी सहेल छे, विफरी तो महामुश्केल थई जाय*' और वह बिफरे, ऐसा करते हैं लोग। उसे उल्टा-

सीधा कहकर उकसाते हैं और जब बिफरे तो बाघिन जैसी हो जाती है। इस हद तक नहीं जाना चाहिए आपको, मर्यादा रखनी चाहिए। और स्त्री को परेशान करते रहोगे तो कहाँ जाएगी वह बेचारी? इसीलिए फिर वह वक्र चलती है। पहले वक्र (टेढ़ा) चलती है और फिर बिफर जाती है! वह बिफरी तो हो चुका! इसलिए उसे छेड़ना मत, लेट गो करना।

और स्त्री जब बिफरेगी तब तुम्हारी बुद्धि नहीं चलेगी, तुम्हारी बुद्धि उसे नहीं बाँध सकेगी। इसलिए बिफरे नहीं, उस प्रकार से बातें करना। आँखो में भरपूर प्रेम रखना। कभी वह ऐसा-वैसा कहे, तब वह तो स्त्री जाति है, अत: लेट गो करना। अर्थात् एक आँख में संपूर्ण प्रेम रखना, दूसरी आँख में थोड़ी सख़्ती रखना, उस प्रकार से रहना चाहिए। जिस समय जो ज़रूरी हो, वैसा। हर रोज़ बिल्कुल सख़्ती नहीं रखनी चाहिए। वह तो एक आँख में सख़्ती की तरह और एक आँख में देवी की तरह मानना। समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : एक आँख में सख़्ती और एक आँख में देवी, वे दोनों एट-ए-टाइम कैसे रह सकता है?

दादाश्री : पुरुष को ऐसा सब तो आता है! मैं तीस-पैंतीस साल का था, तब घर आता न, उस वक्त हीराबा अकेली नहीं, आसपास की सभी स्त्रियाँ मुझे देखतीं। वे एक आँख में सख़्ती देखतीं और एक आँख में पूज्यता देखतीं। तो सभी स्त्रियाँ सिर पर ओढ़कर बैठतीं और सभी चौकन्नी हो जातीं। और हीराबा तो हमारे घर में प्रवेश करने से पहले ही डर जातीं। जूते की आहट हुई कि डर जातीं। एक आँख में सख़्ती, एक में नर्मी। उसके बगैर स्त्री सँभलती ही नहीं। इसीलिए हीराबा कहती थीं न, दादा कैसे हैं?

प्रश्नकर्ता : तीखे भँवरे जैसे।

दादाश्री : 'तीखे भँवरे जैसे हैं', ऐसा हमेशा रखते थे। वैसे उन्हें ज़रा भी धमकाते नहीं थे। घर में प्रवेश करें कि चुप्प। सब बर्फ जैसा ठंडा हो जाता, जूते की आहट हुई कि तुरंत!

सख़्ती किसलिए कि वे ठोकर नहीं खा बैठें, इसलिए सख़्ती रखना। इसलिए एक आँख में सख्ती और एक आँख में प्रेम रखना।

प्रश्नकर्ता : इसलिए संस्कृत में कहा है, 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता!'

दादाश्री : हाँ, बस! इसलिए मैं जब ऐसा कहता हूँ न, तब सभी लोग मुझसे कहते हैं, 'दादा! आप स्त्रियों के तरफ़दार हैं, पक्षपाती हैं।'

अब मैं क्या कहता हूँ कि, 'स्त्रियों की पूजा करो', इसका अर्थ ऐसा नहीं है कि सवेरे जाकर आरती उतारना। ऐसा करेगा तो वह तेरा तेल निकाल देगी। इसका अर्थ क्या है? एक आँख में प्रेम और एक आँख में सख़्ती रखना। अर्थात् पूजा मत करना। वैसी योग्यता नहीं है। अतः मन से पूजा करना।

पत्नी से कहना कि 'तुझे मुझसे जितना लड़ना हो उतना लड़ना। मुझे तो दादा ने लड़ने को मना किया है, दादा ने मुझे आज्ञा दी है। मैं यहाँ बैठा हूँ, तुझे जो कुछ कहना हो कह अब।' ऐसा उसे कह देना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह बोलेगी ही नहीं न फिर।

दादाश्री : दादा का नाम आते ही चुप हो जाएगी। दूसरा कोई हथियार इस्तेमाल मत करना। यही हथियार इस्तेमाल करना।

एक बहन ने तो मुझे बताया था कि, 'शादी हुई तब वे बहुत अकड़ते थे।' मैंने पूछा 'अब?' तब कहे, 'दादाजी, आप सारा स्त्री चरित्र समझते हैं, मुझसे क्यों कहलवाते हैं?' उन्हें मुझसे कोई सुख लेना हो तब मैं उनसे कहती हूँ, 'भाईसाब कहिए।' अर्थात् भाईसाब कहलवाती हूँ तब! 'उसमें मेरा क्या दोष? पहले वे मुझसे भाईसाब कहलवाते थे और अब मैं भाईसाब कहलवाती हूँ।' समझे?

ये अमलदार भी ऑफिस से थककर घर आते हैं न, तब बाईसाहब क्या कहती हैं? कि 'डेढ़ घंटे लेट हो गए, कहाँ गए थे?' ले! उसकी बीवी एक बार उसे धमका रही थी। तब ऐसा शेर जैसा आदमी, जिससे सारा गुजरात डरता है, उसे भी डराती है, देखो न! सारे गुजरात में जिसका कोई नाम नहीं दे सकता, उसे उसकी बीवी सुनती ही नहीं थी और उसे भी धमका देती थी! फिर मैंने उसे एक दिन पूछा, 'बहन, तुम्हारा पति है वह

तुझे अकेली छोड़कर दस-पंद्रह दिन बाहर जाए, तो?' तब बोली, 'मुझे तो डर लगता है।' 'किसका डर लगता है?' तब कहती है, 'अंदर दूसरे रूम में प्याला खड़के न, तब भी मेरे मन में ऐसा लगता है कि भूत आया होगा!' एक चुहिया गिलास खड़काये तो भी डर लगता है और यह पति! पति के कारण तुझे डर नहीं लगता। उस पति को फिर तू धमकाती रहती है! बाघ जैसे पति का तेल निकाल देती है!

एक व्यक्ति तीन हज़ार की घोड़ी लाया था। यों तो रोज़ उस घोड़ी पर बाप बैठता था। उसका बेटा चौबीस साल का बेटा था। एक दिन बेटा घोड़ी पर बैठकर तालाब पर गया। उस घोड़ी के साथ ज़रा छेड़खानी की, अब घोड़ी तीन हज़ार की, उसके साथ छेड़खानी करनी चाहिए? उसके साथ छेड़खानी नहीं कर सकते। उसे उसकी चाल से ही चलने देना पड़ता है। उसने छेड़खानी की, तो घोड़ी तेज़ी से अगले दोनों पैरों पर खड़ी हो गई और वह लड़का गिर पड़ा। पोटला नीचे गिर पड़ा। अब वह पोटला घर आकर क्या कहने लगा कि 'इस घोड़ी को बेच दो, घोड़ी खराब है।' उसे बैठना नहीं आता और घोड़ी की गलती निकालता है! देखो, यह उसका मालिक! ये सब मालिक! फिर मैंने कहा, 'हाँ, वह घोड़ी खराब थी, यह तीन हज़ार की घोड़ी!' अरे, तुझे सवारी करनी नहीं आती, इसमें घोड़ी को क्यों बदनाम करता है? घोड़ी पर सवारी करनी नहीं आनी चाहिए? घोड़ी को बदनाम करते हो?

एक बार पति यदि पत्नी का प्रतिकार करे तो उसका प्रभाव ही नहीं रहेगा। आपका घर चल रहा हो ठीक से, बच्चे अच्छी तरह से पढ़ रहे हों, किसी बात का झंझट नहीं हो और आपको पत्नी का उल्टा दिखा और आप बिना वजह प्रतिकार करो, तब आपकी अक़्ल का नाप स्त्री निकाल लेती है कि इसमें कुछ बरकत नहीं है।

आपको स्त्रियों के साथ 'डीलिंग (वर्तन)' करना नहीं आता। आप व्यापारियों को यदि ग्राहकों के साथ डीलिंग करना नहीं आए तो वे आपके पास नहीं आएँगे। इसलिए लोग नहीं कहते कि 'सेल्समेन अच्छा रखो।' अच्छा, होशियार सेल्समेन हो तो लोग थोड़ी क़ीमत भी ज़्यादा दे देते हैं। उसी प्रकार आपको स्त्री के साथ 'डीलिंग' करना आना चाहिए।

स्त्री जाति की वज़ह से जगत् का यह सब नूर है, वर्ना घर में साधु से भी बुरा हाल होता। सवेरे झाड़ू ही नहीं निकली होती! चाय का भी ठिकाना नहीं होता!! यह तो वाइफ है, इसलिए जब वह कहती है, तो सवेरे जल्दी-जल्दी नहा लेता है, उसकी वजह से सारी शोभा है! और उनकी शोभा आपकी वजह से है।

स्त्री अर्थात् सहज प्रकृति। पति को पाँच करोड़ का नुक़सान हुआ न, तो पति सारा दिन चिंता करता है, दुकान में नुक़सान हो जाए तो घर आकर खाता-पीता भी नहीं, पर पत्नी तो घर आने पर कहेगी, 'लो, उठो, अब बहुत हाय-हाय मत करो, आप चाय पीओ और आराम से भोजन करो।' अब आधी पार्टनरशिप होने पर भी उसे चिंता क्यों नहीं होती, क्योंकि वह साहजिक है। इसलिए इस सहज के साथ रहें, तो जीया जाए, वर्ना नहीं जीया जाए। और यदि दो पुरुष साथ में रहें तो मर जाएँ आमने-सामने। अत: स्त्री तो सहज है, इसीलिए घर में यह आनंद रहता है थोड़ा-बहुत।

स्त्री तो दैवी शक्ति है, पर अगर पुरुष को समझ में आ जाए तो काम बन जाए। स्त्री का दोष नहीं, आपकी उल्टी समझ का दोष है। स्त्रियाँ तो देवियाँ हैं, उन्हें देवी पद से नीचे मत उतारना। 'देवी है,' कहते हैं न। और उत्तर प्रदेश में तो कहीं कहीं 'आइए देवी' कहते हैं, आज भी कहते हैं, 'शारदा देवी आई, सीता देवी आई!' कुछ प्रदेशों में नहीं कहते?

और चार पुरुष यदि साथ-साथ रहते हों, तो एक व्यक्ति खाना पकाये, एक व्यक्ति...., उस घर में बरकत नहीं होती। एक पुरुष और एक स्त्री रह रहे हों, तो घर सुंदर दिखता है। स्त्री सजावट बहुत सुंदर करती है।

प्रश्नकर्ता : आप सिर्फ स्त्रियों का ही पक्ष मत लिया कीजिए।

दादाश्री : मैं स्त्रियों का पक्ष नहीं लेता, इन पुरुषों का पक्ष लेता हूँ। यों स्त्रियों को लगता है कि हमारा पक्ष लेते हैं, पर तरफदारी पुरुषों की करता हूँ। क्योंकि फेमिली के मालिक आप हो। शी इज़ नॉट ओनर

ऑफ फ़ैमिलि, यु आर ओनर। (वह कुटुंब की मालिक नहीं, आप मालिक हैं)। लोग बम्बई में कहते हैं न, 'क्यों आप पुरुषों का पक्ष नहीं लेते और स्त्रियों का पक्ष लेते हैं?' मैंने कहा, 'उनकी कोख से महावीर पैदा हुए हैं, तुम्हारी कोख से कौन पैदा होता है? बिना वजह तुम ले बैठे हो?'

प्रश्नकर्ता : फिर भी, आप स्त्रियों का बहुत पक्ष लेते हैं। ऐसा हमारा मानना है।

दादाश्री : हाँ, ज़रा मुझ पर आक्षेप है, सभी जगह हो जाता है। वह आक्षेप लोगों ने मुझ पर लगाया है, लेकिन साथ ही मैं पुरुषों को ऐसी समझ देता हूँ कि बाद में स्त्रियाँ उनका सम्मान करती हैं। ऐसी सेटिंग कर देता हूँ। हालाकि देखने में ऐसा लगता है कि स्त्रियों की तरफदारी कर रहा हूँ, परंतु वास्तव में अंदर से तो पुरुषों के लिए होता है। यानी कि यह सब, क्या सेटिंग करें, उसके रास्ते होने चाहिए। दोनों को संतोष होना चाहिए।

मुझे तो (व्यवहार में तो) स्त्रियों के साथ भी बहुत अनुकूल होता है और पुरुषों के साथ भी उतना ही अनुकूल होता है। पर वास्तव में हम न तो स्त्रियों के पक्ष में होते हैं और न ही पुरुषों के पक्ष में होते है। दोनों ठीक से संसार चलाओ। वह नहीं होगी तो तेरा घर कैसे चलेगा?

पत्नी की शिकायतें

तू शिकायत करेगा तो तू शिकायती बन जाएगा। मैं तो, जो शिकायत करने आए उसे ही गुनहगार मानता हूँ। तुझे शिकायत करने का वक्त ही क्यों आया? शिकायती ज़्यादातर गुनहगार ही होते हैं। खुद गुनहगार हो, तभी शिकायत करने आता है। तू शिकायत करेगा तो तू शिकायती बन जाएगा और सामनेवाला आरोपी बन जाएगा। इसलिए उसकी दृष्टि में तू आरोपी ठहरेगा। इसलिए किसी के विरुद्ध शिकायत मत करना।

वह भागाकार करे तो आप गुणा करना ताकि रक़म शून्य हो जाए। सामनेवाले के लिए ऐसा सोचना कि उसने मुझे ऐसा कहा, वैसा कहा, वही गुनाह है। रास्ते पर चलते समय पेड़ टकराए तो उसे क्यों नहीं डाँटते? पेड़ को जड़ कैसे कह सकते हैं? जिनसे चोट लगे, वे सभी हरे पेड़ ही

हैं न? गाय का पैर आप पर पड़े तो आप उसे कुछ कहते हो? ऐसा इन सभी लोगों का है। 'ज्ञानीपुरुष' सभी को माफ़ी कैसे देते हैं? वे जानते हैं कि ये सभी (लोग) समझते नहीं हैं, पेड़ जैसे हैं। समझदार को तो कहना ही नहीं पड़ता, वह तो तुरंत भीतर प्रतिक्रमण कर लेता है।

पति अपमान करे, तब क्या करती हो फिर? दावा दायर करती हो?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहीं करते होंगे? ऐसा कभी होता होगा?

दादाश्री : तब क्या करती हो? 'मेरे आशीर्वाद हैं', कहकर सो जाना! बहन, तुम सो जाओगी या मन में गालियाँ देती रहोगी? मन में ही गालियाँ देती रहती हो।

और फिर तीन हज़ार की साड़ी देखी तो घर आकर मुँह फूल जाता है। ऐसा देखकर आप पूछो, 'क्यों ऐसा हो गया?' वह साड़ी में खो गई होती है। जब लाकर दो, तब छोड़ती है, वर्ना तब तक क्लेश करना नहीं छोड़ती। ऐसा नहीं होना चाहिए।

पत्नी कहेगी कि, 'यह हमारे सोफे की डिज़ाइन ठीक नहीं है। आपके मित्र के वहाँ गए थे, उसकी डिज़ाइन कितनी सुंदर थी!' अरे, इस सोफे में तुझे सुख नहीं मिलता? तब कहें कि, 'नहीं, मैंने वहाँ जो देखा, उसमें सुख मिलेगा।' बाद में पति को वैसा सोफा लाना पड़ता है! अब जब वह नया ले आये और किसी दिन बेटा ब्लेड से कहीं काट दे तो वापस भीतर मानो आत्मा कट जाता है! बच्चे सोफा काट देते हैं या नहीं? और उस पर कूदते हैं न? और कूदते हैं तब मानो उसकी छाती पर कूद रहा हो, ऐसा लगता है! यह उसका मोह है। वह मोह ही आपको काट-काटकर तेल निकाल देगा।

बेकार ही जन्म बिगड़ जाते हैं इससे तो और दूसरा, बहनों से कहता हूँ कि शॉपिंग मत करना। शॉपिंग बंद कर दो। यह तो डॉलर आए कि.... अरे, ज़रूरत नहीं है तो क्यों लेते हो, यूज़लेस? किसी अच्छे रास्ते पर पैसा जाना चाहिए या नहीं जाना चाहिए? किसी फ़ैमिली में मुश्किल हो, उन बेचारों के पास नहीं हो और पचास-सौ डॉलर दे दो तो कितना अच्छा

लगेगा! और शॉपिंग में फ़िजूल खर्ची करती हो और घर में सब भरा पड़ा रहता है।

प्रश्नकर्ता : फिर स्त्रियाँ *त्रागा* (अपनी मनमानी/बात मनवाने के लिए किए जानेवाला नाटक) करती हैं!

दादाश्री : त्रागा तो स्त्रियाँ नहीं, पुरुष भी करते हैं।

आजकल तो लोग बहुत नहीं करते। *त्रागा* यानी क्या? खुद को कुछ भोग लेना हो तो सामनेवाले को धमकाकर भोग लेता है, धार्युं करवाता है!

प्रश्नकर्ता : सब जगह औरतों का ही दोष क्यों देखा जाता है और पुरुषों का नहीं देखा जाता?

दादाश्री : स्त्रियों का तो ऐसा है न, पुरुषों के हाथ में कानून था, इसलिए स्त्रियों का ही नुक़सान किया है।

ये पुस्तकें तो पुरुषों ने लिखीं, इसलिए पुरुषों को ही आगे किया है, स्त्रियों को हटा दिया है। उसमें उन्होंने उसकी वेल्यु खत्म कर दी है। अब, मार भी उतनी ही खाई है। नर्क में भी ये ही जाते हैं। यहीं से नर्क में जाते हैं। स्त्रियों में ऐसा नहीं होता। भले ही स्त्री की प्रकृति अलग है, उसकी प्रकृति के अनुसार वह भी फल मिलता है और यह भी फल देती है। स्त्री की अजागृत प्रकृति है। अजागृत अर्थात् सहज प्रकृति।

प्रश्नकर्ता : कब तक हमें ऐसे सहन करना चाहिए?

दादाश्री : सहन करने से तो शक्ति बहुत बढ़ती है।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसे सहन ही करते रहें, ऐसा?

दादाश्री : सहन करने के बजाय उस पर सोचना अच्छा है। सोचकर उसका सोल्युशन निकालो। बाक़ी सहन करना गुनाह है। बहुत सहनशीलता हो जाए न, फिर स्प्रिंग की तरह उछलती है फिर, वह सारा घर तहस-नहस कर डालती है। सहनशीलता तो स्प्रिंग है। स्प्रिंग पर लोड नहीं डालना चाहिए कभी भी। वह तो, थोड़े समय के लिए ठीक है। अब रास्ते में आते-जाते किसी के साथ कुछ हुआ हो तब, वहाँ ज़रा यह स्प्रिंग इस्तेमाल

करनी है। यहाँ घर के लोगों पर 'लोड' नहीं डालना चाहिए। घर के लोगों का सहन करोगे तो क्या होगा? स्प्रिंग उछलेगी वह तो।

प्रश्नकर्ता : सहनशीलता की लिमिट कितनी रखें?

दादाश्री : उसे तो एक हद तक सहन करना। फिर सोचकर पता लगाओ कि क्या है यह वास्तव में। सोचने पर पता चलेगा कि इसके पीछे क्या है! केवल सहते ही रहोगे तो स्प्रिंग उछलेगी। सोचने की ज़रूरत है। विचारहीनता के कारण सहना पड़ता है। सोचोगे तो पता चलेगा कि इसमें भूल कहाँ हो रही है! उससे इसका सब समाधान निकल आएगा। भीतर अनंत शक्ति है, अनंत शक्ति! आप जो माँगो, वह शक्ति मिले ऐसी है। यह तो भीतर शक्ति खोजता नहीं और बाहर शक्ति खोजता है। बाहर कौन-सी शक्ति है?

सहन करने से ही घर-घर में विस्फोट होते हैं। मैं कितना सहन करूँ, मन में ऐसा ही मानते हैं। बाकी, सोचकर रास्ता निकालना चाहिए। जो संजोग मिले हैं, जो संजोग कुदरत का निर्माण हैं, फिर तू अब किस प्रकार से छूट पाएगा? नये बैर बँधे नहीं और पुराने बैर छोड़ देने हों तो उसका रास्ता निकालना चाहिए। यह जन्म बैर छोड़ने के लिए है, और बैर छोड़ने का रास्ता है; 'प्रत्येक के साथ समभाव से निकाल!' फिर देखो तुम्हारे बच्चे कितने संस्कारी होंगे!

प्रश्नकर्ता : मेरी सहेली का प्रश्न है कि उसके पति हमेशा उस पर गुस्सा होते हैं, तो इसका क्या कारण होगा?

दादाश्री : वह अच्छा है। लोग गुस्सा हों, इसके बजाय पति हो, वह अच्छा। घर के आदमी हैं न!

ऐसा है, ये लुहार यदि भारी लोहा हो और उसे मोड़ना हो, तब उसे गरम करते हैं। क्यों करते हैं? ठंडा नहीं मुड़ता ऐसा होता है, इसलिए लोहे को गरम करके फिर मोड़ता है। वह फिर दो हथौड़ियाँ मारे, उतने में मुड़ जाता है। जैसा बनाना हो वैसा बन जाता है। प्रत्येक वस्तु गरम होने पर मुड़ती ही है हमेशा। जितनी गरमी उतना कमज़ोर और कमज़ोर

यानी एक-दो हथौड़ी मारते ही उस पति की जैसी डिज़ाइन आपको चाहिए, वैसी बना देनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कैसी डिज़ाइन बनानी चाहिए, दादा? हाथ में आने के बाद क्या?

दादाश्री : आपको जैसी बनानी हो वैसी बन सकती है डिज़ाइन। अपने पति को तोते जैसा बना देती है। पत्नी बोले, 'आया राम', तब वह भी कहेगा, 'आया राम'। 'गया राम' बोले तो वह भी कहेगा, 'गया राम।' ऐसा तोते जैसा बन जाएगा। पर लोगों को हथौड़ी मारना भी नहीं आता न! वे सारी कमज़ोरियाँ हैं। गुस्सा हो जाना, कमज़ोरी है।

आप जा रहे हों और मकान पर से सिर पर एक पत्थर गिरे, और खून निकले, तो उस वक्त क्या बहुत गुस्सा करोगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो हैपन (हो गया) है।

दादाश्री : नहीं, मगर वहाँ पर गुस्सा क्यों नहीं करते? आपने किसीको देखा नहीं, तो गुस्सा कैसे होगा?

प्रश्नकर्ता : किसी ने जान-बूझकर मारा नहीं।

दादाश्री : अर्थात् हमारे पास कंट्रोल है क्रोध का। अतः यदि हम समझें कि जान-बूझकर कोई मारता नहीं, तो वहाँ कंट्रोल रख सकते हैं। कंट्रोल तो है ही। फिर कहते हैं, 'मुझे गुस्सा आ जाता है।' अरे, जहाँ पर नहीं आता है, वहाँ क्यों नहीं आता? पुलिसवाले के साथ, जब पुलिसवाला धमकाए, उस वक्त क्यों गुस्सा नहीं आता? उसे पत्नी पर गुस्सा आता है, बच्चों पर गुस्सा आता है, पड़ोसी पर गुस्सा आता है, 'अन्डर हैण्ड', (मातहत) पर गुस्सा आता है, पर 'बॉस' (मालिक) पर क्यों नहीं आता? गुस्सा मनुष्य को आ नहीं सकता। यह तो उसे अपनी मनमानी करनी है।

प्रश्नकर्ता : घर में या बाहर फ्रेन्ड्स में, सब जगह, प्रत्येक के मत अलग-अलग होते हैं और वहाँ हमारी मनमानी नहीं हो तो फिर हमें गुस्सा आता है, तब क्या करें?

दादाश्री : सभी लोग अपनी मनमानी करने जाएँ, तब क्या होगा? ऐसा विचार ही कैसे आए? तुरन्त ही ऐसा विचार आना चाहिए कि सभी यदि अपनी मनमानी करने जाएँगे, तो यहाँ पर आमने-सामने बर्तन तोड़ देंगे और खाने को भी नहीं रहेगा। इसलिए मनमानी कभी मत करना। धारणा ही मत करना ताकि उससे उल्टा हो ही नहीं। जिसे गरज़ होगी वह धारणा करेगा, ऐसा रखो।

प्रश्नकर्ता : हम कितने भी शांत रहें, लेकिन पुरुष गुस्सा हो जाते हैं, तब हम क्या करें?

दादाश्री : वे गुस्सा करें और झगड़ा करना हो तो आप भी गुस्सा करना, वर्ना बंद कर दो। फिल्म खत्म करनी हो तो ठंडी हो जाना और फिल्म खत्म नहीं करनी हो तो सारी रात चलने देना। कौन मना करता है? अच्छी लगती है फिल्म?

प्रश्नकर्ता : नहीं, फिल्म अच्छी नहीं लगती।

दादाश्री : गुस्सा करके क्या करना है? मनुष्य खुद गुस्सा नहीं होता। यह तो मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट में गुस्सा होता है। खुद गुस्सा नहीं होते। खुद को फिर मन में पछतावा होता है कि गुस्सा नहीं किया होता तो अच्छा होता।

प्रश्नकर्ता : उसे ठंडा करने का उपाय क्या?

दादाश्री : वह तो मशीन गरम हो गई हो, उसे ठंडी करनी हो तो थोड़ी देर रहने दो, तो अपने आप ठंडी हो जाएगी। हाथ लगाएँ और उससे छेड़खानी करें तो हम जल मरेंगे।

प्रश्नकर्ता : मेरे और मेरे पति के बीच गुस्सा और बहस हो जाती है। कहा-सुनी वगैरह हो जाती है, तो क्या करूँ मैं?

दादाश्री : गुस्सा तू करती है या वह? गुस्सा कौन करता है?

प्रश्नकर्ता : वे करते हैं, फिर मुझ से भी हो जाता है।

दादाश्री : तो आप भीतर ही खुद को डाँटना है, 'क्यों तू ऐसा करती

है?' जो किया वह भुगतना तो पड़ेगा न! लेकिन प्रतिक्रमण (पछतावा) करने से सभी दोष खत्म हो जाते हैं। वर्ना हमारे दिए हुए दुःख ही फिर हमें भुगतने पड़ते हैं। लेकिन प्रतिक्रमण करने से ज़रा ठंडा पड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु पति-पत्नी के बीच थोड़ा गुस्सा तो होना ही चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कोई कानून नहीं है। पति-पत्नी के बीच तो बहुत शांति रहनी चाहिए। दुःख हो, तो वे पति-पत्नी ही नहीं होते। फ्रेन्डशिप में नहीं होता, सच्ची फ्रेन्डशिप में नहीं होता। फिर यह तो सबसे बड़ी फ्रेन्डशिप है!! यहाँ नहीं होना चाहिए। यह तो लोगों ने घुसा दिया है, खुद को ऐसा होता है इसलिए घुसा दिया है कि नियम ऐसा ही है, कहते हैं! पति-पत्नी के बीच तो बिल्कुल नहीं होना चाहिए, चाहे और सब जगह भले ही हो।

प्रश्नकर्ता : हमारे शास्त्रों में लिखा है कि स्त्री है को पति को ही परमेश्वर समान मानना चाहिए और उसकी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए, तो अभी इस समय में इसका पालन कैसे करना चाहिए?

दादाश्री : वह तो पति यदि राम जैसे हों, तब हमें सीता बनना चाहिए। पति टेढ़ा हुआ हो, तब हम टेढ़े नहीं हों तो कैसे चलेगा? सीधा रहा जा सके तो उत्तम, लेकिन सीधा रह नहीं पाता। मनुष्य किस प्रकार सीधा रह सकता है? बार-बार परेशान करता रहता है फिर। फिर पत्नी भी क्या करे बेचारी? वह तो, पति को पति धर्म निभाना चाहिए और पत्नी को पत्नी धर्म निभाना चाहिए। पति की थोड़ी भूल होने पर, उसे निभा ले, वह 'स्त्री' कहलाती है। लेकिन घर आकर वह इतनी गालियाँ देने लगे, तब पत्नी क्या करे बेचारी?

प्रश्नकर्ता : पति ही परमात्मा है, वह क्या झूठ है?

दादाश्री : आज के पतियों को परमात्मा मानो, तो पागल होकर फिरें ऐसे हैं!

प्रश्नकर्ता : यों पति को परमेश्वर कहना चाहिए? उनके प्रतिदिन दर्शन करने चाहिए? उनका चरणामृत पीना चाहिए?

दादाश्री : वह उसे परमेश्वर कहे, मगर वह मरनेवाले न हों, तो परमेश्वर। जो मर जानेवाले हैं, वे काहे के परमेश्वर! पति परमेश्वर काहे का? इस समय के पति परमेश्वर होते होगें?

प्रश्नकर्ता : मैं तो प्रतिदिन चरण स्पर्श करती हूँ पति के।

दादाश्री : ऐसा करके पति को छलती होगी। पति को छलती होगी पैर छूकर। पति यानी पति और परमेश्वर यानी परमेश्वर। वह पति भी कहाँ कहता है कि 'मैं परमेश्वर हूँ'? 'मैं तो पति हूँ' ऐसा ही कहता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, 'पति हूँ' ऐसा ही कहते हैं।

दादाश्री : हं..., ऐसे तो गाय का भी पति होता है, सभी पति होते हैं। सिर्फ आत्मा ही परमेश्वर है, शुद्धात्मा!

प्रश्नकर्ता : चरणामृत पी सकते है?

दादाश्री : आज के लोग, दुर्गंधवाले लोगों का चरणामृत कैसे पी सकते हैं! यह मनुष्य गंध मारते हैं, ऐसे बैठा हो, फिर भी गंध मारता है। वह तो पहले सुगंधवाले लोग थे, तब की बात अलग थी। आज तो सभी लोग गंध मारते हैं। हमारा सिर भी फटने लगे। जैसे-तैसे करके दिखावा करना है कि पति-पत्नी हैं हम।

प्रश्नकर्ता : अब तो सभी ने वह केन्सल कर दिया है। अब सब औरतें पढ़ी-लिखी हैं न, इसलिए सभी ने वह परमेश्वर पद हटा दिया है।

दादाश्री : पति परमेश्वर बन बैठे हैं, देखो न! उनके हाथ में किताब लिखने की सत्ता। इसलिए कौन कहनेवाला! एक तरफ कर डाला न? ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आजकल की औरतें अपने पति को पहले की औरतों जैसा सम्मान नहीं देतीं।

दादाश्री : हाँ, पहले के पति 'राम' थे और अभी के 'मरा' हैं।

प्रश्नकर्ता : यह कहती है यमराज।

प्रश्नकर्ता : पति के प्रति पत्नी का कर्तव्य क्या है, वह समझाइए।

दादाश्री : स्त्री को हमेशा पति के प्रति सिन्सियर (वफादार) रहना चाहिए। पति को पत्नी से कहना चाहिए कि 'तुम सिन्सियर नहीं रहोगी तो मेरा दिमाग़ बिगड़ जाएगा।' उसे तो चेतावनी देनी ही चाहिए। 'बीवेयर' करना, लेकिन दबाव नहीं डाल सकते कि तुम सिन्सियर रहो। किन्तु उसे 'बीवेयर' कह सकते हैं। सिन्सियर रहना चाहिए सारी ज़िंदगी। रात-दिन सिन्सियर, उनकी ही चिंता होनी चाहिए। तुम्हें उनकी चिंता रखनी चाहिए तभी संसार ठीक से चलेगा।

प्रश्नकर्ता : पतिदेव सिन्सियर नहीं रहे, तब फिर पत्नी का दिमाग़ खराब हो जाए तो पाप नहीं लगता न?

दादाश्री : दिमाग़ खराब हो तो वह स्वाद चखता है न! पति भी स्वाद चखता है न बाद में! ऐसा नहीं करना चाहिए। एज़ फार एज़ पोसिबल (जहाँ तक हो सके) पति की इच्छा नहीं हो और भूलचूक हो जाती हो तो पति को उसके लिए क्षमा माँग लेनी चाहिए, कि 'मैं क्षमा चाहता हूँ, फिर से ऐसा नहीं होगा।' सिन्सियर तो रहना चाहिए न मनुष्य को? सिन्सियर नहीं रहे तो कैसे चलेगा?

प्रश्नकर्ता : माफ़ी माँग लेते हैं पति, बात-बात में माफ़ी माँग लेते हैं, लेकिन फिर वैसा ही करें तब?

दादाश्री : पति माफ़ी माँगे तो नहीं समझ जाना चाहिए कि बेचारा कितनी लाचारी का अनुभव कर रहा है! इसलिए लेट गो करना। उसे उसकी 'हेबिट' (आदत) नहीं पड़ी है। 'हेबिच्युएटेड' (आदी) नहीं हुआ है। उसे भी पसंद नहीं होता मगर क्या करे? बरबस ऐसा हो जाता है। भूलचूक तभी होती है न!

प्रश्नकर्ता : पति को हेबिट (आदत) हो गई हो, तो क्या करें?

दादाश्री : क्या करोगी? क्या फिर? क्या उसे निकाल दोगे? निकाल दो तो फज़ीहत होगी बाहर! बल्कि ढककर रखना चाहिए, और क्या हो

सकता है! गटर को ढकते हैं या खुला रखते हैं? इन गटरों का ढक्कन ढक देना चाहिए या खुला रखना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : बंद रखना चाहिए।

दादाश्री : वर्ना यदि खोलें तो बदबू आएगी, अपना सिर घूम जाए।

प्रश्नकर्ता : ये बिंदी क्यों लगाते हैं? अमरीका की बहुत-सी औरतें हमें पूछती हैं कि तुम लोग यहाँ बिंदी क्यों लगाती हो?

दादाश्री : हाँ, बिंदी इसलिए कि हम आर्य स्त्रियाँ हैं, इसलिए। हम अनार्य नहीं हैं। आर्य स्त्रियाँ बिंदीवाली होती हैं। अर्थात् पति से चाहे कितना भी झगड़ा हो, फिर भी वह घर छोड़कर चली नहीं जाती और बिना बिंदीवाली तो दूसरे दिन ही चली जाए। और यह तो स्टेडी (स्थिर) रहती है, बिंदीवाली। यहाँ मन का स्थान है, वह एक पति में मन एकाग्र रहे, इसलिए।

प्रश्नकर्ता : स्त्रियों को क्या करना चाहिए? पुरुषों का तो आपने बताया, मगर स्त्रियों को दोनों आँखो में क्या रखना चाहिए?

दादाश्री : स्त्रियों को तो, उन्हें चाहे कैसा भी पति मिला हो, जो भी पति मिले हैं, वह अपने हिसाब का है। पति मिलना, वह कोई गप नहीं। अत:, जो पति मिला उसके प्रति एक पतिव्रता बनने का प्रयत्न करना। और अगर ऐसा नहीं हो सके, तो उसके लिए फिर क्षमापना करो। पर तेरी दृष्टि ऐसी होनी चाहिए। और पति के साथ पार्टनरशिप (साझेदारी) में किस प्रकार आगे बढ़ें, उर्ध्वगति हो, किस प्रकार मोक्ष प्राप्त हो, ऐसे विचार करो!

परिणाम, तलाक़ के

मतभेद पसंद हैं? मतभेद हों, तब झगड़े होते हैं, चिंता होती है, तो मनभेद से क्या होता है? मनभेद होने पर 'डायवोर्स' ले लेते हैं और तनभेद हो तब अर्थी निकलती है!

प्रश्नकर्ता : व्यवहारिक मामलों में जो मतभेद होते हैं, वे विचारभेद कहलाते हैं या मतभेद कहलाते हैं?

दादाश्री : वह मतभेद कहलाता है। यह ज्ञान लिया हो तो उसे विचारभेद कहते हैं, वर्ना फिर मतभेद कहलाता है। मतभेद से तो झटका लगता है!

प्रश्नकर्ता : मतभेद कम रहें तो वह अच्छा है न?

दादाश्री : मनुष्यों में मतभेद होना ही नहीं चाहिए। यदि मतभेद है, तो तब वह मानवता ही नहीं कहलाती। क्योंकि मतभेद में से कभी मनभेद हो जाता है। मतभेद से मनभेद हो जाए तो 'तू ऐसी है और तू अपने घर चली जा' ऐसा कहने लगता है। इसमें फिर मज़ा नहीं रहता। जैसे-तैसे निभा लेना।

प्रश्नकर्ता : अभी तो ठेठ मतभेद तक पहुँच गया है।

दादाश्री : वही कह रहा हूँ, वह सब अच्छा नहीं है। बाहर शोभा नहीं देता। इसका कोई अर्थ नहीं है। अभी भी सुधारा जा सकता है। हम मनुष्य हैं, इसलिए सुधारा जा सकता है। किसलिए ऐसा होना चाहिए? अरे, फ़जीहत करते रहते हैं? कुछ समझना तो पड़ेगा न? समझे न आप? इन सभी में सुपरफ्लुअस रहना है, जब कि स्त्री के पति बन बैठे हैं, कुछ लोग तो! अरे! स्वामित्व क्यों जताता है? यह तो यहाँ जीया, तब तक स्वामी और कल डायवोर्स न ले, तब तक स्वामी। कल बीवी डायवोर्स ले, तब तू किसका स्वामी?

प्रश्नकर्ता : आजकल सभी डायवोर्स लेते हैं, तलाक़ लेते हैं, वे छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर तलाक़ लेते हैं, तो उनकी हाय नहीं लगती?

दादाश्री : लगती है न मगर क्या करे वह? वास्तव में तलाक़ नहीं लेना चाहिए। सच पूछो तो निबाह लेना चाहिए सब। बच्चे होने से पहले लिया होता तो हर्ज नहीं था, लेकिन यदि बच्चे होने के बाद तलाक़ ले तो बच्चों की हाय लगती है न!

प्रश्नकर्ता : बच्चों के बाप का ज़रा भी दिमाग़ नहीं चले, कुछ कामकाज नहीं करे, मोटल चलाना नहीं आए और चार दीवारी के बीच घर में बैठा रहे, तो क्या करें?

दादाश्री : क्या करोगी लेकिन? दूसरा सीधा मिलेगा या नहीं, उसका क्या भरोसा?

प्रश्नकर्ता : वह तो चाहिए ही नहीं।

दादाश्री : दूसरा अगर उससे भी खराब मिले, तब क्या करोगी? कई स्त्रियों को मिला है ऐसा। पहला पति था वह अच्छा था। अरे, घनचक्कर! तो फिर जहाँ थी वहीं पड़े रहना था न! अंदर से ऐसा समझना चाहिए या नहीं?

प्रश्नकर्ता : दादा को सौंप दें, फिर दूसरा सीधा मिलेगा न?

दादाश्री : अच्छा मिला और तीन साल बाद उसे अटेक आया, तब क्या करोगी? इस निरे भयवाले संसार में किसलिए यह सब.... जो हुआ वही करेक्ट कहकर चला लो तो अच्छा।

पहला पति सदैव अच्छा निकलता है, लेकिन दूसरा तो आवारा ही होगा। क्योंकि वह भी ऐसा ही ढूँढता है। आवारा ही खोजता है और वह खुद भी आवारा होता है, तभी दोनों इकट्ठे होंगे न! भटके हुए दोनों मिल जाते हैं। इसके बजाय तो पहलेवाला अच्छा। खराब हो, बेकार हो लेकिन अपना देखा-भाला तो है न! अरे! ऐसा तो नहीं ही होगा न! वह रात को गला तो नहीं दबा देगा न! ऐसा तुम्हें भरोसा होता है न! जब कि वह दूसरावाला तो गला भी दबा दे!

बच्चों की खातिर भी खुद को समझना चाहिए। एक या दो बच्चे हों मगर वे बेचारे बेसहारा ही हो जाएँगे न! बेसहारा नहीं माने जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : बेसहारा ही माने जाएँगे!

दादाश्री : माँ कहाँ गई? पापा कहाँ गए? एक बार खुद का एक पाँव कट गया हो, तब एक जन्म गुजारा नहीं करते या आत्महत्या कर लेते हैं?

पति बुरा नहीं लगता, ऐसा लगेगा तब क्या करोगी? फिर पति का दिमाग़ ज़रा आड़ा-टेढ़ा हो, लेकिन शादी की है तो मेरा पति, अर्थात् मेरा

सबसे अच्छा-बेस्ट, ऐसा कहना। अतः बुरे जैसा कुछ दुनिया में होता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : बेस्ट कहें तब तो पति सिर पर चढ़ जाएँगे।

दादाश्री : नहीं, सिर पर नहीं चढ़ेंगे। वे सारा दिन बेचारे बाहर काम करते रहते हैं, वे क्या सिर पर चढ़ेंगे? पति तो जैसा आपको प्राप्त हुआ हो, उसीको निबाह लेना, दूसरा थोड़े ही लेने जाएँगे? बिकाऊ मिलते हैं? कुछ उल्टा-सीधा करो और डायवोर्स लेना पड़े, वह तो गलत दिखेगा बल्कि। वह भी पूछेगा, डायवोर्सवाली है, तब और कहाँ जाओगी? इसके बजाय एक से शादी की तो निकाल कर लो वहीं पर। अर्थात् सब जगह ऐसा होता है। और उसकी हमसे नहीं बनती नहीं हो, पर वह क्या करे? अब जाए कहाँ? इसलिए इसीका निकाल कर देना। हम इन्डियन, कितने पति बदलें? यह एक बनाया वही... जो मिला वह सही। इस तरह निबाह लेना। और पुरुषों को कैसी भी स्त्री मिली हो, क्लेश करती हो, फिर भी उसके साथ निबाह लेना अच्छा। वह क्या पेट में काटनेवाली है? वह तो बाहर शोर मचाती है अथवा मुँह पर गालियाँ देती हैं, पेट में घुसकर काटे तब आप क्या करोगे? उसके जैसा है यह सब। रेडियो ही है। पर यह आपको ऐसे पता नहीं चलेगा कि यह वास्तव... आपको तो ऐसा ही लगता है कि यह सब सचमुच वही कर रही है। फिर उसे भी पछतावा होता है, कि अरे, मुझे नहीं कहना चाहिए था और मुँह से निकल गया। तब तो फिर वह करती है या रेडियो करता है?

एक स्त्री का संसार मुंबई में फ्रेक्चर होने जा रहा था। पति ने दूसरा गुप्त संबंध रखा होगा और इस स्त्री को तो पता चल गया, इसलिए ज़बरदस्त झगड़े होने लगे। फिर उस औरत ने मुझे बताया कि 'ये ऐसे हैं, मैं क्या करूँ? मुझे भाग जाना है।' मैंने कहा, एक पत्नीव्रत का कानून पाल रहा हो, वैसा मिले तो भाग जाना। वर्ना दूसरा क्या अच्छा मिलेगा? वैसे तो एक ही रखी है न? तब कहे, 'हाँ, एक ही है।' तब मैंने कहा, 'ठीक है, लेट गो कर (चला ले), दिल बड़ा कर दे। तुझे इससे अच्छा दूसरा नहीं मिलेगा।'

कलियुग में तो पति भी अच्छा नहीं मिलता और पत्नी भी अच्छी नहीं मिलती। यह सारा माल ही कूड़ा-करकट जैसा है न! माल पसंद करने जैसा है ही नहीं। इसलिए यह तुझे पसंद नहीं करना है, यह तो तुझे हल निकालना है। यह कर्मों का हिसाब चुकाना है, इसलिए निपटाना है। जब कि लोग आराम से मानो सचमुच ही पति-पत्नी बनने जाते हैं! अरे, निपटारा ला न इधर से। किसी भी तरह से क्लेश कम हों, उस प्रकार हल निकालना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, उन्हें ऐसा संयोग मिला, वह भी हिसाब से ही हुआ होगा न?

दादाश्री : बिना हिसाब तो ऐसा मिले ही नहीं न!

संसार है इसलिए घाव तो पड़ेंगे ही न! और बाई साहब भी कहेंगी कि अब घाव भरेगा नहीं। लेकिन संसार में मग्न हुए कि फिर घाव भर जाते हैं। मूर्छा है न! मोह के कारण मूर्छा है। मोह के कारण घाव भर जाते हैं। यदि घाव नहीं भरते, तब तो वैराग्य ही आ जाता न! मोह किसे कहते हैं? कई सारे अनुभव हुए होते हैं, पर भूल जाता है। 'डायवोर्स' लेते समय तय करता है कि अब किसी स्त्री से शादी नहीं करनी है, लेकिन फिर भी वापस कूद पड़ता है!

प्रश्नकर्ता : मैं उनसे कह रहा था कि हमारे विवाहित जीवन में निन्यानवे प्रतिशत बेमेल जोड़े हैं।

दादाश्री : हमेशा ही जिसे बेमेल जोड़ा कहा जाता है न, कलियुग में जो बेमेल जोड़ा हो तो वह बेमेल जोड़ा ही ऊपर ले जाएगा अथवा एकदम अधोगति में ले जाएगा। दोनों में से एक कार्यकारी होता है और सजोड़ा कार्यकारी नहीं होता। बेमेल जोड़ा है, इसलिए उच्च गति में ले जाएगा और सजोड़ा तो ऐसे भटकाता है साथ-साथ में।

बेमेल जोड़े में कैसा होना चाहिए कि वह बिगड़े तब हमें शांत रहना चाहिए, यदि हम समझदार हों तो। लेकिन वह बिगड़े और हम भी बिगड़े, उसमें रहा क्या?

प्रश्नकर्ता : डायवोर्स, ऐसे कैसे संयोग होने पर डायवोर्स लेना चाहिए?

दादाश्री : यह डायवोर्स तो अभी निकले हैं। पहले डायवोर्स थे ही कहाँ?

प्रश्नकर्ता : अभी तो हो रहे हैं न? तो किन संयोगों में वह सब करना चाहिए?

दादाश्री : कहीं भी मेल नहीं खाता हो, तब अलग हो जाना अच्छा। एडजस्टेबल हो ही नहीं तो अलग हो जाना बेहतर। वर्ना हम तो एक ही बात कहते हैं कि 'एडजस्ट एवरीव्हेर' दूसरे दो को कहकर गुणन करने मत जाना कि, 'ऐसा है और वैसा है।'

प्रश्नकर्ता : इस अमरीका में जो डायवोर्स लेते हैं, वह खराब कहलाएगा या आपस में बनती न हो और वे लोग डायवोर्स लेते हैं, वह?

दादाश्री : डायवोर्स लेने का अर्थ ही क्या है लेकिन! ये क्या कप-प्लेट हैं? कप-प्लेट अलग-अलग नहीं बाँटते। उनका डायवोर्स नहीं करते, तो इन मनुष्यों का तो डायवोर्स करते होंगे? उन लोगों के लिए, विदेशियों के लिए ठीक है, किन्तु आप तो इन्डियन हो। जहाँ एक पत्नीव्रत और एक पतिव्रत के नियम थे। एक पत्नी के अलावा दूसरी स्त्री को देखना मत, ऐसा कहते थे। ऐसे विचार थे। वहाँ डायवोर्स के विचार शोभा देते हैं? डायवोर्स माने झूठे बर्तन बदलना। भोजन के बाद झूठे बर्तन दूसरे को देना फिर, फिर तीसरे को देना। निरे झूठे बर्तन बदलते रहना, उसका नाम डायवोर्स। पसंद है तुझे डायवोर्स?

कुत्ते, जानवर सभी डायवोर्सवाले हैं और ये फिर मनुष्य भी वही करें तो फिर फ़र्क़ ही क्या रहा? मनुष्य बीस्ट (जानवर) जैसा ही हो गया। आपने हिन्दुस्तान में तो एक शादी के बाद दूसरी शादी नहीं करते थे। वे तो, यदि पत्नी की मृत्यु हो जाए तो शादी भी नहीं करते थे, ऐसे लोग थे! कैसे पवित्र लोग जन्मे थे!

अरे, तलाक़ लेनेवालों का मैं घंटेभर में मेल करा दूँ फिर से! तलाक़

लेना हो, उसे मेरे पास लाओ तो मैं एक ही घंटे में ठीक कर दूँ। फिर वे दोनों साथ रहेंगे। डर मात्र नासमझी का है। कई अलग हो चुके जोड़ों का ठीक हो गया है।

हमारे संस्कार हैं ये तो। लड़ते-लड़ते दोनों को अस्सी साल हो जाएँ, फिर भी मरने के बाद तेरहवें के दिन शैय्यादान करते हैं। शैय्यादान में चाचा को यह भाता था और यह पसंद था, चाची सब बम्बई से मँगाकर रखती हैं। तब एक लड़का था न, वह अस्सी साल की चाची से कहता है, 'माँजी, चाचा ने तो आपको छह महीने पहले गिरा दिया था। उस वक्त तो आप उल्टा बोल रही थीं चाचा के बारे में।' 'फिर भी, ऐसे पति नहीं मिलेंगे' कहने लगी। ऐसा कहा उन बुज़ुर्ग महिला ने। सारी ज़िंदगी के अनुभव में से ढूँढ निकालती हैं कि 'पर वे दिल के बहुत अच्छे थे। यह प्रकृति टेढ़ी थी पर दिल के...'

लोग देखें, ऐसा हमारा जीवन होना चाहिए। हम इन्डियन हैं। हम विदेशी नहीं हैं। हम स्त्री को निबाह लें और स्त्री हमें निबाहे, ऐसा करते करते अस्सी साल तक चलता है। जब कि वे (फोरेनर्स) तो एक घंटा भी नहीं निभाएँ और पति भी एक घंटा भी नहीं निभाएँ।

हर किसी की प्रकृति के पटाखे फूट रहे हैं। ये पटाखे कहाँ से आए?

प्रश्नकर्ता : उनकी प्रकृति के हैं।

दादाश्री : जब हम समझें कि 'यह फूटेगा ही' तब फुस हो जाता है! फुस्स.... फुस हो जाता है। नहीं हो जाता?

और मन अगर फरियाद करे कि 'कितना अधिक बोल गए!' तब मन से कहना, 'सो जा, वे घाव अभी भर जाएँगे' ठीक हो जाएँगे। घाव भर जाएँगे तुरंत... कंधा थपथपाओ तो सो जाएगा। तेरे घाव भर गए न सब! नहीं? जो घाव पड़े हुए थे वे?

प्रश्नकर्ता : झगड़ा हो, तब भी भरा हुआ माल निकलता है?

दादाश्री : जब झगड़ा होता है, तब भीतर नया माल भरता है, लेकिन यह ज्ञान मिलने के बाद भरा हुआ माल निकल जाता है।

प्रश्नकर्ता : यों तो पति झगड़ा कर रहा हो और उस समय मैं प्रतिक्रमण करूँ तो?

दादाश्री : तो हर्ज नहीं।

प्रश्नकर्ता : तब भरा हुआ माल निकल जाएगा न सारा?

दादाश्री : तब तो सारा निकल जाएगा। जहाँ पर प्रतिक्रमण हो वहाँ माल निकल जाता है। प्रतिक्रमण ही सिर्फ एक उपाय है इस जगत् में।

पति डाँटे तब क्या करोगी अब?

प्रश्नकर्ता : समभाव से *निकाल* कर देंगे।

दादाश्री : ऐसा! चली नहीं जाओगी अब?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : वे चले जाएँ, तब क्या करोगी तुम अब? 'मुझे तुम्हारे साथ नहीं जमेगा' ऐसा कहे तब?

प्रश्नकर्ता : बुला लाऊँगी। माफ़ी माँगकर पाँव पड़कर वापस बुला लाऊँगी।

दादाश्री : हाँ, बुला लाना। समझा-बुझाकर सिर पर हाथ रखकर, सिर पर हाथ फेरकर ... ऐसा भी करना कि वे चुप हो जाएँ फिर।

अक़्ल से ही यदि काम होता हो तो अक़्ल इस्तेमाल करना। फिर दूसरे दिन वह आपसे कहे, 'तूने मेरे पैर छुए थे न?' तब कहना वह बात अलग थी। तुम क्यों भाग रहे थे, नासमझी कर रहे थे, इसलिए छुए! वह समझे कि इसने सदा के लिए छुए, वह तो उस समय के लिए ही, ऑन द मोमेन्ट (उस क्षण के लिए) था!

सप्तपदी का सार

जीवन जीने की कला इस काल में है नहीं। मोक्ष का मार्ग तो जाने दो, मगर जीवन जीना तो आना चाहिए न? बात ही समझनी है कि इस

रास्ते पर ऐसा है और इस रास्ते पर ऐसा है। फिर तय करना कि किस राह जाना? समझ में नहीं आये तो 'दादा' से पूछ लेना, तब 'दादा' तुम्हें दिखाएँगे कि ये तीन रास्ते जोखिमवाले हैं और यह रास्ता बिना जोखिमवाला है, उस राह पर हमारे आशीर्वाद लेकर चलना है।

शादी-शुदा को लगे कि हम तो फँस गए उलटे! कुंवारों को लगता है कि ये लोग मज़े कर रहे हैं! इन दोनों के बीच का अंतर कौन दूर करेगा? और शादी किए बगैर चले, ऐसा भी नहीं है इस दुनिया में! तो किसलिए शादी करके दु:खी होना? ये लोग दु:खी नहीं होते, एक्सपीरियन्स ले रहे हैं। संसार सही है या गलत, सुख है या नहीं? वह हिसाब निकालने के लिए संसार है। आपने निकाला कुछ हिसाब अपने बहीखाते का?

सारा संसार कोल्हू के समान है। पुरुष बैल की जगह पर है और स्त्रियाँ तेली की जगह पर। वहाँ तेली गाता है और यहाँ स्त्री गाती है! और बैल आँख पर ढक्कन लगाए तान में ही चलता रहता है! गोल-गोल घूमता रहता है। ऐसे ही सारा दिन यह बाहर काम करता है और समझता है कि काशी पहुँच गया होऊँगा! और पट्टी खोलकर देखे तो भाईसाहब वहीं के वहीं! फिर उस बैल को क्या करता है वह तेली? फिर थोड़ी खली बैल को खिलाता है तो बैल खुश होकर फिर से शुरू हो जाता है। वैसे ही इसमें औरत अच्छा खाना खिलाए कि भाई आराम से खाकर फिर से शुरू!

बाकी ये दिन कैसे गुज़ारें, यह भी मुश्किल हो गया है। पति आकर कहेगा कि, 'मेरे हार्ट में दर्द है।' लड़का आकर कहेगा कि 'मैं फेल हो गया' पति के हार्ट में दर्द हो तब पत्नी को विचार आता है कि 'हार्ट फेल' हो गया तो क्या होगा, सभी तरह के विचार घेर लेते हैं। चैन नहीं लेने देते।

शादी की क़ीमत कब होती? लाखों लोगों में से एकाध आदमी को शादी करने को मिलती, तब। यह तो सभी शादी करते हैं, उसमें क्या? स्त्री-पुरुष का (शादी के बाद) व्यवहार कैसा होना चाहिए, उसका तो बहुत बड़ा कॉलेज है। ये तो पढ़े बिना शादी कर लेते हैं।

अब, एक बार अपमान हो, तो अपमान सहन करने में हर्ज नहीं,

पर साथ ही अपमान को लक्ष्य में रखने की ज़रूरत है कि क्या अपमान के लिए जीवन है? अपमान में हर्ज नहीं, पर मान की भी ज़रूरत नहीं और अपमान की भी ज़रूरत नहीं है। लेकिन क्या हमारा जीवन अपमान के लिए है? ऐसा लक्ष्य तो होना चाहिए न?

बीवी रूठी हुई हो, तब तक भगवान को याद करता है और बीवी बात करने आई तो भाई तैयार! फिर भगवान और बाकी सब-कुछ एक ओर! कैसी उलझन! इस तरह क्या दु:ख मिट जानेवाले हैं?

संसार यानी क्या? जंजाल। यह शरीर मिला है, वह भी जंजाल है! जंजाल का भी कहीं शौक़ होता होगा? इसके प्रति रूचि रहती है यह भी एक आश्चर्य है न! मछली का जाल अलग और यह जाल अलग! मछली के जाल में से काट-कूटकर निकला जा सकता है पर इस में से निकला ही नहीं जा सकता। ठेठ जब अर्थी उठे, तब निकल पाते हैं!

'ज्ञानीपुरुष' इस संसार जाल से निकलने का रास्ता दिखाते हैं, मोक्षमार्ग दिखाते हैं और सही राह पर ला देते हैं और हमें लगता है कि हम इस जंजाल में से मुक्त हुए!

इसे जीवन कैसे कहें? जीवन कितना सुशोभित होता है! एक-एक मनुष्य की सुगंध आनी चाहिए। आस-पड़ोस में कीर्ति फैली हुई हो कि कहना पड़ेगा, 'ये सेठजी हैं न, ये कितने अच्छे हैं, इनकी बातें कितनी सुंदर, इनका वर्तन कितना सुंदर!' ऐसी कीर्ति सभी ओर दिखाई देती है? ऐसी सुगंध आती है लोगों की?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी, किसी-किसी की सुगंध आती है।

दादाश्री : किसी-किसी मनुष्य की, पर वह भी कितनी? और अगर उनके घर जाकर पूछो तो दुर्गंध देता है। बाहर सुगंध आती है, पर घर जाकर पूछो तो कहेंगे कि, 'उनका नाम ही मत लो, उनकी तो बात ही मत करना।' अत: यह सुगंध नहीं कहलाती।

जीवन तो मदद करने के लिए ही होना चाहिए। यह अगरबत्ती जब सुलगती है, उसमें खुद की सुगंध लेती है वह?

और यह जो संसार है वह म्यूज़ियम है। म्यूज़ियम में शर्त क्या है? प्रवेश करते ही लिखा हुआ है कि भाई, तुम्हें जो खाना-पीना हो, इसे भोगना हो तो अंदर भोगना। कुछ भी बाहर लेकर नहीं निकलना है और लड़ना नहीं है। किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं करने है। खाना-पीना सभी-कुछ लेकिन राग-द्वेष नहीं। जब कि यह तो अंदर जाकर शादी रचाता है। अरे, शादी कहाँ रचाई?! बाहर जाते समय फज़ीहत होगी! तब फिर वह कहेगा कि मैं बंध गया। कानून के अनुसार भीतर जाएँ और खाएँ-पीएँ, शादी करें तो भी हर्ज नहीं। स्त्री से कह देना, 'देखो यह संसार एक संग्रहस्थान है, इसमें राग-द्वेष मत करना। जब तक ठीक लगे तब तक घूमना-फिरना, लेकिन आखिर में हमें बिना राग-द्वेष निकल जाना है।' उस पर द्वेष भी नहीं। कल सवेरे दूसरे के साथ घूम रही हो तब भी उस पर द्वेष नहीं, यह संग्रहस्थान ऐसा है। फिर आपको जितनी-जितनी युक्तियाँ करनी हो, उतनी करना। अब संग्रहस्थान को दूर नहीं कर सकते, जो हुआ वही सही है अब तो। हम संस्कारी देश में जन्मे हैं न, इसलिए मेरिज-वेरिज सब-कुछ तरीके से होना चाहिए!

पति-पत्नी के प्राकृतिक पर्याय

प्रश्नकर्ता : औरतों को आत्मज्ञान हो सकता है या नहीं? समकित हो सकता है?

दादाश्री : वास्तव में नहीं हो सकता, पर हम यहाँ करवाते हैं। क्योंकि प्रकृति की वह कक्षा है ही ऐसी कि आत्मज्ञान पहुँचता ही नहीं। क्योंकि स्त्रियों में कपट की ग्रंथि इतनी बड़ी होती है, मोह और कपट की, वे दो ग्रंथियाँ आत्मज्ञान को छूने नहीं देतीं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् व्यवस्थित का अन्याय हुआ न वह तो?

दादाश्री : नहीं, वह तो दूसरे जन्म में पुरुष होकर बाद में मोक्ष में जाएगी। ये सभी कहते हैं कि स्त्रियाँ मोक्ष में नहीं जा सकतीं, तो वह बात एकांतिक नहीं है। पुरुष होकर फिर जाती हैं। ऐसा कोई कानून नहीं है कि स्त्रियाँ स्त्री ही रहेंगी। वे पुरुष जैसी कब होंगी कि जब वे पुरुष

के साथ स्पर्धा में रही हों और अहंकार बढ़ता जाए, क्रोध बढ़ता ही जाए, तब वह स्त्रीपन उड़ जाता है। अहंकार और क्रोध की प्रकृति पुरुष की और माया और लोभ की प्रकृति स्त्री की, ऐसा करके चली यह गाड़ी। पर हमारा यह अक्रम विज्ञान ऐसा कहता है कि स्त्रियों का भी मोक्ष हो सकता है। क्योंकि यह विज्ञान आत्मा जगाता है। आत्मज्ञान नहीं हो पाए, तो भी हर्ज नहीं, पर आत्मा को जगाता है। कितनी स्त्रियाँ ऐसी हैं कि दादा निरंतर चौबीसों घंटे याद रहते हैं! हिन्दुस्तान में कितनी ही और अमरीका में कितनी होंगी कि जिन्हें दादा चौबीसों घंटे याद रहते हैं!

प्रश्नकर्ता : अत: आत्मा की कोई जाति ही नहीं है न?

दादाश्री : आत्मा की जाति होती ही नहीं न! प्रकृति की जाति होती है। उजला माल भरा हो तो उजला निकलता है। काला भरा हो तो काला निकलता है। प्रकृति, वह भी भरा हुआ माल है। जो माल भरा है वह प्रकृति और वैसे पुद्गल कहलाता है। अर्थात् पूरण किया उसका गलन होता रहता है। भोजन का पूरण किया, तो उसका संडास में गलन होता है। पानी पीया, तो वह पेशाब में, श्वाच्छोश्वास, सभी पुद्गल परमाणु।

पुरुष होना हो तो ये दो गुण छूटें तब हो जाएगा, मोह और कपट। मोह और कपट दो तरह के परमाणु इकट्ठे हों तो स्त्री बनता है और क्रोध और मान इकट्ठा हों तो पुरुष बनता है। परमाणु के आधार पर यह सब हो रहा है।

एक बार बहनों ने मुझसे पूछा कि हमारे कुछ विशिष्ट दोष होते हैं, उनमें ज़्यादा नुक़सानदायक दोष कौन-सा है? तब मैंने कहा, 'अपनी मनमानी करवाना चाहे वह।' सभी बहनों की इच्छा ऐसी होती है कि अपनी मरजी के मुताबिक करवायें। पति को भी उलटी राह पर ले जाकर उससे अपना मनचाहा करवाती हैं। यह गलत, उल्टा रास्ता है। मैंने उन्हें लिखवाया है कि यह रास्ता नहीं होना चाहिए। मरज़ी के मुताबिक करवाने का अर्थ क्या है? बहुत ही नुक़सानदायक!

प्रश्नकर्ता : परिवार का भला होता हो, ऐसा हम करवायें तो उसमें क्या गलत है?

दादाश्री : नहीं, वह भला कर ही नहीं सकती न! जो मरज़ी के मुताबिक करते हों, वे परिवार का भला नहीं करते, कभी भी परिवार का भला कौन कर सकता है कि 'सभी की मरज़ी के मुताबिक हो, इस तरह से हो तो अच्छा' वह परिवार का भला कर सकता है। सभी का किसी का भी मन न दुःखे, इस प्रकार हो तब। जो अपनी मरज़ी के मुताबिक करवाना चाहे, वह तो परिवार का भारी नुक़सान करता है। वह तकरार और झगड़ा करने का साधन है। मरज़ी के मुताबिक न हो तो फिर खाती भी नहीं, दुःखी हो कर बैठी रहती है। किसे मारने जाए, मन मारकर बैठी रहती है फिर। लेकिन दूसरे दिन फिर कपट करती है। वह कुछ जाएगा थोड़े? मरज़ी के मुताबिक करना चाहे, पर नहीं हो तब क्या होगा? ऐसा सब नहीं रखना चाहिए। बहनों, अब आप उदार दिलवाली बन जाओ।

प्रश्नकर्ता : स्त्रियाँ अपने आँसुओं के द्वारा पुरुषों को पिघला देती हैं और खुद का जो गलत है उसे भी सत्य ठहरा देती हैं। इस बारे में आपका क्या कहना है?

दादाश्री : बात सच्ची है। उसका गुनाह उन्हें लगेगा और ऐसा आग्रह रखती है न, इसलिए विश्वास उठ जाता है।

किसी के पति भोले हों तो वे उँगली ऊँची करें। जिन्होंने उंगली ऊँची की न, वे अकेले में मुझसे कह देती हैं, 'हमारे पति भोले हैं, सभी भोले हैं।' यह इटसेल्फ सूचित करता है कि ये स्त्रियाँ तो पति को नचाती हैं। इसे ज़ाहिर करना बुरा दिखेगा। बुरा नहीं दिखेगा? ज़्यादा नहीं कह सकते। अकेले में स्त्री से पूछें कि 'बहन, आपके पति भोले हैं?' 'बहुत भोले'। माल कपट का भरा हुआ है परंतु ऐसा कह नहीं सकते, बुरा दिखता है। अन्य गुण बहुत सुंदर हैं।

प्रश्नकर्ता : स्त्री को एक और तो लक्ष्मी कहते हैं और दूसरी ओर कपटवाली, मोहवाली...

दादाश्री : लक्ष्मी कहते हैं। तो क्या वह कुछ ऐसी-वैसी है? जब पति नारायण कहलाते हैं तो वह क्या कहलाएगी? अतः उस जोड़ी को

लक्ष्मीनारायण कहते हैं! तो क्या वह कुछ निम्न कक्षा की हैं? स्त्री तो तीर्थंकरों की माता हैं। जितने तीर्थंकर हुए हैं न, चौबीस, उनकी माता कौन?

प्रश्नकर्ता : स्त्रियाँ।

दादाश्री : तब उन्हें निम्न कक्षा की कैसे कह सकते हैं? स्त्री बनी है इसीलिए मोह तो होगा ही। लेकिन जन्म किसे दिया? बड़े-बड़े सभी तीर्थंकरों को... जन्म ही वे देती हैं, बड़े लोगों को। उन्हें हम कैसे बुरा-भला कह सकते हैं? लेकिन फिर भी हमारे लोग स्त्रियों को बुरा-भला कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हम सदैव स्त्री से ही कहते हैं कि तुम्हें मर्यादा रखनी चाहिए, पुरुषों से नहीं कहते।

दादाश्री : वह तो अपने मनुष्यपन का गलत उपयोग किया है। सत्ता का दुरुपयोग किया है। सत्ता के दो उपयोग हो सकते हैं; एक सदुपयोग और दूसरा दुरुपयोग। सदुपयोग करो तो सुख बर्तता है, लेकिन अभी तक दुरुपयोग करते हो, इसलिए दु:खी होते हो। जिस सत्ता का दुरुपयोग करें तो वह सत्ता हाथ से चली जाती है और यदि वह सत्ता हमेशा के लिए रखनी हो, हमेशा के लिए पुरुष ही रहना हो आपको, तो सत्ता का दुरुपयोग मत करना, वर्ना अगले जन्म में स्त्री बनना पड़ेगा सत्ताधीशों को! सत्ता का दुरुपयोग करें, तो सत्ता चली जाती है।

कुछ भी हो, पति नहीं हो, पति चला गया हो, फिर भी दूसरे के पास जाए नहीं। वह कैसा भी हो, यदि खुद भगवान पुरुष बनकर आए हों, लेकिन, 'मुझे मेरा पति है, मैं पतिव्रता हूँ' वह सती कहलाती है। इस समय सती कह सकें, ऐसा है इन लोगों का? है ही नहीं ऐसा, नहीं? ज़माना अलग ही तरह का है! सत्युग में ऐसा टाइम कभी आता है, सतियों के लिए ही। इसलिए सतियों का नाम लेते हैं न लोग!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : वह सती होने की इच्छा के कारण। उनका नाम लिया हो तो कभी न कभी सती बनेगी और विषय तो चूड़ियों के भाव बिक रहा है। ऐसा आप जानते हैं? यह समझे नहीं आप, मेरे कहने का मतलब?

प्रश्नकर्ता : हाँ, चूड़ियों के भाव बिकता है।

दादाश्री : किस बाज़ार में? कॉलिजों में! किस भाव से बिकता है? सोने के भाव से चूड़ियाँ बिकती हैं। वहाँ हीरों के भाव से चूड़ियाँ बिकती है ! सब जगह ऐसा होता है, नहीं होता? सभी जगह ऐसा नहीं होता। कितनी तो सोना दो तो भी नहीं लेतीं। चाहे कुछ भी दो तो भी नहीं लेतीं। लेकिन बाकी तो बिक जाती हैं, आज की औरतें। सोने के भाव नहीं तो दूसरे भाव से भी बिक जाती हैं!

अत: इस विषय के कारण स्त्री बना है, केवल एक विषय के कारण ही और पुरुष ने भोगने के लिए स्त्री को एनकरेज किया और बेचारी को बिगाड़ा। बरकत नहीं हो फिर भी खुद में बरकत है, ऐसा मन से मान लेती है। तब पूछे कि कैसे मान लिया? पुरुष बार-बार कहते ही रहे, इसलिए वह समझती है कि ये जो कह रहे हैं, उसमें गलत क्या है। अपने आप नहीं मान लेती। आपने कहा हो कि तू बहुत अच्छी है, तेरे जैसी और कोई स्त्री नहीं, उसे कहें कि तू सुंदर है। तो वह सुंदर मान लेती है अपने आपको। इन पुरुषों ने स्त्री को स्त्री के रूप में ही रखा। और स्त्री मन में समझती है कि मैं पुरुषों को बनाती हूँ। मूर्ख बनाती हूँ। ऐसा करके पुरुष उसे भोगकर अलग हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी ऐसा नहीं है कि स्त्री लंबे अरसे तक स्त्री के जन्म में रहेगी, ऐसा निश्चित नहीं है। लेकिन उन्हें पता नहीं चलता, इसलिए इसका इलाज नहीं हो पाता।

दादाश्री : उपाय हो जाए, तो स्त्री, पुरुष ही है। उस ग्रंथि को जानती ही नहीं हैं बेचारी और वहाँ पर इन्टरेस्ट आता है, वहाँ मज़ा आता है। इसलिए वहीं पड़ी रहती हैं और कोई ऐसा रास्ता जानता नहीं है, इसलिए बताता नहीं हैं। इसे केवल सती स्त्रियाँ ही जानती हैं, सतियाँ उनके पति के सिवा अन्य किसी का विचार ही नहीं करतीं, और वह कभी भी नहीं। उसका पति तुरंत मर जाए, चला जाए, फिर भी नहीं। उसी पति को पति मानती है। अब, उन स्त्रियों का सारा कपट खत्म हो जाता है।

सतीत्व रखे तो कपट जाने लगता है अपने आप ही। आपको कुछ

कहना नहीं पड़ता। मूल सती, जन्म से ही सती होती है। यानी उसमें पहले का कोई दाग़ नहीं होता। जब कि आप में पहले के दाग़ रह जाते हैं, और वापस पुरुष बनती हो। लेकिन पुरुषों में भी जो पुरुष हैं, वे पुरुष बनने के बाद सभी एक समान नहीं होते। कुछ पुरुष स्त्रियों जैसे भी होते हैं। थोड़े स्त्री के लक्षण रह जाते हैं और फिर यदि कपट खत्म हो गया और यदि सतीपन आ जाए, तब तो कपट खत्म हो जाता है। पुरुष हो तो सती की तरह उसके सारे दोष खत्म होते जाते हैं। सतीपन से सारे दोष खत्म हो जाते हैं। जितनी सतियाँ हुई हैं, उनके सारे दोष खत्म हो जाते हैं और वे मोक्ष में जाती हैं। समझ में आता है कुछ? मोक्ष में जाने के लिए सती बनना पड़ेगा। हाँ, जितनी सतियाँ हुई, वे मोक्ष में गई, वर्ना पुरुष बनना पड़ेगा। पुरुष भोले होते हैं बेचारे, जैसे नचाये वैसे नाचते हैं बेचारे। सभी पुरुषों को स्त्रियों ने नचाया है। स्त्रियों में केवल सती स्त्री ही पुरुषों को नहीं नचाती। सती तो परमेश्वर मानती है पति को!

प्रश्नकर्ता : ऐसा जीवन बहुत कम लोगों का देखने को मिलता है।

दादाश्री : इस कलियुग में कहाँ से हो? सतयुग में भी कोई ही सतियाँ होती हैं, तो इस कलियुग में कहाँ से होंगी?

अत: स्त्रियों का दोष नहीं है, स्त्रियाँ तो देवी जैसी हैं। स्त्रियों में और पुरुषों में आत्मा तो आत्मा ही है, केवल पैकिंग का फ़र्क़ है। 'डिफरेन्स ऑफ पैकिंग!' स्त्री एक प्रकार का 'इफेक्ट' है। और आत्मा पर स्त्री का इफेक्ट रहता है। उसका 'इफेक्ट' हम पर नहीं हो तो अच्छा। स्त्री, वह तो शक्ति है। इस देश में राजनीति में कैसी-कैसी स्त्रियाँ हो गई! और धर्मक्षेत्र में जो स्त्री जुड़ी हो, वह तो कैसी होगी? इस क्षेत्र से जगत् का कल्याण ही कर दे! स्त्री में तो जगत् कल्याण की शक्ति भरी पड़ी है! उसमें खुद का कल्याण करके दूसरों का कल्याण करने की शक्ति है।

विषय बंद वहाँ प्रेम संबंध

विवाहित जीवन कब शोभायमान होता है? जब दोनों को बुखार चढ़े, तभी दवाई पीएँ, तब। बिना बुखार दवाई पीते हैं या नहीं? बिना बुखार

के दवाई पीए, तो वह विवाहित जीवन शोभा नहीं देता। दोनों को बुखार चढ़े तभी दवाई पीओ। दिस इज़ द ऑन्ली मेडिसिन (यह केवल दवाई ही है)। मेडिसिन मीठी हो, उससे कहीं हर रोज़ पीने जैसी नहीं होती। विवाहित जीवन को शोभायमान करना हो तो संयमी पुरुष की आवश्यकता है। ये सभी जानवर असंयमी कहलाते हैं। मनुष्यों का तो संयमी जीवन होना चाहिए। पहले जो राम-कृष्ण आदि हो गए, वे सभी पुरुष संयमवाले थे। स्त्री के साथ संयमी! अभी का यह असंयम क्या दैवी गुण है? नहीं, वह पाशवी गुण है। मनुष्यों में ऐसा नहीं होना चाहिए। मनुष्य असंयमी नहीं होना चाहिए। जगत् समझता ही नहीं कि विषय क्या है? एक बार के विषय में पाँच-पाँच लाख जीव मर जाते हैं, उसकी समझ नहीं होने से यहाँ मौज उड़ाते हैं। समझते नहीं है न! कोई चारा नहीं हो तभी ऐसी हिंसा हो, ऐसा होना चाहिए। लेकिन ऐसी समझ नहीं हो, तब क्या करे?

सभी धर्मों ने उलझन पैदा की कि स्त्रियों का त्याग करो। अरे, स्त्री का त्याग कर दूँ, तो मैं कहाँ जाऊँ? मुझे खाना कौन पका कर देगा? मैं अपना व्यापार सम्हालूँ या घर में चूल्हा फूँकूँ?

विवाहित जीवन की सराहना की है उन लोगों ने। शास्त्रकारों ने विवाहित जीवन की निंदा नहीं की है। विवाह के सिवाय दूसरा जो भ्रष्टाचार है, उसकी निंदा की है।

प्रश्नकर्ता : विषय, पुत्र प्राप्ति के लिए ही होना चाहिए या फिर बर्थ कंट्रोल करके विषय भोग सकते हैं?

दादाश्री : नहीं, नहीं। वह तो ऋषि-मुनियों के समय में, पहले तो पति-पत्नी का व्यवहार ऐसा नहीं था। ऋषिमुनि विवाह करते थे, तब वे पहले तो शादी करने को मना ही करते थे। तब ऋषि पत्नी ने कहा कि, 'आप अकेले! आपका संसार ठीक से चलेगा नहीं, प्रवृति ठीक से होगी नहीं, इसलिए हमारी पार्टनरशिप रखो, स्त्रियों की, तो आपकी भक्ति भी होगी और संसार भी चलेगा।' अत: उन लोगों ने एक्सेप्ट किया, लेकिन कहा कि 'हम तुम्हारे साथ संसार नहीं बसायेंगे।' तब इन स्त्रियों ने कहा कि 'नहीं, हमें एक पुत्र दान और एक पुत्री दान, दो दान देना केवल।

तो उस दान जितना ही संग, अन्य कोई संग नहीं। बाद में हमारी आपके साथ संसार में फ्रेन्डशिप।' अत: उन लोगों ने एक्सेप्ट किया। और फिर वे मित्र की भाँति ही रहती थीं, पत्नी के रूप में नहीं। वह घर का सब काम निभा लेतीं और ये बाहर का काम निभा लेते। बाद में दोनों भक्ति करने बैठते साथ-साथ। लेकिन अब तो बस यही काम रह गया है सारा! सब बिगड़ गया है सारा। ऋषि-मुनि तो नियमवाले थे।

अभी अगर एक पुत्र या एक पुत्री के लिए शादी करें, तब हर्ज नहीं। बाद में मित्रों की तरह रहें। फिर दु:खदायी नहीं होगा। यह तो सुख खोजते हैं, फिर तो ऐसा ही होगा न! दावा ही दायर करेंगे न! ऋषिमुनि बहुत अलग तरह के थे।

एक पत्नीव्रत का पालन करोगे न? यदि कहो, 'पालन करूँगा', तो आपका मोक्ष है और अगर दूसरी स्त्री का ज़रा भी विचार आया, वहीं से मोक्ष गया, क्योंकि वह *अणहक्क* (बिना हक़ का) का है। हक़ का होगा वहाँ मोक्ष और *अणहक्क* का वहाँ पशुता।

विषय की लिमिट होनी चाहिए। स्त्री-पुरुष का विषय कहाँ तक होना चाहिए? परस्त्री नहीं होनी चाहिए और परपुरुष नहीं होना चाहिए और यदि उसका विचार आए, तो उसे प्रतिक्रमण से धो देना चाहिए। बड़े से बड़ा जोखिम है तो इतना ही, परस्त्री और परपुरुष! खुद की स्त्री जोखिम नहीं है। अब हमारी इसमें कहीं कोई गलती है? क्या हम डाँटते हैं किसी प्रकार? इसमें कोई गुनाह है? यह हमारी सायन्टिफिक खोज है! वर्ना साधुओं को यहाँ तक कहा गया है कि स्त्री की काष्ठ की प्रतिमा हो, उसे भी मत देखना। जहाँ स्त्री बैठी हो, उस जगह बैठना नहीं। पर मैंने ऐसा-वैसा बखेड़ा नहीं किया है न?

इस काल में एक पत्नीव्रत को हम ब्रह्मचर्य कहते हैं। और तीर्थंकर भगवान के समय में जो ब्रह्मचर्य का फल मिलता था, वही फल प्राप्त होगा, उसकी हम गारन्टी देते हैं।

प्रश्नकर्ता : एक पत्नीव्रत कहा, वह सूक्ष्म से भी या केवल स्थूल? मन तो जाता ही है न!

दादाश्री : सूक्ष्म से भी होना चाहिए और यदि मन जाए, तो मन से अलग रहना चाहिए। और उनके प्रतिक्रमण करते रहना पड़ेगा। मोक्ष में जाने की लिमिट क्या? एक पत्नीव्रत और एक पतिव्रत।

अगर तू संसारी है, तो तेरे हक़ का विषय भोगना। लेकिन *अणहक्क* का विषय तो भोगना ही मत। क्योंकि इसका फल भयंकर है।

हक़ का छोड़कर अन्य जगह विषय भोग होगा तो वह स्त्री जहाँ जाएगी, वहाँ उसे जन्म लेना पड़ेगा। वह अधोगति में जाए तो उसे भी वहाँ जाना पड़ेगा। आजकल बाहर तो सभी जगह ऐसा ही हो रहा है। कहाँ जन्म होगा उसका ठिकाना ही नहीं! *अणहक्क* के विषय जिन्होंने भोगे उन्हें तो भयंकर यातनाएँ भोगनी पड़ेंगी। एकाध जन्म में उनकी बेटी भी चरित्रहीन बनती है। नियम ऐसा है कि जिसके साथ *अणहक्क* के विषय भोगे हों, वही फिर माँ या बेटी बनकर आती है। *अणहक्क* का लिया तभी से मनुष्यपन चला जाता है। *अणहक्क* का विषय तो भयंकर दोष कहलाता है। खुद दूसरों का भोगे तो खुद की बेटियों को लोग भोग लेते हैं। लेकिन उसकी चिंता ही नहीं है न!

अणहक्क के विषय में सदैव कषाय होते हैं और कषाय हों तो नर्क में जाना पड़ता है। पर यह लोगों को पता नहीं चलता। इसलिए फिर डरते नहीं है, किसी प्रकार का भय भी नहीं लगता। यह मनुष्य जन्म तो पिछले जन्म में अच्छा किया था, उसका फल है।

विषय आसक्ति से उत्पन्न होते हैं और फिर उसमें से विकर्षण होता है। विकर्षण हो तब बैर बंधता है और बैर के फाउन्डेशन पर यह जगत् खड़ा हुआ है।

लक्ष्मी के कारण बैर बंधता है, अहंकार के कारण बैर बंधता है, लेकिन यह विषय का बैर बहुत ज़हरीला होता है।

विषय में से पैदा हुआ चरित्रमोह, वह फिर ज्ञान आदि सभी को उड़ा देता है। अर्थात् अभी तक विषय के कारण ही सब रुका हुआ है। मूल विषय है और उसमें से लक्ष्मी पर राग बैठा और उसका अहंकार है। अर्थात् यदि मूल विषय चला जाए, तो सबकुछ चला जाए।

प्रश्नकर्ता : तो बीज को सेकना आना चाहिए, मगर उसे किस प्रकार सेकें?

दादाश्री : वह तो अपने इस प्रतिक्रमण से, आलोचना, प्रतिक्रमण -प्रत्याख्यान से।

प्रश्नकर्ता : वही! अन्य उपाय नहीं है?

दादाश्री : अन्य कोई उपाय नहीं है। तप करने से तो पुण्य बंधता है और बीज को सेकने से निराकरण होता है। यह समभाव से निकाल करने का कानून क्या कहता है, तू किसी भी रास्ते ऐसा कर दे कि उनसे बैर नहीं बंधे। बैर से मुक्त हो जा।

प्रश्नकर्ता : उसमें बैर कैसे बंधता है? अनंत काल का बैर बीज पड़ता है, वह किस प्रकार से?

दादाश्री : ऐसा है न कि मरा हुआ पुरुष या मरी हुई स्त्री हो और मानो कि उसमें दवाइयाँ भरें, और पुरुष पुरुष जैसा ही रहे और स्त्री स्त्री जैसी ही रहे तो हर्ज नहीं, उनके साथ बैर नहीं बंधेगा। क्योंकि वे जीवित नहीं हैं और ये तो जीवित हैं। अत: यहाँ बैर बंधता है।

प्रश्नकर्ता : वह किस कारण बंधता है?

दादाश्री : अभिप्राय में भिन्नता है इसलिए। तुम कहोगे कि, 'मुझे अभी सिनेमा देखने जाना है।' तब वह कहेगी कि, 'नहीं, आज तो मुझे नाटक देखने जाना है।' अर्थात् टाइमिंग नहीं मिलते। यदि एक्ज़ेक्ट टाइमिंग के साथ टाइमिंग मिल रहा हो, तभी शादी करना।

ऐसा है न, इस अवलंबन का जितना भी सुख आपने लिया, वह सारा उधार लिया हुआ सुख है, लोन पर। और लोन 'री पे'(वापस चुकाना) करना पड़ता है।

आत्मा से सुख नहीं लेते और पुद्गल से सुख माँगा आपने। आत्मा का सुख हो वहाँ हर्ज ही नहीं है, लेकिन पुद्गल के पास भीख माँगी है, वह लौटानी होगी। वह लोन है। जितनी मिठास आती है, उतनी ही कड़वाहट भुगतनी होगी। क्योंकि पुद्गल से लोन लिया है। इसलिए उसे

'री पे' करते समय उतनी ही कड़वाहट आयेगी। पुद्गल से लिया है, इसलिए पुद्गल को ही 'री पे' करना होगा।

अभी तो मुझे कितने ही लोग कह जाते हैं कि, 'मुझ से आजिज़ी करवाती है।' तब मैंने कहा, 'तेरा प्रभाव चला गया, फिर और क्या करवाएगी? समझ जा न अभी भी, अभी भी योगी बन जा!' अब इन्हें कैसे पहुँच पाएँ? इस दुनिया को कैसे पहुँच पाएँ?!

एक औरत अपने पति को चार बार साष्टांग करवाती है, तब एक बार छूने देती है। अरे, इसके बजाय यदि समाधि ले ले तो क्या बुरा था? दरिया में समाधि ले तो दरिया सीधा तो है! झंझट तो नहीं! इसके लिए चार बार साष्टांग!

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म में हम उससे टकराये होंगे, तभी इस जन्म में वह हमसे टकराती है। मगर उसका रास्ता तो निकालना पड़ेगा न? सोल्युशन तो निकालना पड़ेगा न?

दादाश्री : उसका सोल्युशन तो होता है, लेकिन लोगों के मनोबल कच्चे होते हैं न!

विकारी भाग बंद कर देना तो अपने आप सब बंद हो जाएगा। उसे लेकर सदा के लिए किट-किट चलती रहती है।

प्रश्नकर्ता : अब यह कैसे किया जाए? इसे बंद किस तरह करें?

दादाश्री : विषय जीतना होगा।

प्रश्नकर्ता : विषय नहीं जीता जाता, इसलिए तो हम आपकी शरण में आए हैं।

दादाश्री : कितने सालों से विषय... बुड्ढे होने आए फिर भी विषय? जब देखो तब विषय, विषय और विषय!!!

प्रश्नकर्ता : इन विषयों को बंद करने पर भी टकराव नहीं टलते इसीलिए तो हम आपके चरणों में आए।

दादाश्री : टकराव होता ही नहीं। जहाँ विषय बंद है, वहाँ मैंने देखा है, जितने जितने पुरुष मजबूत मन के हैं, उनकी स्त्री तो बिल्कुल उनके कहे अनुसार रहती है।

उसके साथ विषय बंद करने के सिवा और कोई उपाय मिला ही नहीं। क्योंकि इस संसार में राग-द्वेष का मूल कारण ही विषय है। मौलिक कारण ही यही है। यहीं से सभी राग-द्वेष जन्मे हैं। संसार सारा यहीं से खड़ा हुआ है। इसलिए संसार बंद करना हो तो यहीं से विषय बंद कर देना पड़ेगा।

जिसे क्लेश नहीं करना है, जो क्लेश का पक्ष नहीं लेता, उसे क्लेश होता तो है, पर धीरे-धीरे बहुत कम होता जाता है। यह तो, जो ऐसा मानते हैं कि क्लेश करना ही चाहिए, तब तक क्लेश ज़्यादा होता है। हमें क्लेश के पक्षकार नहीं बनना चाहिए। क्लेश करना ही नहीं है, ऐसा जिसका निश्चय है, उसे क्लेश कम से कम होता है। और जहाँ क्लेश है, वहाँ भगवान तो खड़े ही नहीं रहते!

डबल बेड का सिस्टम बंद करो और सिंगल बेड का सिस्टम रखो। ये तो सभी कहते हैं, 'डबल बेड बनाओ, डबल बेड....' पहले तो हिन्दुस्तान में कोई मनुष्य ऐसे सोता ही नहीं था, कोई भी क्षत्रिय नहीं। क्षत्रिय तो बहुत सख्त होते हैं लेकिन वैश्य भी नहीं। ब्राह्मण भी इस प्रकार नहीं सोते, एक भी मनुष्य नहीं! देखो काल कैसा विचित्र आया है!

जब से हीराबा के साथ मेरा विषय बंद हुआ, तब से मैं 'हीराबा' कहता हूँ उन्हें। उसके बाद से कोई खास मुश्किल नहीं आई है हमें। पहले जो थोड़ी-बहुत नोकझौंक होती थी, वह विषय के संग के कारण। वह तोतामस्ती होती थी, थोड़ी-बहुत लोकिन वह तोतामस्ती होती है। लोग समझें कि इस तोते ने उस तोती को मारना शुरू किया! मगर होती है तोतामस्ती। लेकिन जब तक विषय का डंक है, तब तक यह जाता नहीं। वह डंक निकले, तभी जाएगा। हमारा निजी अनुभव बता रहे हैं। यह तो अपना ज्ञान है, उसे लेकर ठीक है वर्ना ज्ञान नहीं हो तो डंक मारता ही रहेगा। उस समय तो अहंकार था न। उसमें अहंकार का एक हिस्सा भोग

होता है कि उसने मुझे भोग लिया। और यहाँ पर (यह ज्ञान मिलने के बाद) निकाल करती है वह, फिर भी वह डिस्चार्ज (निकाली) किच-किच तो रहती ही है। हमें तो वह किच-किच भी नहीं थी, ऐसा मतभेद नहीं था किसी प्रकार का।

विज्ञान तो देखो! संसार के साथ झगड़े ही बंद हो जाएँ। पत्नी के साथ तो झगड़े नहीं, लेकिन सारे संसार के साथ झगड़े बंद हो जाएँ। यह विज्ञान ही ऐसा है और झगड़े बंद हुए अर्थात् मुक्त हुआ।

रहस्य, ऋणानुबंध के...

शादी तो वाकई बंधन है। भैंस को बाड़े में बंद करें ऐसी दशा होती है। इस फंदे में नहीं फँसे, वही उत्तम। फँसने के बाद भी निकल जाएँ तो और अधिक उत्तम। वर्ना आखिर फल चखने के बाद निकल जाना चाहिए। बाकी, आत्मा किसी का पति, स्त्री या पुरुष या किसी का बेटा बन नहीं सकता, मात्र सभी कर्म पूरे हो रहे हैं! आत्मा में तो कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। आत्मा तो आत्मा ही है, परमात्मा ही है। यह तो हम मान बैठे हैं कि यह हमारी स्त्री।

यह चिड़िया सुंदर घोंसला बनाती है, तो उसे कोई सिखाने गया था? यह संसार चलाना तो अपने आप आ जाए ऐसा है। हाँ, स्वरूप ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। संसार चलाने के लिए कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। ये मनुष्य अकेले ही ज़रूरत से ज़्यादा अक़्लमंद हैं। इन पशु-पक्षियों के क्या बीवी-बच्चे नहीं हैं? उनकी शादी रचानी पड़ती है? यह तो मनुष्यों को ही बीवी-बच्चे हुए हैं, मनुष्य ही शादी रचाने में लगे हैं।

ये गायें-भैंसें भी शादी करती हैं। बच्चे वगैरह सब होते हैं। लेकिन है वहाँ पर पति? वे भी ससुर बनते हैं, सास बनते हैं, लेकिन वे कहीं बुद्धिमानों की तरह कुछ व्यवस्था खड़ी करते हैं? कोई ऐसा कहता है कि मैं इसका ससुर हूँ? फिर भी हमारी तरह का ही सारा व्यवहार है न? वह भी दूध पिलाती है, बछड़े को चाटती है न! ये अक़्लमंद नहीं चाटते।

आप खुद शुद्धात्मा हैं और ये सभी व्यवहार ऊपर-ऊपर से अर्थात्

'सुपरफ्लुअस' रखना है। खुद 'होम डिपार्टमेन्ट' में रहना और 'फोरिन' में 'सुपरफ्लुअस' रहना। 'सुपरफ्लुअस' यानी तन्मयाकार वृत्ति नहीं, वह। केवल 'ड्रामेटिक'। केवल 'ड्रामा' ही खेलना है। ड्रामे में घाटा आए, तो भी हँसना है और मुनाफा हो तो भी हँसना है। 'ड्रामा' में अभिनय करना पड़ता है, घाटा आए तो वैसा दिखावा करना पड़ता है। मुँह से कहते ज़रूर हैं कि भारी नुक़सान हुआ है, लेकिन भीतर तन्मयाकार नहीं होते। हमें 'लटकती सलाम' रखनी है। कई लोग नहीं कहते कि भाई तो इनके साथ मेरा 'लटकती सलाम' जैसा संबंध है? उसी प्रकार सारे संसार के साथ रहना है। जिसे सारे संसार के साथ लटकती सलाम रखना आ गया, वह ज्ञानी हो गया। इस शरीर के साथ भी 'लटकती सलाम'! हम निरंतर सभी के साथ 'लटकती सलाम' रखते हैं, फिर भी सब कहते हैं कि 'आप हम पर बहुत अच्छा भाव रखते हैं।' मैं व्यवहार सभी निभाता हूँ, मगर आत्मा में रहकर।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है क्या कि पत्नी के पुण्य से पुरुष का चले? कहते हैं न कि औरत के पुण्य से यह लक्ष्मी है या सब अच्छा है, ऐसा होता है?

दादाश्री : वह तो लोगों ने, कोई अपनी पत्नी को पीट रहा होगा, तो उसे समझाया कि अरे! तेरी औरत का नसीब तो देख। क्यों चिल्ला रहा है? उसका पुण्य है तो तू खा रहा है! ऐसे शुरू हो गया। सभी जीव अपने पुण्य का ही खा रहे हैं। आपकी समझ में आ गया न? वह तो ऐसा सब करें तभी रास्ते पर आएँगे न! सब अपने-अपने पुण्य का ही सब भोगते हैं और खुद का पाप भी खुद ही भुगतते हैं। किसी का कुछ लेना-देना ही नहीं है फिर। उसमें एक बाल जितना भी झंझट नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कोई शुभ कार्य करे, जैसे कि पुरुष दान करे, लेकिन स्त्री का भी उसमें सहयोग हो, तो दोनों को फल मिलता है?

दादाश्री : हाँ, मिलता है न! करनेवाला और सहयोग अर्थात् करवानेवाला, या फिर कर्ता के प्रति अनुमोदनकरनेवाला, इन सभी को पुण्य मिलता है। तीनों को, करनेवाले-करवानेवाले और अनुमोदन करनेवाले को पुण्य मिलता है। आपने जिसे कहा हो कि यह करना, करने योग्य है, वह

करवानेवाला कहलाता है, आप करनेवाले कहलाते हो और स्त्री विरोध नहीं करे, तो वह अनुमोदना करनेवाली, सभी को पुण्य मिलता है। लेकिन करनेवाले के हिस्से में पचास प्रतिशत और बाकी पचास प्रतिशत उन दोनों में बँट जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : पूर्व जन्म के ऋणानुबंध में से मुक्त होने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपका जिनके साथ पूर्व जन्म का ऋणानुबंधन हो और आपको वह पसंद ही नहीं हो, उसका सहवास पसंद ही नहीं हो, फिर भी उसके सहवास में रहना ही पड़े, तो क्या करना चाहिए कि, उसके साथ बाहर का व्यवहार ज़रूर रखना चाहिए, मगर भीतर उसके नाम के प्रतिक्रमण करने चाहिए। क्योंकि हमने पिछले जन्म में अतिक्रमण किया था, उसका यह परिणाम है। क्या कॉज़ेज़ किए थे? तो यह कि उसके साथ अतिक्रमण किया था पूर्व जन्म में, उसका इस जन्म में फल आया, अत: उसका प्रतिक्रमण करोगे, तो वह खत्म हो जाएगा। अत: भीतर उससे माफ़ी माँग लो। माफ़ी माँगते रहो कि मैंने जो दोष किये हों, उनकी माफ़ी माँगता हूँ। किसी भी भगवान को साक्षी रखकर माफ़ी माँग लो, तो सब खत्म हो जाएगा। वर्ना फिर क्या होता है कि उसके प्रति ज़्यादा दोष दृष्टि रखने से, जैसे कि किसी पुरुष को स्त्री बहुत दोषित देखे तो तिरस्कार बढ़ेगा और तिरस्कार हो, तब भय लगता है। आपको जिसके प्रति तिरस्कार होगा, उससे भय लगेगा आपको। उसे देखो कि आपको घबराहट होती है, इससे समझ लो कि यह तिरस्कार है। अत: तिरस्कार छोड़ने के लिए आप भीतर माफ़ी माँगते रहो। दो ही दिनों में वह तिरस्कार बंद हो जाएगा। उसे पता नहीं चलेगा कि आप भीतर माफ़ी माँगते रहो उसके नाम से, उसके प्रति जो जो दोष किये हों, 'हे भगवान, मैं क्षमा माँगता हूँ। यह मेरे दोष का परिणाम है।' किसी भी मनुष्य के प्रति जो जो दोष किये हों, तो भीतर आप माफ़ी माँगते रहो भगवान से तो सब धुल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हमें धर्म के मार्ग पर जाना हो, तो घर संसार छोड़ना पड़ता है। यह धर्मकार्य के लिए अच्छा है, परंतु घर के लोगों को दु:ख

हो, किन्तु खुद के लिए घर संसार छोड़ें तो वह अच्छा कहलाएगा?

दादाश्री : नहीं। घरवालों का हिसाब चुकाना ही पड़ेगा। उनका हिसाब चुकाने के बाद, वे सभी खुश होकर कहेंगे कि 'आप जाइए', तब कोई हर्ज नहीं। लेकिन उन्हें दुःख हो ऐसा नहीं करना है। क्योंकि उस एग्रीमेन्ट का भंग नहीं कर सकते।

प्रश्नकर्ता : भौतिक संसार छोड़ देने का मन होता है, तो क्या करें?

दादाश्री : भौतिक संसार में घुसने का मन होता था न, एक दिन?

प्रश्नकर्ता : तब तो ज्ञान नहीं था। अब तो ज्ञान है इसलिए उसमें फ़र्क़ पड़ता है।

दादाश्री : हाँ, उसमें फ़र्क़ पड़ेगा लेकिन यदि उसमें घुसे हो, तो निकलने का रास्ता खोजना पड़ेगा। यों ही भाग नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : प्रत्येक दिन कम होता जा रहा है।

दादाश्री : 'मेरा' कहकर मरते हैं। असल में 'मेरा' है नहीं। वह जल्दी चली जाए तो हमें अकेले बैठे रहना पड़ेगा। सत्य हो तो दोनों को साथ ही जाना चाहिए न? और अगर पति के पीछे सती हो जाए, तो भी वह किस राह गई होगी और यह पति किस राह गया होगा! क्योंकि सबकी अपने-अपने कर्मों के हिसाब से गति होती है। कोई जानवर में जाता है, कोई मनुष्य में जाता है, कोई देवगति में जाता है। उसमें सती कहेगी कि मैं आपके साथ मर जाऊँ तो आपके साथ मेरा जन्म होगा, लेकिन ऐसा कुछ होता नहीं। यह तो सब बावलापन है। पति-पत्नी, ऐसा कुछ है नहीं। यह तो बुद्धिवाले लोगों ने व्यवस्था की है।

प्रश्नकर्ता : भाई कहते हैं, यदि किसी प्रकार की तकरार नहीं हो, तो अगले जन्म में फिर साथ में रह सकेंगे?

दादाश्री : इस जन्म में ही रहा नहीं जाता, इस जन्म में ही डायवोर्स हो जाते हैं, तो फिर अगले जन्म की कहाँ बात करते हो? ऐसा प्रेम होता ही नहीं है न! अगले जन्म के प्रेमवालों में तो क्लेश ही नहीं होता। वह

तो इज़ी लाइफहोती है। बड़े प्रेम की ज़िंदगी होती है। भूल ही नहीं दिखती। भूल करे तो भी नहीं दिखती, ऐसा प्रेम होता है।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसी प्रेमवाली ज़िंदगी हो, तो फिर अगले जन्म में वे ही फिर से मिलते हैं या नहीं?

दादाश्री : हाँ, मिलते हैं न, किसीकी ऐसी ज़िंदगी हो तो मिलते हैं। सारी ज़िंदगी क्लेश नहीं हुआ हो तो मिलते हैं।

आदर्श व्यवहार, जीवन में...

दादाश्री : ज़िंदगी को सुधारें किस प्रकार?

प्रश्नकर्ता : सच्चे मार्ग पर जाकर।

दादाश्री : कितने साल तक सुधारनी है? सारी ज़िंदगी? कितने साल, कितने दिन, कितने घंटे, किस प्रकार सुधरेगा वह सब?

प्रश्नकर्ता : मालूम नहीं मुझे।

दादाश्री : हं.... इसीलिए सुधरता नहीं है न! और वास्तव में दो ही दिन सुधारने हैं, एक वर्किंग डे (काम पर जाने का दिन) और एक है तो होलीडे (छुट्टी का दिन)। दो ही दिन सुधारने हैं, सुबह से शाम तक। दो में परिवर्तन लाए तो सभी परिवर्तित हो जाएँगे। दो की सेटिंग कर दी तो हर दिन उसी अनुसार चलता रहेगा फिर और उस अनुसार चलोगे तो सब रास्ते पर आ जाएगा। लंबा-चौड़ा परिवर्तन करना ही नहीं है। ये सब भी हर रोज़ परिवर्तन नहीं करते। इन दो की ही सेटिंग करनी है। इन दो की व्यवस्था की कि सभी दिन उनमें समा गए।

प्रश्नकर्ता : वह सेटिंग कैसे करें?

दादाश्री : क्यों? सुबह उठो तो उठकर भगवान का जो स्मरण करना हो, वह कर लेना। पहले तो सवेरे जल्दी उठने का रिवाज़ रखना चाहिए। क्योंकि क़रीब पाँच बजे से उठ जाना चाहिए मनुष्य को। तो आधा घंटा अपनी एकाग्रता का सेवन करना चाहिए। किसी इष्टदेव या जो भी हों, उनकी भक्ति आधे घंटे जितनी करनी चाहिए। ऐसा रोज़ चलता रहेगा फिर।

बाद में फिर उठकर ब्रश आदि सब कर लेना। ब्रश में भी सिस्टम सेट कर देने की। आप खुद ही ब्रश लेना, सब-कुछ खुद ही करना, अन्य किसीको नहीं कहना चाहिए। अगर बीमार-वीमार हों तो बात अलग है। फिर चाय-पानी आए, तब कलह नहीं करनी चाहिए और जो कुछ भी आया वह पी लेना चाहिए, और पीने के बाद उनसे कहना कि थोड़ी शक्कर कम पड़ती है, कल से ज़रा ज़्यादा डालना। आपको उन्हें कहना है सिर्फ। कलह मत करना। चाय के साथ नाश्ता-वाश्ता जो करना हो, वह कर लिया और फिर खाना खाकर जॉब पर जाना हो, तो भोजन करके जॉब पर गए तो वहाँ के फ़र्ज़ अदा करना।

वहाँ से घर पर कलह किए बगैर निकलना। फिर जॉब करके वापस आए, तो जॉब पर बॉस के साथ झंझट हो गई हो, उसे फिर रास्ते में शांत कर देना। इस ब्रेन का चेक नट दबा देना, अगर वह रेज़ (गरम) हो गई हो तो। शांत होकर घर में जाना, यानी घर में कुछ तकरार मत करना। यदि बॉस के साथ लड़ता है तो, उसमें बीवी का क्या दोष बेचारी का? तेरा बॉस के साथ झगड़ा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : तो उसमें बीवी का क्या दोष? वहाँ लड़कर आया हो, तो बीवी समझ जाती है कि आज अच्छे मूड में नहीं है। अच्छे मूड में नहीं होता न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अत: ऐसी सेटिंग एक दिन की कर दो, वर्किंग डे की और एक होली डे की। दो ही तरह के दिन आते हैं। तीसरा दिन कोई आता ही नहीं न? इसलिए दो दिनों की व्यवस्था की, उसके अनुसार चलता रहेगा फिर।

प्रश्नकर्ता : अब छुट्टी के दिन क्या करें?

दादाश्री : छुट्टी के दिन तय करना कि आज छुट्टी का दिन है, इसलिए आज बाल-बच्चे, वाइफ, सभी को कहीं घूमने को नहीं मिलता इसलिए आज इन्हें घुमाने ले जाएँगे, भोजन के बाद। अच्छा-अच्छा भोजन

बनाना चाहिए। भोजन के बाद घुमाने ले जाना चाहिए। फिर घूमने में खर्च की मर्यादा रखना कि होली डे के दिन इतना ही खर्च! किसी वक्त एकस्ट्रा करना पड़े, तो हम बजट बनाएँगे, वर्ना इतना ही खर्च। यह सब तय करना चाहिए आपको। वाइफ से ही तय करवाना आप।

प्रश्नकर्ता : वे कहते हैं कि घर में पूरनपूरी (मीठी रोटी) खानी चाहिए। पिज़्ज़ा खाने बाहर नहीं जाना चाहिए।

दादाश्री : खुशी से पूरनपूरी खाओ, सभी खाओ, पकोड़े खाओ, जलेबी खाओ। जो चाहे सो खाओ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन होटल में पिज़्ज़ा खाने मत जाना।

दादाश्री : पिज़्ज़ा खाने? वह हमसे कैसे खाया जाए? हम तो आर्य प्रजा। फिर भी शौक़ हो तो दो-चार बार खिलाकर फिर धीरे-धीरे छुड़वा देना। धीरे-धीरे छुड़वा देना, एकदम से आप बंद कर दो तो वह गलत होगा। आप साथ में खाने लगना और फिर छुड़वा देना धीरे-धीरे।

प्रश्नकर्ता : वाइफ को कुछ अच्छा बनाने का शौक़ नहीं हो तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आप शौक़ बदल देना और बहुत-सी चीज़ें हैं अपने यहाँ। शौक़ बदल देना। राई-मेथी के तड़केवाला नहीं भाता हो तो दालचीनी और काली मीर्च का तड़का दिलवाना ताकि अच्छा लगे। पिज़्ज़ा में तो क्या खाने जैसा है?

यानी सेटिंग करो तो सारा जीवन अच्छी तरह बीतेगा और सुबह आधा घंटा भगवान की भक्ति करो तो काम ढंग से चलेगा। तुझे तो ज्ञान प्राप्त हो गया, इसलिए तू तो समझदार हो गया अब। लेकिन दूसरों को ज्ञान नहीं मिला हो, उन्हें कुछ भक्ति करनी चाहिए न! तेरा तो सब ठीक से चलने लगा है न?

यह अक्रम विज्ञान व्यवहार को नहीं हिलाता। प्रत्येक ज्ञान, व्यवहार का तिरस्कार करता है। यह विज्ञान व्यवहार का किंचित् मात्र तिरस्कार नहीं करता और खुद की 'रियालिटी' में संपूर्ण रहकर व्यवहार का तिरस्कार

नहीं करता है। जो व्यवहार का तिरस्कार नहीं करे, वही सैद्धांतिक वस्तु होती है। सैद्धांतिक वस्तु किसे कहते हैं कि जो कभी भी असैद्धांतिकता में परिणामित न हो, वह सिद्धांत कहलाता है। कोई ऐसा कोना नहीं है, जहाँ असिद्धांत हो। अर्थात् यह 'रियल साइन्स' है, 'कम्पलीट साइन्स' है। व्यवहार का किंचित्मात्र भी तिरस्कार नहीं करता!

किसीको ज़रा-सा भी दुःख नहीं हो, वह आखरी 'लाइट' कहलाती है। विरोधी को भी शांति हो। विरोधी भी ऐसा कहे कि 'भाई, इनका और मेरा मतभेद है, पर उनके प्रति मुझे भाव है, आदर है' ऐसा कहता है आखिर! विरोध तो होता ही है। हमेशा विरोध तो रहनेवाला ही है। ३६० डिग्री में और ३५६ डिग्री का भी विरोध होता ही है। इसी प्रकार इन सब में विरोध तो होता ही है। एक ही डिग्री पर सभी मनुष्य नहीं आ सकते। एक ही विचार श्रेणी पर सभी मनुष्य नहीं आ सकते। क्योंकि मनुष्य की विचार श्रेणीयों की चौदह लाख योनियाँ हैं। बोलिए, कितने 'एडजस्ट' हो सकते हैं अपने से? कुछ ही योनियाँ 'एडजस्ट' हो सकती है। सभी नहीं हो सकतीं।

घर में तो सुंदर व्यवहार कर देना चाहिए। 'वाइफ' के मन में ऐसा लगे कि ऐसा पति कभी मिलेगा नहीं और पति के मन में ऐसा लगे कि ऐसी 'वाइफ' भी कभी भी नहीं मिलेगी! ऐसा हिसाब ला दें, तब हम सच्चे!

प्रश्नकर्ता : अध्यात्म में तो आपकी बात के लिए कुछ कहने जैसा है ही नहीं पर व्यवहार में भी आपकी बातें 'टॉप' हैं!

दादाश्री : ऐसा है न, कि व्यवहार में 'टॉप' का समझे बिना कोई मोक्ष में गया नहीं है। भले ही कितना भी, बारह लाख का आत्मज्ञान हो, लेकिन व्यवहार को समझे बगैर कोई मोक्ष में नहीं गया है। क्योंकि व्यवहार ही छुड़वाएगा न! वह नहीं छोड़े तो आप क्या करोगे? आप 'शुद्धात्मा' ही हैं लेकिन व्यवहार आपको छोड़े तब न! आप व्यवहार को उलझाते रहते हो। उसका झटपट हल ला दो न!

- जय सच्चिदानंद

मूल गुजराती शब्दों के समानार्थी शब्द

ऊपरी : बॉस, वरिष्ठ मालिक

नोंध : अत्यंत राग अथवा द्वेष सहित लम्बे समय तक याद रखना, नोट करना

उपाधि : बाहर से आनेवाले दु:ख

भोगवटा : सुख-दु:ख का असर

निकाल : निपटारा

चीकणे : गाढ़

नोंध : अत्यंत राग अथवा द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना

ऊपरी : बॉस, वरिष्ठ मालिक

त्रागा : अपनी मनमानी/बात मनवाने के लिए किए जानेवाला नाटक

अणहक्क : बिना हक़ का

प्राप्तिस्थान

दादा भगवान परिवार

अडालज : त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद- कलोल हाईवे, पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421. फोन : (079) 39830100, □□□□□□ : □□□□@□□□□□□□□□□□□.□□□

अहमदाबाद : दादा दर्शन, ५, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380014. फोन : (079) 27540408

राजकोट : त्रिमंदिर, अहमदाबाद-राजकोट हाईवे, तरघड़िया चोकड़ी (सर्कल), पोस्ट : मालियासण, जि.-राजकोट. फोन : 9274111393

भुज : त्रिमंदिर, हिल गार्डन के पीछे, एयरपोर्ट रोड. फोन : (02832) 290123

गोधरा : त्रिमंदिर, भामैया गाँव, एफसीआई गोडाउन के सामने, गोधरा (जि.-पंचमहाल). फोन : (02672) 262300

वडोदरा : दादा मंदिर, १७, मामा की पोल-मुहल्ला, रावपुरा पुलिस स्टेशन के सामने, सलाटवाड़ा, वडोदरा. फोन : (0265) 2414142

मुंबई	: 9323528901	**दिल्ली**	: 9310022350
कोलकता	: 033-32933885	**चेन्नई**	: 9380159957
जयपुर	: 9351408285	**भोपाल**	: 9425024405
इन्दौर	: 9893545351	**जबलपुर**	: 9425160428
रायपुर	: 9425245616	**भिलाई**	: 9827481336
पटना	: 9431015601	**अमरावती**	: 9823127601
बेंगलूर	: 9590979099	**हैदराबाद**	: 9989877786
पूना	: 9860797920	**जलंधर**	: 9463542571

□.□.□. : **□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□** :
100, □□ □□□□□□ □□□□, □□□□□□, □□□□□□ 66606
□□□. : +1 877□505 □□□□ (3232)
□ □ □□□ : □□□□@□□.□□□□□□□□□□□□.□□□

□.□.	:+44 330 111 □□□□ (3232)	**□□□**	: +971 557316937
□□□□□	: +254 722 722 063	**□□□□□□□□□**	: +65 81129229
□□□□□□□□□	: +61 421127947	**□ □**	: +64 21 0376434

Website : www.dadabhagwan.org

समझ से सँवारो घरसंसार

यह अक्रम विज्ञान तो देखो! केवल पत्नी के साथ ही नहीं, लेकिन सारे संसार के साथ झगड़े बंद हो जाएँ। यह विज्ञान ही ऐसा है! झगड़े बंद हुए अर्थात् हम मुक्त हुए। अपने घर में तो व्यवहार सुन्दर कर देना चाहिए। 'पत्नी' के मन में ऐसा लगे कि ऐसा (अच्छा) पति कभी नहीं मिलेगा और पति के मन में ऐसा लगे कि ऐसी (अच्छी) 'पत्नी' भी कभी नहीं मिलेगी। ऐसा हिसाब ला दें तब हम सच्चे कहलायें। अगर ऐसी समझ फिट कर लें तो सारा जीवन बहुत अच्छी तरह व्यतीत हो।

- दादाश्री

dadabhagwan.org

ISBN 978-81-89933-19-7

9 788189 933197

Printed in India

Price ₹20